चों की प्राथमिक
विकास कैसे ?

जोशी, डॉ. कंचन पुरी



संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार द्वारा स्वीकृत

बच्चों की प्राथमिक शिक्षा एवं विकास कैसे ?



शिक्षा

बच्चों की प्राथमिक शिक्षा एवं विकास कैसे ?

लेखिका

मालती जोशी

(बी० एस-सी०, बी० एड०, अध्यापिका, प० शि० से०)

सहलेखिका

डा० कंचन पुरी

प्रवक्ता : आर० जी० कॉलेज, मेरठ (उ० प्र०)

(उन माता-पिता एव अध्यापको को जो देश की भावी पीढी को उच्च-चरित्र, विकास एवं जीवन मे सफलता का मूलमत्र देना चाहते है।)

मूल्य : 150.00 रुपए

प्रकाशक : राज बुक सर्विस- ब्लाक-सी-8, हाउस न. 174,
दिल्ली-110053 संस्करण : प्रथम 2004 / आवरण राजकुमार रेख
कौशिक मुद्रक . विकास ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली-110032

बच्चों की प्राथमिक शिक्षा एवं विकास कैसे ? : (शिक्षाप्रद वि
मालती जोशी एव डॉ कंचन पुरी के द्वारा

वक्तव्य

मुझे विभिन्न अवस्थाओ के बच्चो की भिन्न-भिन्न वातावरण मे देखभाल का उत्तरदायित्व सभालना पडा है। यह पुस्तक मैने अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर लिखी है। मेरा प्रयत्न यह है कि इस पुस्तक के द्वारा मै अपने अनुभव को अन्य लोगो के लाभ के लिये उनके सामने रख सकू।

प्रारम्भ मे मिस आभा वर्मा की सहायिका के पद पर नर्सरी स्कूल मे पढ़ाते हुए और नर्सरी स्कूल एसोसियेशन से सम्बन्ध होने के कारण बच्चो की वास्तविक आवश्यकताओ के प्रति मैं सचेत हुई और मेरे सामने यह बात स्पष्टतः आ गयी कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अन्योन्याश्रित है और अभिभावको तथा अध्यापको के बीच परस्पर घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता है। 'न्यू एजूकेशन फेलोशिप' के लिये कार्य करते समय शैक्षणिक स्थितियों सबधी मेरा ज्ञान और भी विस्तृत हुआ और 'होम एण्ड स्कूल कौंसिल' की स्थापना के समय उसके निकट सम्पर्क में रहने की वजह से मुझे यह आवश्यकता महसूस हुई कि एक ऐसी बाल-मनोविज्ञान सबधी पुस्तक बहुत ही जरूरी है जो अध्यापको और अभिभावको के सयुक्त अध्ययन और वाद-विवाद की बैठकों मे काम आ सके और स्वाध्याय के लिये भी उपयुक्त हो। यह पुस्तक इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिये लिखी गयी है।

इस पुस्तक की अधिकाश सामग्री दृष्टान्तों के रूप मे है। इन दृष्टान्तों को सुविधानुसार तुरन्त खोजा जा सके—इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अध्यायो के क्रम से एक अनुक्रमणिका दे दी गयी है। दृष्टान्त ऐसे दिये गये है जिनसे पाठक को अपना अनुभव भी स्मरण हो आये। प्रत्येक अध्याय के अन्त में पाठक की विचारतन्त्री को जगा देने के लिये प्रश्नावली भी दे दी गई है। ये प्रश्नावलिया अध्यापको और अभिभावकों की संयुक्त बैठकों में या ट्रेनिग स्कूल के विद्यार्थियों के बीच विचार-विमर्श के समय वाद-विवाद का आधार भी बनायी जा सकती हैं। जब भी कोई प्रश्न किसी दृष्टान्त विशेष से सबद्ध होता है तो उस प्रश्न के आखिरी भाग में कोष्ठक के अन्दर वह अक्षर लिख दिया गया है जो प्रत्येक दृष्टान्त के ऊपर लिखा गया है। जब कोई ऐसा प्रश्न किया गया है जो सामान्य ढग से सम्पूर्ण अध्याय की सामग्री से सम्बन्धित है तो उस प्रश्न को उक्त रीति से चिह्नित नही किया गया है।

इस पुस्तक मे मैने पहले अध्याय को दुबारा से लिख दिया है। इसे पुनः लिखने का उद्देश्य घर और स्कूल मे बच्चो की युद्धोत्तर समस्याओं को दृष्टान्तो के रूप में सामने लाना है। इस अध्याय मे यह बतलाया गया है कि स्वस्थ या बीमार बच्चो की प्राकृतिक चिकित्सा की पद्धति से किस प्रकार देखभाल की जा सकती है।

—मालती जोशी

अनुक्रम

अध्याय-1

बालकों का स्वभाव

बालकों और अभिभावको के बीच जो बहुत-सी कठिनाइया पैदा हो जाती है उनका कारण बच्चे की जीवनीशक्ति (Vitality) होती है। इसके साथ यह तथ्य भी होता है कि बच्चा अपनी जीवनीशक्ति को किसी ऐसी दिशा मे नही लगा सका है जो बडो को स्वीकार हो। परिणाम यह होता है कि वह अपरिमित शक्ति, शरारत करने की प्रवृत्ति अपनी चचलता और जिज्ञासु भावना के कारण शोर मचाकर बडो के कामो मे बाधा डालता है। उसकी बातों पर जब बडे नाराज या परेशान होते है तो वह उनके इस कार्य को ठीक नहीं समझता और इससे यह भी हो सकता है कि वह जिद्दी या हठी हो जाये।

इसमे सन्देह नही कि जब हम इस प्रश्न पर शान्ति से विचार करते है तो इस नतीजे पर पहुचते हैं कि बच्चा बच्चा ही रहेगा। वह बड़ों की तरह व्यवहार कर ही नही सकता—इसलिये उसे दोषी ठहराना व्यर्थ है। वह अपरिपक्व, उत्सुक, सक्रिय और चचल है और वह जानना चाहता है कि सब काम कैसे होते हैं। हम यह भी अनुभव करते है कि बच्चो के बचपन-भरे व्यवहार पर रुष्ट होना अनुचित है।

कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो यह समझते हैं कि बच्चो से बडों की तरह के व्यवहार की आशा करके वे कोई गलत काम नहीं करते और वस्तुतः बच्चा ही मूर्ख और अविवेकी है। इस प्रकार के व्यवहार से बडो और बच्चो के बीच की कठिनाइया निरन्तर बढती ही जाती हैं। इसका परिणाम यह भी हो सकता है कि आगे चलकर बच्चा सभी अधिकारियो के सामने ऐसा बर्ताव करने लगे जिससे दिक्कते बढ़ती ही चली जायें।

कुछ कठिनाइया बच्चो की तरफ से भी हो सकती है और वे इसलिये होती है कि बच्चा साफ-साफ यह नही समझ पाता कि बडे उससे क्या चाहते है या वह वैसा न कर सके जैसा करने के लिये किसी अवसर पर उससे कहा जाये। अक्सर बच्चे का दिमाग बडो के बजाय अपेक्षाकृत मन्दगति से कार्य करता है और उसे यह समझने मे कुछ समय लगता है कि वस्तुतः उससे क्या करने को कहा जा रहा है और फिर जैसा कहा गया है वैसा करने मे भी समय लगता है

दूसरी चीज जिससे कठिनाई पैदा होती है—वह यह है कि जब पहले-पहल उन्हे कोई चीज दिखलाई पडती है तो वे देखते ही उस चीज के सारे गुणो को नही समझ पाते है। उदाहरण के लिये वे आग देखकर शायद यह नहीं समझ पाते कि उसम जलाने की शक्ति है या यदि नल को खुला छोड़ दिया गया तो चारो तरफ पानी-ही-पानी भर जायेगा। रसोई गैस का स्विच ऑफ कर दिया गया तो चूल्हे मे रखे केक बरबाद हो जायेगे। इसलिये बच्चा ये चीजे सीखने के लिए प्रयोग कर सकता है तथा इन प्रयोगो से बडो के लिये और कभी-कभी बच्चों के लिये भी कठिनाइया उत्पन्न हो सकती हैं। बच्चे का अज्ञान और उसकी वह जिज्ञासु प्रवृत्ति कि वह जो कुछ देखे उसे जान ले बच्चे की उत्सुकता के कारण होते है और शायद यही ऐसी बाते होती है जिनकी वजह से वह पढने-लिखने मे रुचि पैदा कर पाता है।

बच्चो की दुनिया ही अलग होती है और यदि बड़े उनकी दुनिया की कल्पना करे तो उन्हे बच्चों के साथ व्यवहार करने में जो कठिनाइयां उत्पन्न होती है वे काफी हद तक दूर हो सकती है। बडे बच्चो की दुनिया की कल्पना अपना बचपन याद करके कर सकते है। दूसरा बचपन यह हो सकता है कि वे बच्चो को खाते समय, खेलते समय, नहाते-धोते और कपडे पहनते समय सहानुभूतिपूर्वक लेकिन ध्यान से उनकी क्रियाओ को देखे तथा उनका मनन करे। जो लोग बालक के जगत् में प्रवेश नही पाते वे बच्चे के स्वभाव के सघर्षशील और अस्त-व्यस्त तत्त्वो को भली-भांति नहीं समझ सकते। बच्चे में एकाग्रता की अद्भुत शक्ति होती है और साथ ही वह कभी भी बिल्कुल शान्त होकर नही बैठ सकता। उसमे अपरिमित शक्ति होती है, फिर भी वह बड़ी जल्दी ही क्लान्त हो सकता है। वह बड़ा आशावान भी होता है लेकिन जरा-सी देर मे ही बहुत अधिक निराश भी हो सकता है। उसमें उदारता भी ऐसी होती है कि एक ही क्षण मे वह अपने पास की सारी चीजे भी किसी को दे सकता है और लालची भी ऐसा होता है कि कभी अपनी चीजो का एक छोटा-सा भी हिस्सा देने मे आनाकानी कर जाये। वह शायद कभी किसी मौके पर बड़ी-से-बड़ी अमूल्य चीजों के लेने से मना कर दे लेकिन कभी ऐसा भी हो सकता है कि किसी छोटी-सी चीज को अपने पास रखने के लिये बुरी तरह मचल जाये। उसमें चीजो को बनाने और बिगाड़ने की भी समान प्रवृत्ति होती है।

एक बात और भी है जिससे बच्चे के स्वभाव को समझने मे बडी सहायता मिल सकती है। वह यह है कि बडे अपनी क्रियाओ और स्वभाव को समझे। यदि किसी समय बच्चा अपने माता-पिता मे से किसी को चिन्तित या रुष्ट देख लेता है तो वह यह तुरन्त भाप लेता है कि जरूर दाल में कुछ काला है। जैसे ही बच्चे ने यह समझा कि वह भी परेशान और बेचैन होने लगता है। बच्चे के लिये चिन्ता का बोझ बड़ा होता है यह बोझ उस समय और भी बढ जाता है जब बच्चा यह नहीं

जानता कि उसके अभिभावक क्यो चिन्तित है। जैसे ही बड़े इस बात को समझ लेते है—वैसे ही वे बड़ी आसानी से बच्चे की चिन्ता के बोझ को समझदारी के साथ दूर कर सकते है। अभिभावक की समझ मे यह बात अपने आप आ जाती है कि बच्चा क्यो अकस्मात् नाराज होकर बरस पडता है, वह क्यों भयभीत हो जाता है, वह क्यो ऐसी बाते करने की चेष्टा करता है जिन्हे न करने के लिये बडो ने उसे आज्ञा दे रखी है। वह क्यो लड़ना चाहता है—वह क्यो किसी चीज को अपने पास रखने के लिये भयकर ईर्ष्या करने लगता है, वह क्यो किसी भी काम मे—चाहे वह अच्छा हो या बुरा—नेता बनना चाहता है, वह क्यो दूसरों की जरूरतों की तरफ ध्यान नहीं देता और क्यो कभी-कभी बिना इच्छा प्रकट किये अपेक्षित सेवा कार्य दौड-दौडकर करने लगता है ? वह कभी बहुत अधिक प्यार का प्यासा क्यों हो उठता है ? और कभी बिल्कुल ही अकेला रहना क्यो पसन्द करता है ?

बालक के विकास मे बड़ो की मुख्य समस्याए यह होती हैं कि वे उसके जीवन मे स्वतत्रता और सत्ता दोनों का उचित अनुपात निर्धारित करे। उनमें यह भावना पेदा करे कि वे किस प्रकार अपने आप अपनी चीजो की देखभाल करें। उत्तरदायी बने। बच्चों के विकास की समस्या मे सबसे बडी और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उनमे किस प्रकार नये वातावरण के अनुकूल अपने को बना लेने की प्रवृत्ति उत्पन्न की जाये और उनमे पारस्परिक सहयोग और समझदारी की भावना पैदा की जाये। किस प्रकार उनको ऐसे भयो तथा बाधाओं से बचाया जाये जिनकी वजह से उनकी विकास की गति अवरुद्ध हो जाती है। यदि माता-पिता इन समस्याओं को सुलझा लेते हैं तो वे यह अनुभव करते हैं कि स्थिति काबू मे है और वे परिस्थितियों के स्वामी हैं। इसके बाद माता की (ज्यादातर जिसकी देखभाल में बच्चा रहता है) यह इच्छा नहीं रह जाती कि बच्चा उसकी आज्ञाओं का पालन तत्काल करे। इसके बजाय वह कोई-न-कोई ऐसा रास्ता निकाल लेती है जिससे बच्चा उन कामों मे स्वयं ही उसके साथ सहयोगपूर्वक कार्य करने लगे जिनके बारे मे वह यह चाहती है कि बच्चा बिना वाद-विवाद के उसकी बातें मन ले। माता इसके बाद आदेश देने से बचती है। आज्ञा के बजाय वह सुझाव देती है और अपने सुझाव के साथ ही बच्चे द्वारा प्रकट की गयी इच्छाओ पर भी विचार करती है। इस तरह से वह बच्चे का सहयोग प्राप्त करने में सफल हो जाती है। बच्चा मजबूरी मे उसके कहने के अनुसार काम करने के बजाय अपनी इच्छा से माता का कहना मानता है।

ऐसी माता फिर कभी दमनपूर्ण निषेधात्मक आदेश अपने बच्चे को नहीं देगी। वह यह नही कहेगी, 'न मुन्ना ! ऐसा कभी मत करना।' इसके बजाय वह कोई ऐसा काम बतला देगी जिससे बच्चा अवाछित कार्य न करने पाये। इस प्रकार बच्चे की सोचने की शक्ति को दूसरी दिशा मे मोड देगी। बच्चा हठी न हो पायेगा।

इसमे जरा भी सन्देह नही कि डाट-फटकार और मारपीट से बच्चों और बडो के बीच अच्छे सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाते हैं और दोनों ही परेशान होते हैं। शारीरिक-दण्डों का भावना और पारस्परिक सबंध के जगत् पर सबसे अधिक और गम्भीर प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी तो उक्त बातो की प्रतिक्रिया वर्षो तक ही नही–जीवन भर बनी रहती है।

बच्चो के साथ बीती पीढ़ियों की अपेक्षा आजकल के माता-पिता कही अधिक कोमल व्यवहार करते है लेकिन परेशान होकर तमाचा मार देने की बात बिल्कुल अस्तित्वहीन नहीं हो गयी है। दुर्भाग्यवश, स्कूलो में भी शारीरिक-दण्ड दिया जाना बिल्कुल बन्द नही किया गया है।

घर या स्कूल में जितने भी शारीरिक दण्ड बच्चो को दिये जाते है वे सब बडो की भावना, बच्चों के व्यवहार के समक्ष उनकी बचैनी, आदत या अक्षमता को प्रतिबिम्बित करते हैं। और जब बड़े यह अनुभव करते है कि मारपीट करना उनकी अयोग्यता का परिचायक है तो वे इस काम को नहीं करते।

शारीरिक दण्ड से दीर्घकाल में कोई लाभ नहीं होता। कुछ देर के लिये ऐसा अवश्य लगता है कि बच्चे का व्यवहार बदल गया है लेकिन वस्तुतः वह आपत्तिजनक व्यवहार की जड़ को स्पर्श भी नही कर पाता है। परिणाम यह होता है कि बच्चा एक अवाछनीय काम को छोडकर कोई दूसरा वैसा ही अवाछनीय काम करने लगता है।

कभी-कभी माता-पिता या अभिभावक बच्चे से अपनी बात मनवाने के लिये अन्तिम शस्त्र के रूप मे मारपीट करते है। लेकिन इसका भी दोनों पक्षो के सम्बन्धो पर बुरा प्रभाव पड़ता है क्योकि इसमे भी बडों का बच्चों पर अपनी इच्छा बलात् लादने का भाव छिपा रहता है। बड़े बच्चे का सहयोग प्राप्त कर लेने की अपनी शक्ति पर निर्भर नहीं रहते। इसमे शक नहीं कि बालक का सहयोग प्राप्त करना बडा कठिन होता है। उसके मस्तिष्क मे यह भाव बना रहता है कि यदि उसने सुझाव न माना तो उससे बात मनवाने के लिये जोर-जबर्दस्ती की जायेगी।

ऐसी माता को (माता से हमारा आशय माता-पिता या अभिभावक सबसे है) जिसने मारपीट न करने का निश्चय कर लिया हो बच्चे से किसी काम को करने के लिये कहने के पूर्व अपने मन में नीचे लिखे प्रश्नों को पूछना चाहिए–

1. क्या जो कुछ मै चाहती हूं वह बच्चा कर सकता है ?

2. यह करने से बच्चे के विकास मे सहायता मिलेगी या बाधा पड़ेगी ?

3. यदि इस काम को करने से बच्चे को लाभ होगा तो वह कौन-सा सर्वोत्तम रास्ता है जिससे बच्चे का अधिक-से-अधिक सहयोग मिल सकता है ?

जब बड़ों और बच्चो के सबंध बहुत अधिक बिगड जाते हैं और विशेषकर जब किसी बच्चे के माता-पिता या नहीं रहते और बच्चे को अपने पैरों पर

खड़ा होने के लिये विवश होना पडता है या किसी ऐसे व्यक्ति के सहारे रहना पडता है जो उसे नहीं चाहता—तो इसका असर बालक के विकास पर बहुत अधिक पडता है क्योकि बच्चे का मंगल बहुत कुछ उस सुरक्षा की भावना मे छिपा रहता है जो सहज स्नेह के कारण पैदा हो जाती है। इस इतनी बडी दुनिया मे उसकी भी कोई छोटी-सी जगह है--यह बात बच्चे को बहुत आश्वस्त करती है।

अज्ञानी मां-बाप या अभिभावक बच्चे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं—इसके कुछ उदाहरण मै अपने अनुभवो द्वारा नीचे दे रही हू। इनसे पता चलता है कि जब बच्चा यह अनुभव करता है कि उसकी जरूरत नहीं है तो उस पर कैसी प्रतिक्रिया होती है। यही नहीं, मा-बाप की चिन्ता का भी उस पर कैसा असर पडता है यह भी स्पष्ट हो जायेगा।

(अ) पार्क में लगभग दो वर्ष का बच्चा

एक दिन तीसरे पहर हरे-भरे पार्क मे मैं एक जगह बैठी हुई थी। मेरे बगल मे ही एक स्त्री और आकर बैठ गयी। उसके पैरों के पास दो वर्ष का बच्चा खेलने लगा।

बच्चे ने थोडी देर बाद थोडी-सी घास उठा ली। थोडी देर बाद उसने घास को अपने मुह मे रख लिया। मा ने बडी लापरवाही से बच्चे को अपनी तरफ घसीट लिया और उसके हाथों को झाडकर घास गिरा दी और मुंह में रखी गयी घास को अगुलियो से निकालकर साफ करने की कोशिश करने लगी। बच्चा चीखने लगा। लेकिन मां ने उसे अपनी छाती से लगा लिया और कई बार उसे प्यार किया। थोडी देर मे बच्चा चुप हो गया। चुप हो जाने के बाद मा ने बच्चे को फिर गोद से उतार दिया और खेलने के लिये छोड दिया। बच्चा इस बार अपनी मां से दूर चला गया—शायद यह सोचकर कि वह दूर रहने पर मा के चगुल से सुरक्षित रहेगा। मां ने पहले इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। थोडी ही देर बाद मां को ख्याल आया कि बच्चा उसके पास नही है। वह उसे बुलाने लगी। बच्चा मुस्कराता रहा लेकिन मां के बुलाने से वह उसके पास न गया। जाना तो दूर रहा, अपने स्थान से हिला भी नही। इस पर मा ने और जोर से बच्चे को बुलाया। इस बार वह डर-सा गया लेकिन इतने पर ही बैठा रहा। तीसरी बार मा ने फिर बुलाया—लेकिन इतने पर भी जब वह नही आया तो मा उठ खड़ी हुई और बच्चे के पास जाकर उसे हाथ पकडकर घसीट लायी। बच्चे ने कोई सक्रिय प्रतिरोध नही किया लेकिन वह बडी अनिच्छा से अपनी मा के साथ आया।

वह थोडी देर अपनी मा के बगल मे ही खेलता रहा। लेकिन वह बेचैन था और चिन्तित भी लेकिन थोडी ही देर मे वह हाल की बात को भूल गया और मा के पास

से धीरे-धीरे हटकर दूर चला गया। इस बार वह पिछली बार से अधिक दूर जा रहा था। उसकी गति से ऐसा लगा कि वह पार्क से उतरकर सडक पर चला जायेगा।

तभी मा ने सडक पर आती मोटरकार की आवाज सुनी और वह बच्चे के पीछे तेजी से भागी। बच्चे ने अपने पीछे मा को आती देख और भी तेजी के साथ आगे भागना शुरू कर दिया। लेकिन मां ने सड़क तक पहुंचने के पूर्व ही बच्चे को पकड लिया। इस बार मा बडे जोर से एक मिनट तक बच्चे को झकझोरती रही और फिर उसे इस प्रकार ऊपर उठा लिया कि बच्चा जमीन अपने पैर से न छू सके और अपने साथ वापस ले आयी। बच्चा चीखता-चिल्लाता और दुखी होता हुआ मा के साथ चला आया।

मै उस जगह को छोडकर उठ आयी। और अधिक देख सकना मेरे लिए सभव न था। फिर भी, सडक पर आते हुए मैने एक बार पीछे मुड़कर देखा कि क्या हो रहा है। मैने देखा, मा बच्चे को अपनी दोनों बांहो में जकडे और वह बुरी तरह नीचे उतरने के लिये छटपटा रहा है। मैने समझ लिया कि बच्चे के मस्तिष्क मे एक और अप्रिय अनुभव घर कर रहा है।

(आ) तीन वर्ष के दो बच्चे रेल के डिब्बे में

एक बार मुझे दो ऐसी महिलाओं के साथ रेल मे लम्बा सफर करना पडा जिनके तीन वर्ष के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे एक-दूसरे से आकृष्ट हो रहे थे। दोनो एक-दूसरे को देखकर मुस्कराये। एक बच्चे ने खिडकी मे लगी चमडे की पट्टी से खेलना शुरू कर दिया तो दूसरे ने भी चाहा कि वह भी ऐसा ही करे। लेकिन पहले बच्चे ने पट्टी को दृढ़ता से पकड रखा था। उसकी मां ने बच्चे से पट्टी छोड देने के लिये कहा। बच्चे ने उसे छोड दिया। लेकिन छोड़ने के बाद ही फिर उसे पकड़ लिया। मा ने इस तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। पहला बच्चा बराबर उससे खेलता रहा और दूसरे बच्चे की भी कोशिश जारी रही कि वह पट्टी पकड ले। दोनो महिलाए आपस मे बाते करने मे व्यस्त थी। उन्होने बच्चो की ओर कोई ध्यान नही दिया।

आखिरकार, एक ऐसा मौका आया जब दूसरे बच्चे ने चमड़े की उस पट्टी को पकड़ लिया। पहला बच्चा भी उसे पकडे था। दोनो मे से किसी ने भी पट्टी को छोडा नही और अपनी-अपनी तरफ खीचने का प्रयत्न किया। परिणाम यह हुआ कि दोनों ही सीट से नीचे गिर पडे। इस धमाचौकडी में इतना शोर हुआ कि दोनो महिलाओ को बातचीत करना बन्द करके बच्चो की तरफ ध्यान देने के लिए विवश होना पडा। दोनो ने अपने-अपने बच्चो को उठाकर सीटो पर बैठा दिया और कह दिया कि उन्हे जहा बैठाया गया है—वहा से जरा भी न हटे। लेकिन जल्दी ही पहला बच्चा अस्थिर हो उठा। वह उचक-उचककर खिडकी के बाहर देखने लगा। दूसरे ने भी ऐसा ही



करना चाहा लेकिन उसकी मा ने बच्चे की बांह कसकर पकड रखी थी और जब उसने हिलने की कोशिश की तो मा ने कठोरतापूर्वक अपने बच्चे से कहा, 'चुपचाप बैठे रहो। जरा भी हिले-डुले तो फिर समझे रहना, तुम्हारी शामत आयी।'

बच्चा थोडी देर तक चुपचाप शान्त बैठा रहा लेकिन सामने वाला बच्चा उसके सामने बैठा अपनी मनचाही कर रहा था। यह स्थिति दूसरे बच्चे को असह्य थी। जैसे ही वह अपनी मां के पजे से छुटकारा पा सका—वह अपने घुटनो के बल बैठ गया। मा को बच्चे द्वारा की गयी अपनी आज्ञा की अवज्ञा जरा भी बर्दाश्त नही थी। बच्चे को अपनी इच्छा के विरुद्ध मुद्रा मे पाकर मा ने उसे पकड लिया और सीट पर बैठा दिया। बच्चा इस प्रक्रिया के दौरान बराबर अपने हाथ-पैर फटकारता रहा। तभी पहले वाले बच्चे की मां का ध्यान भी अपने लडके की तरफ गया। वह बडे ध्यान से सामने होने वाले दृश्य को घुटनो के बल बैठा देख रहा था। मा ने सोचा—उसे बोलना चाहिए। पहले मा ने कहा कि वह ठीक से बैठ जाये। जब बच्चे ने कोई ध्यान नही दिया तो वह जोर से बोली, 'राजू, यदि तुम इसी क्षण ठीक से नही बैठे तो बहुत मारूंगी तुम्हे।' राजू ने अपनी 'मां की तरफ देखा। इसके बाद मा ने जो कुछ कहा था उसका अर्थ समझा और अन्त मे डरकर आज्ञानुसार सीधी तरह बैठ गया।

जिस बच्चे को पहले डाट पडी थी—वह रो रहा था। उसकी सहानुभूति मे दूसरे बच्चे ने भी रोना शुरू कर दिया। तभी दोनो माताओ मे से एक को ख्याल आया कि कम्पार्टमेट में और भी यात्री हैं और उनके सामने बच्चो का इस प्रकार रोना-चिल्लाना ठीक नही है—इसलिए दोनो ने बच्चो को चुप हो जाने के लिए एक-एक नारगी दे दी। वह नहीं चाहती थीं कि बच्चे और भी अधिक रोयें-चिल्लाएं या मचलें, इसलिये दोनो बच्चे कम्पार्टमेंट में नारगी को गेद की तरह उछाल-उछालकर खेलने लगे। इस बात पर दोनो महिलाओ मे से किसी ने आपत्ति नही की। बच्चों का यह खेल जारी रहा। खेल में न केवल उन्होने शोर ही मचाया—बल्कि अपने कपडे इतने गन्दे कर लिये कि अन्य लोग उन बच्चो की शक्लें देख-देखकर हैरान हो गये। कुछ को बुरा भी लगा और नाराजी भी हुई।

इसके बाद राजू ने दूसरे बच्चे की मां के कहने पर नारगी को छीलकर खाना शुरू कर दिया। दूसरे बच्चे राकेश ने भी ऐसा ही किया। थोडी ही देर मे नारगी का रस उनके हाथ मे लग गया। रस से चिपचिपे हाथों से दोनो बच्चे कम्पार्टमेट की सब सीटो को गंदा करने लगे। जब गाड़ी निर्दिष्ट स्टेशन पर पहुंची और उतरने का समय आ गया तो सबने चैन की सास ली। प्लेटफार्म पर उतरकर जब मैने उन बच्चो के बारे में सोचा तो मुझे लगा कि अभी उन अभागों के भाग्य मे कुछ और तमाचे खाना बदा है। मेरे दिमाग मे बच्चो के हुल्लडबाज खेल और उनकी मानसिक अस्त-व्यस्तता का चित्र खिच गया

(इ) यातना-शिविरों के बच्चे

चार वर्ष की उम्र मे बहुत-से बच्चों ने, जो कुछ ही मास पूर्व यातना-शिविरो से बचाकर लाये गये थे, नये घर मे आने के पहले दो दिनों के अन्दर ही सारे खिलौनो को तोड़फोड डाला। यह उनके जगली और अनियत्रित व्यवहार का एक नमूना था। उन्होंने एक-दूसरे से अलग होना अस्वीकार कर लिया और वे अपने से बडे प्रत्येक व्यक्ति की आज्ञा के विरुद्ध हठपूर्वक कार्य करना चाहते थे। वे एक-दूसरे को पकडकर खाने-पीने की चीजो के लिये आपस मे लड़ते थे।

लेकिन कुछ महीनों के अन्दर ये बच्चे सुधर गये। उनका सारा खाना एक ही थाली में परोसा जाता था और वे उसमें से अपने हिस्से का ही खाना लेते थे। उसमे से अपनी आवश्यकता से अधिक खाना नहीं लेते थे। उनका व्यवहार सहयोगात्मक और मैत्रीपूर्ण हो गया था। लेकिन उनकी और भी बहुत-सी कठिनाइयां थी क्योकि उनमे वह सुरक्षा की भावना नही रह गयी थी जो माता-पिता के साथ रहने से अपनी रहती है। यदि उन्हे कोई स्नेहपूर्वक व्यवहार करके मोह लेता तो वे एकदम उसके कहने में हो जाते थे—या फिर बडों के सामने बिल्कुल गुमसुम बैठे रहते थे।

ग्यारह साल का एक बच्चा, जो यातना-शिविर मे रह आया था और जिसे कुछ समय तक लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहना पड़ा था—जब एक जगह स्थायी रूप से रहने के लिये भेजा गया तो उसने एक ऐसी बात कही जिससे पता चलता है कि उसमें सुरक्षा की भावना का कितना अभाव था। उसे विश्वास ही नही होता था कि उसे लोग अपने पास रखना चाहते थे। बच्चे से घर पहुचने पर कहा गया था कि वह अपना सामान खोल डाले और कमरे में ठीक से रख ले। इसका उत्तर उसने यह दिया, 'सामान खोलना बिल्कुल बेकार है। मुझे तो जल्दी ही फिर यहा से जाना पड़ेगा, इसलिए ज्यादा अच्छा होगा कि सामान ज्यो-का-त्यों बंधा रहे।'

(ई) निष्क्रमण और विलग होने की समस्याएं

युद्धकाल मे रजनी को अपनी मा के साथ अपना देश छोड़कर कनाडा जाना पडा। वहां वह अपनी उन चाची से बहुत स्नेह करने लगी जिनके यहा वह रही थी। जब वे लोग इंग्लैंड वापस लौटे तो रजनी की आयु 6 वर्ष की हो गयी थी। मा को ऐसा प्रतीत हुआ कि बच्ची की देखभाल का काम बडी ही मुसीबत का है और वह अपनी बच्ची के प्रति स्नेह प्रकट करना क्रमश: कम करती चली गयी। वह बच्चो को उसकी हर गलती पर बड़ी नासमझी और सहानुभूतिहीन ढंग से डाटती।

बच्ची बहुत जिद्दी हो गयी और कभी-कभी इतनी ज्यादा मचल जाती कि उसे मुश्किल हो जाता एक बार तो उसने यहा तक कह डाला कि वह अपनी

दूसरी मा (उसका मतलब अपने स्नेहशील चाची से था) के पास कनाडा वापस चली जाना चाहती है।

आखिरकार यह तय किया गया कि उसे बोर्डिंग स्कूल मे भेज दिया जाये। जब तक मा का ख्याल उसकी तरफ से अच्छा न हो जाये तब तक के लिए यह निर्णय अच्छा ही था। यद्यपि स्कूल मे सुचित्त होकर पढने की बच्ची की क्षमता तथा छुट्टियो की खुशी पर उसकी मा के व्यवहार की प्रतिक्रिया का होना स्वाभाविक था।

बहुत-से निष्क्रान्त बच्चो को तथाकथित सुरक्षित क्षेत्रों में बडा मानसिक क्लेश हुआ। कुछ बच्चो को तो साफ यह लगा कि नये घरों में उनकी कोई आवश्यकता अनुभव नहीं की जा रही है। कुछ को अपने माता-पिता और मित्रो की चिन्ता थी और कुछ इसलिये परेशान थे कि बोली और व्यवहार के एक निश्चित ढग के कारण वे अपने आपको नये वातावरण के अनुकूल नही बना पा रहे थे। नतीजा यह हुआ कि कुछ बच्चों का बिस्तर गीला हो जाता, कुछ का स्वभाव चिड़चिडा हो गया और वे जरा-जरा-सी बात पर बिगड जाते। इसके विपरीत कुछ बच्चो को घर वापस लौटने पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसका कारण यह था कि वे जिन घरो मे शरणार्थी के रूप मे रहे थे--उनमे उनको इतना प्यार मिला था कि अपने उन अभिभावको को छोड़ना उनके लिये बड़ा कठिन हो गया।

राजू 11 वर्ष का था--जब वह इग्लैड वापस आया। वह वापस आने पर बहुत दुखी हुआ। वह अपने कमरे को अन्दर से बंद कर चुपचाप बैठा रहता और किसी से कुछ भी नही बोलता। आखिरकार बच्चे की खुशी के लिए माता-पिता ने आपस में विचार कर यह तय किया कि राजू से कहा जाये कि यदि वह कनाडा रहना चाहता है तो वही चला जाये। जब राजू से कहा गया तो उसने कनाडा जाने से इन्कार कर दिया और बोला कि वह अपने घर ही मे रहेगा। माता-पिता को यह देखकर खुशी हुई कि राजू द्वारा किये गये स्वेच्छित निश्चय पर उसे धीरे-धीरे कनाडा की याद आना कम हो गया और वह अपने घर पर रहने का अभ्यस्त हो गया।

जो बच्चे युद्धकाल में अमेरिका या कनाडा में रहे थे वे युद्ध के खतरे के बीत जाने के बाद जब घर वापस लौटे तो बिल्कुल भिन्न थे। वे न केवल आयु मे बडे हो गये थे बल्कि उन्हें कुछ ऐसे अनुभव हुए थे जिनका उनके माता-पिता को कोई ज्ञान नही था। इसका कारण दोनो देशों के बीच की वह दूरी थी जिसकी वजह से बच्चो और माता-पिता के बीच कोई निकट सम्पर्क शेष नहीं रह गया था।

ऐसे बच्चो का घर वापस आना बच्चो और उनके माता-पिता दोनों के लिए कठिनाइयां पैदा करने वाला सिद्ध हुआ। कभी-कभी तो उन कठिनाइयों का असर कई वर्षो तक बना रहा जब बच्चे बहुत दिनो तक माता पिता से अलग रहे तो उनके वापस लौटने पर यह बहुत ही जरूरी है कि बडों की तरफ से बच्चों का

बुद्धिमत्तापूर्वक ख्याल रखा जाये।

बहुत-से बच्चे अपने पिता से बहुत दिनो तक विलग रहे। जब ऐसे बच्चे वापस लौटे तो पिता को उन्हें पुन अपने साथ रखने में बड़ी कठिनाई हुई। सुरेश ने जिसकी आयु पाच वर्ष की थी कहा कि वह अलग रहना चाहता है। पिता चाहते थे कि सुरेश पहले की भाति बच्चे की तरह से रहे जिसका सुरेश की तरफ से प्रतिरोध किया जाता था।

(उ) स्थानाभाव की समस्याएं

बहुत-से लोग ऐसे मकानों और स्थानों में रहते है जो उनकी आवश्यकता के लिहाज से बहुत छोटे होते हैं। यह बात केवल वहीं के विषय मे सत्य नही जहा आबादी घनी है। बहुत-से लोग अपने मित्रों या सम्बन्धियों के साथ एक ही मकान या कमरे मे रहते है। एक ही मकान या फ्लैट मे कई परिवारों के एक साथ रहने से बच्चो को बडी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। किसी-न-किसी वजह से उनको आवश्यकता से अधिक चुप रखा जाता है और ऊधम मचाने से रोका जाता है जिससे वे किसी की सम्पत्ति को क्षति न पहुचाने पाये। इन सबकी मां को सबसे अधिक चिन्ता करनी पडती है जो किसी-न-किसी बात पर हमेशा बच्चों को डाटती ही रहती है।

3 वर्षीया बच्ची रूपा को एक ऐसे फ्लैटो के ब्लॉक में रहना पडता था जहा अन्य बच्चे नही थे। उसके माता-पिता को यह अनुभव हुआ कि बच्ची की हर बात को उनके पडोसी बड़े ध्यान से देखते रहते है। बच्ची भी यही बात अनुभव करती थी जिसकी वजह से उसको हर कदम पर सावधान रहना पड़ता था और वह चुपचाप भी रहती थी क्योंकि शोर मचाने पर बच्ची और उसके परिवार के लोग वहा रह नही पाते। जब भी अपने घर मे दौडती, खेलती या कूदती आसपास के लोग परेशान हो उठते और उसे ऐसा करने से रोक दिया जाता। बच्ची के माता-पिता किसी दूसरी जगह अलग रहना पसन्द करते लेकिन अन्य किसी स्थान पर उचित जगह मिलनी मुश्किल थी। पडोस की वजह से ही माता-पिता ने यह तय किया कि वे अपने परिवार को और अधिक बढ़ाना नही चाहते। हालांकि वे यह अनुभव करते थे कि रूपा के यदि कोई भाई या बहन हो जायेगी तो उसे अपना मन लगाने मे बडी मदद मिलेगी। साथ ही उन सबको भी प्रसन्नता होगी।

(ऊ) रवि और उसके पिता की नौकरी

रवि की आयु 8 वर्ष की थी लेकिन इसी में उसकी मुखमुद्रा से घोर चिन्तातुरता में चिह्न प्रकट होने लगे थे बात यह थी कि रवि के पिता जिस

कम्पनी मे नौकरी करते थे वह कम्पनी बन्द होने वाली थी। बच्चा बडा चिडचिड हो गया था। जरा-जरा-सी बात पर झुझला उठता था। शोर मचाने लगता था औ स्कूल का काम सहजता से कर न पाता था। उसकी यह अवस्था कई सप्ताह तव चलती रही। आखिरकार कठिनाई का वह समय समाप्त हो गया और कम्पनी के मालिकों ने यह तय किया कि वह उसे बन्द नही करेगे। मै यह तो नही जानती की रवि विस्तारपूर्वक उन आशकाओ को समझता था जिन्हें उसके माता-पिता अनुभव करते थे लेकिन मेरा ख्याल है कि माता-पिता की पारस्परिक बातचीत से और चिन्ता और क्लान्ति से ही उसने फिक्रो की कल्पना की होगी और स्वय भी परेशान हो उठा होगा।

प्रश्नावली

1. किसी ऐसे बच्चे के बारे मे बतलाइये जो किसी कारण से अपने माता-पिता के सहज स्नेह से वंचित हो गया हो। इसका बच्चे पर क्या असर हुआ और अन्त में वह स्थिति कैसे समाप्त हुई ? ('इ' और 'ई')
2 क्या किसी बच्चे मे यह भावना होना जरूरी है कि उसके प्रत्येक कार्य को बडो की सहमति किसी-न-किसी रूप मे प्राप्त हो ? ('अ' और 'आ')
3 क्या बडों को हमेशा अपने आदेशो के पालन किये जाने का आग्रह करना चाहिए ? ('अ' और 'आ')
4 किसी बच्चे को रेल के डिब्बे मे यात्रा करते हुए कितनी स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए ? ('आ')
5 नासमझी की आज्ञाकारिता से बच्चे के विकास मे कैसे बाधा पड जाती है ? क्या आकस्मिक खतरे के समय आज्ञाकारिता से कोई लाभ हो सकता है ? ('अ')
कोई ऐसी घटना बतलाइये जिसमे किसी बच्चे को गलत ढग से शारीरिक दड (बेंत या कोड़े से पीटा गया हो या साधारण ढग से मारा गया हो) दिया गया हो। क्या उस दड की वजह से बच्चा बडों की मर्जी के मुताबिक काम करने लगा या माता-पिता दण्ड देने के बाद यह भूल गये कि वे बच्चे से क्या चाहते थे ? लोग एक बार बच्चों को मारकर फिर उन्हे क्यो चुप कराते है? ('अ' और 'आ')
किसी ऐसे बच्चे के बारे मे बतलाइए जो सुरक्षा के लिए अपने माता-पिता के पास से कहीं दूर भेज दिया गया हो या जिसे लम्बे समय तक अपने माता-पिता से अलग रहना पड़ा हो या किसी सकीर्ण स्थान मे रहना पडा हो। ऐसी अवस्था में क्या कठिनाई उत्पन्न हुई थी और वह कठिना स्थिति कैसे पैदा हुई ?

अध्याय-2

व्यवहार की समस्याएं

प्रस्तुत अध्याय में हम आजकल के उन माता-पिता की कुछ ऐसी कठिनाइयो पर विचार करेंगे जो पुराने लोगों की तरह अपने अभिभावकत्व की सफलता इस बात मे नही मानते कि बच्च्या तत्काल उनकी आज्ञाओ का पालन करे बल्कि जो बच्चे मे सक्रियता, विचारशीलता और अच्छी मित्रता की भावना उत्पन्न कर देने मे ही अपना उत्तीर्ण होना मानते है।

बहुत अशों मे आधुनिक माता-पिता का कार्य पुराने लोगों की अपेक्षा बडा कठिन है क्योकि उनका स्वतन्त्रता और सत्ता के बीच बच्चे के जीवन मे सन्तुलन बनाये रखना है। बीते दिनो मे ऐसी बात नही थी। माता-पिता के लिए इतना ही पर्याप्त था कि वे सत्ता के प्रति बच्चे की अधीनता मनवाये यानी उनसे आज्ञापालन करा ले।

आजकल की प्रगतिशील माता के लिए पुरानी माताओं की तुलना में बच्चे का सहज सहयोग और स्नेह प्राप्त कर लेना अपेक्षाकृत आसान है जिसकी वजह से माता और बच्चे दोनों के जीवन में पारस्परिक सम्बन्धों की ग्रंथि सदैवमहत्त्वपूर्ण बनी रहती है।

कुछ ऐसी भी माताए होती है जो पुरानी माताओ की तरह बच्चो को बल प्रयोग द्वारा धमकी और दड से आज्ञाकारी, विनीत और विनम्र बनाने की सोच मे रहती हे क्योंकि वे समझती हैं कि यही उन्हे करना चाहिए। लेकिन चारो तरफ बालस्वातन्त्र्य की हवा से उन्हें ऐसा लगता है कि उनके साधन त्रुटिपूर्ण हैं। इससे उन्हे असंतोष होता है। ऐसी माताए अस्थिर होती है। एक बार तो वे एक कार्य करने पर बच्चे को बुरी तरह पीटती है और दूसरी बार वही कार्य किये जाने पर वे बच्चे से कुछ भी नहीं कहती और उसे तरह दे जाती है। बच्चे को ऐसे वातावरण में अपने ऊपर इस बात का कभी विश्वास नही हो पाता कि वह क्या करे और क्या न करे। कभी तो उसे बिल्कुल स्वतंत्र छोड दिया जाता है और कभी अकस्मात् वह स्वतन्त्रता छीन ली जाती है और उसके बदले में बच्चे से पूर्ण आज्ञाकारिता की माग की जाती है।

यह बडी ही कठिन स्थिति है लेकिन इन दिनों ऐसी स्थिति अक्सर पायी जाती

है। यद्यपि बीती पीढ़ी की बाते अब नही रही है लेकिन यह स्थिति निश्चित रूप से उन्ही दिनो की यादगार है। कुछ अनिश्चयी अभिभावकों के सम्बन्ध मे ऐसा लगता है कि वे प्रगतिशील है। कुछ अभिभावक ऐसे भी मिलते है जो नयी बातो मे विश्वास नहीं करते। लेकिन इन दोनों ही प्रकार के माता-पिता के बारे मे वास्तविकता यह है कि उन्हे नये ढंग से बच्चो के साथ व्यवहार करके सफलता प्राप्त करने का अपने ऊपर विश्वास नही है। वे स्वय अपने हृदय में स्वतंत्रता का स्पन्दन अनुभव नही करते और इसीलिए वह भावना से दूसरो को भी अनुभव नही करा पाते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि प्रत्येक बालक के जीवन मे चाहे उसे कितने ही बुद्धिमान व्यक्ति का सरक्षण प्राप्त हो ऐसा समय कभी-न-कभी अवश्य आता है जब उसे कोई अप्रिय बात बर्दाश्त करनी पड़ती है या ऐसी बात करनी पडती है जो उसे अपने हित की दृष्टि से या अपने आसपास के लोगो के कल्याण की दृष्टि से नहीं करनी चाहिए। जब ऐसे मौके पैदा हो जाते हैं तो बड़ों का काम अपेक्षाकृत आसान हो जाता है, शर्त यही है कि उन्हे बच्चो का विश्वास प्राप्त हो और वे उनका सहयोग प्राप्त कर सके।

कुछ आधुनिक माता-पिता प्रत्येक अप्रिय चीज को खेल मे बदल देते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं कि उन्हें किसी कठिन स्थिति का सामना न करना पड़े। वे कभी-कभी ऐसा भी करते है कि जब कोई अप्रिय चीज हो रही होती है तो बच्चे का ध्यान उस तरफ से हटाकर किसी दूसरी तरफ लगा देते है। किसी अप्रिय चीज को खेल मे बदल देना बहुधा कठिनाई के हल का बडा सरल साधन होता है और कभी-कभी ऐसा करना जरूरी भी होता है, विशेष रूप से दो-तीन वर्ष की अवस्था वाले बच्चे के मामले मे। अप्रिय चीज को खेल मे बदल देने की पद्धति निश्चयात्मक रूप से बच्चे के लिये बड़ी सहायताप्रद होती है क्योंकि उससे बच्चे का सहयोग भी मिल जाता है। बच्चे का ध्यान बटा देने का तरीका भी कभी-कभी बडा काम कर जाता है। इससे या तो कठिनाई पूरी तरह सुलझ जाती है या आंशिक रूप से। लेकिन यह तरकीब निश्चित रूप से कमजोरी की निशानी है। बच्चे और बडे दोनो को ही ऐसी कठिनाइयो का सामना करने मे सतोष होता है जिनको वे हल कर सकें। स्वस्थ व्यक्ति को कठिन-से-कठिन होने वाली गुत्थियों को सुलझाने मे बडा आनन्द आता है और यदि कठिनाई उसके सामने ही आते लुप्त हो जाती है तो उसे कुछ खेद-सा होता है। दूसरे, यदि बच्चे के सामने कोई कठिनाई आने ही नहीं दी जायेगी तो बच्चा माता-पिता के सरक्षण मे एक प्रकार का ऐसा जीवन व्यतीत करेगा जो बाह्य ससार की वास्तविकताओं से एकदम भिन्न होगा।

बच्चे को किसी भी ऐसी समस्या के सुलझाने में बडा आनन्द आता है जो उसके चेतन मस्तिष्क मे घर किये होती है। यदि उस तरफ से बच्चे का ध्यान बराबर हटा दिया जाता रहेगा तो इस बात की पैदा हो जाती है कि क्रमश बालक

की एकाग्रता की शक्ति का ह्रास हो जाये।

यह बात तो प्रत्येक व्यक्ति स्वीकार करता है कि एकाग्रता की शक्ति बडा अमूल्य गुण है; लेकिन, दुर्भाग्यवश यही एक ऐसा गुण है जिसकी वजह से बडो को प्रतीत होता है कि बच्चा उनकी इच्छाओ के विपरीत कार्य कर रहा है। वे बच्चे को जैसा वह कर रहा होता है—वैसा न करने देकर बच्चे को हताश कर देते है और यह बात बच्चों और बड़ो के बीच बहुत-सी कठिनाइया पैदा कर देती है। नतीजा यह होता है कि बडो की दुनिया के अनुकूल अपने आपको बनाने में बच्चे को बहुत-सी बाधाओ का सामना करना पड़ता है।

बडों को यदि यह बात याद रहे कि बच्चा हमेशा अपनी गति से ही आगे चलता है तो उन्हे बडी सहायता मिलेगी। बच्चा वैसे भी बहुत धीरे-धीरे कार्य करता है और उस समय तो उसकी कार्यगति और भी मन्द हो जाती है जब वह कोई नया काम करता है। कभी-कभी बडों को ऐसा भी प्रतीत हो सकता है कि कार्य सफलतापूर्वक समाप्त हो गया है लेकिन बच्चा बराबर उसी में जुटा हुआ है।

जब बच्चा यह अनुभव करता है कि उसके सामने आयी कठिनाई को दूर करने के लिए कोई बडा आ रहा है और उसे अपनी कठिनाई को अपने आप दूर नहीं करने दिया जायेगा तो वह अपने कार्य की दिशा को बदल देता है। जो बडे लोग बच्चे को कठिनाई का सामना नही करने देते और बच्चे के सामने कोई भी दिक्कत आते ही खिलौना दे देते है या उसे किसी नये खेल में व्यस्त करा देते हैं—वे यह समझते है कि ऐसा करने से वे बच्चे को रोने या मचलने से रोक सकेगे या कोई कठिन कार्य आसानी से जल्दी और अच्छे ढग से करा सकेंगे। ऐसे स्थल पर बडे लोग यह अनुभव नही करते कि बच्चा दस में से नौ बार सुझाव के अनुसार कार्य करने मे तब तक कोई आपत्ति नहीं करता जब तक किसी प्रकार वह यह न समझ जाये कि बड़े उससे आपत्ति करने, हिचकिचाने या रोने-मचलने की भी आशा करते हैं।

यदि माता-पिता अत्यन्त शान्ति और धैर्यपूर्वक बच्चे को अपने सुझावो के अनुसार काम करने का पर्याप्त समय दें तो बडो और बच्चो के बीच बहुत-सी कठिनाइया उत्पन्न ही नही होगी। बच्चे के सम्बन्ध मे अपने सुझावों के अनुसार कार्य करने का दृढ विश्वास बड़ों को कार्यव्यस्त बच्चे को ऐसे अबुद्धिमत्तापूर्ण सुझाव देने से रोकेगा जिनसे कोई सहायता न मिले तथा अनावश्यक कठिनाइया पैदा हो जाये तथा बच्चा काम करने मे असफल हो जाये। इसके साथ ही यह विश्वास बच्चे के विकास के लिए एक स्थायी आधारशिला भी सिद्ध होगा।

यह बहुत महत्त्वपूर्ण बात है। बच्चे ऐसे वातावरण को नही पसन्द करते जिसमे वे जो चाहें वह कर सकें। वे नियमित, व्यवस्थित और अचचल वातावरण में अधिक प्रसन्न रहते हैं यदि बच्चो को चचल मे रहना पडता है तो उनमे एक प्रकार

की ऐसी भावना उत्पन्न हो जाती है जिससे लगता है कि उन्हें कोई अभाव महसूस हो रहा है। वह इस भावना के फलस्वरूप जब वे दूसरो के साथ व्यवहार करते है तो उनके उस व्यवहार से कुछ सख्ती-सी प्रकट होती है। आधुनिक माता-पिता अपने बाल्यकाल के कठोर अनुशासन के वातावरण से बच्चो को बचाने की फिक्र मे कभी-कभी विपरीत दिशा में चले जाते है। वे अक्सर बच्चे को ऐसे मौको पर एकदम स्वतत्र छोड देते है जहा उसका अनुभव सीमित होता है। परिणाम यह होता है कि बच्चा कोई निर्णय नहीं कर पाता।

कभी-कभी वे बच्चे के साथ मित्रता की भावना स्थापित करने के लिए बच्चे के साथ वडो की भाति व्यवहार करने लगते हैं और हर बात मे बच्चे से सलाह करते है। ऐसे स्थल पर यह याद रखने की बात है कि जहा बच्चे का सम्मान और उसके साथ समानता का व्यवहार करना जरूरी है वहीं यह भी जरूरी है कि बच्चे को सहानुभूतिपूर्ण ढग से आगे का रास्ता दिखलाया जाये। यह कार्य केवल वड़ा ही कर सकता है। बच्चा बडों की कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता—इसलिए बडो के विशेपाधिकार भी उसे नही दिये जाने चाहिए। यदि बडो और बच्चो के बीच बिल्कुल समानता स्थापित हो जाती है और दोनो एक-दूसरे के उत्तरदायित्वो से बिल्कुल परिचित हो जाते है तो बच्चे को विकास के लिए अधिक प्रेरणा नही मिलेगी और न वह इस बात के लिए ही इच्छुक हो सकेगा कि बडा होकर क्रमश: वह भी उन जिम्मेदारियो को सभाले जो उसके बडे सभालते है।

कुछ माता-पिता अपने बचपन के उन दिनों को याद करते है जिन दिनो उनको कोई महत्त्व ही नही दिया जाता था जिससे वे अपने को बड़ा हीन अनुभव करते थे। यह हीनता की भावना कहीं उनके बच्चो मे भी पैदा न हो जाये इसे दूर करने के लिए वे बच्चो को इतना अधिक महत्त्व देते है कि उनका सारा घर ही बच्चो की आज्ञाओ के अनुसार चलता प्रतीत होता है। माता-पिता का यह सोचना बिल्कुल उचित और स्वाभाविक है कि वह बच्चों के लिए जो कुछ भी अच्छे-से-अच्छा कर सकते है—कर, लेकिन उन्हे यह भी देखना चाहिए कि कौन-सी बात से बच्चे का हित होगा और कोन-सी बात से अहित। बच्चे की तरफ यदि कुछ विशेष ध्यान दिया जाये तो निस्सन्देह यह बडा ही अच्छा है, लेकिन यह भी बहुत आवश्यक है कि बच्चा धीरे-धीरे अपने को बड़ों की दुनिया के अनुकूल बनाना सीखे। अतएव, यह बहुत जरूरी है कि बच्चा जिस दुनिया में रहता हो वह छोटी-सी होते हुए भी नियमित और व्यवस्थित हो और उसमे बच्चे को अपने विकास का पर्याप्त अवसर मिले। इसके साथ ही बच्चे को कठिनाइयो का सामना करने का अवसर भी मिलना चाहिए जिससे उसे जब वास्तविक जीवन मे कठिनाइयो का सामना करना पडे तो वह उनका अभ्यस्त प्रतीत हो।

बच्चे को जब कोई निर्देश दिया जाये तो यह समझा देना लाभदायी होता है कि उसके अनुसार आचरण करना क्यों जरूरी है। बच्चे को समझा देने का फल यह होगा कि वह यह नही समझेगा कि उससे बडे की इच्छा का अधानुकरण करने के लिये कहा जा रहा है बल्कि वह समझेगा कि उससे एक ऐसे नियम को पालन करने के लिये कहा जा रहा है जिसे वह भी समझता है।

ऐसे में जब कोई कठिनाई पैदा हो और कभी-न-कभी कठिनाई अवश्य पैदा होगी खासतौर से बीमारी मे या ऐसे समय मे अब बच्चा या माता-पिता मे से कोई थका हो--तो यह बहुत जरूरी है कि बच्चा उस कठिनाई को अपनी इच्छा और बडो की इच्छा का संघर्ष न समझे। बच्चे को यह समझाना चाहिए कि उससे एक ऐसे नियम का पालन करने के लिये कहा जा रहा है जिसके विपरीत आचरण करने पर उसे अवश्य ही तकलीफ होगी क्योंकि नियम व्यक्तियो का कोई लिहाज नही करता है। बच्चे को यह भी बतला देना चाहिए कि जब किसी नियम के अनुसार बच्चे से आचरण करने के लिये कहा जाता है तो उसका अर्थ बडों की इच्छा के अनुसार काम करने का नही होता है। यह परिणाम प्राप्त करने के लिये यह बहुत जरूरी है कि माता या पिता के किसी व्यवहार से यह न प्रकट हो पाये कि वह व्यक्तिगत रूप से बच्चे की इच्छा का विरोधी है।

उपर्युक्त दृष्टिकोण से प्रत्येक कठिनाई का सामना किया जाना चाहिए और उक्त भावना से ही सामने आने वाली समस्याओं को सुलझाने के समस्त प्रयत्न किये जाने चाहिए। यदि ऐसा किया जाता है तो कभी-कभी अपेक्षाकृत अल्प लाभदायी साधनों के उपयोग से भी बच्चे के विकास में कोई गभीर बाधा नही पडेगी।

कल्पनाशील बालक बहुधा ऐसी दुनिया में रहने लगते हैं, यदि उन्हे ऐसा करने से रोका न जाये तो, हानि होने की सभावना है। बच्चे पर घर मे बहुत अधिक ध्यान दिये जाने से बच्चो और बड़ों दोनो की बहुत-सी शक्ति और बहुत-सा समय व्यर्थ मे ही नष्ट हो जाता है। दैनिक कार्यो मे जहा तक सभव हो एक ही निश्चित क्रम से बच्चे का काम न करना बुद्धिमत्तापूर्ण होता है। ऐसा करने से यदि थोडे समय के लिये किसी अन्य व्यक्ति को भी बच्चे की देखभाल करनी पड़ जाये तो उसे वह अखरता नही है। बच्चे के सारे काम एक ही निश्चित क्रम अेर ढंग से ऐसे घरो मे अक्सर होते है जिनमे बच्चा ही सारे घर के आकर्षण का केन्द्र होता है। बच्चो मे यह भावना कि उनका काम नित्य एक ढग से हो—इस बात के ज्ञान से और भी अधिक बढ जाता है कि उनके माता-पिता ही एकमात्र ऐसे लोग हैं जो उनके नहाने, धोने, भोजन और टहलाने का ठीक-ठीक ध्यान रख सकते है।

माता-पिता या अभिभावको के लिये अपने बच्चों को बड़ा होने देना बडा कठिन होता है उन्हे बच्चो की बाल लीलाए बहुत आकर्षक लगती हैं और उन्हें यह

भी बड़ा मधुर प्रतीत होता है कि बच्चा उन पर निर्भर करता है। लेकिन किसी भी बुद्धिमान माता-पिता को बच्चे की बढ़वार में बाधा नहीं डालनी चाहिए और न उसकी बचपन की बातो को आयु बढ़ने पर भी बने रहने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि बच्चा बहुत अधिक उन पर निर्भर भी न करे।

बच्चे को बहुत अधिक अपने ऊपर निर्भर बने रहने देने का परिणाम यह होता है कि वह माता-पिता से बहुत अधिक चिपका रहता है और अभिभावको की समस्याएं तथा कठिनाइया बच्चे के विकास को अवरुद्ध करती है। माता-पिता के बहुत अधिक निकट रहने का फल यह होगा कि बच्चा अपने आप कोई निर्णय कभी भी नहीं कर पायेगा और वह हर बात में माता-पिता की सलाह लेगा और अपनी कठिनाई दूर किये जाने के लिए उनका मुह ताकेगा। आगे चलकर उसमे यह भावना भी पैदा हो सकती है कि उसके अपने माता-पिता को छोडकर अन्य कोई व्यक्ति उसकी समस्याओं को सुलझा ही नही सकता है।

निस्सदेह बहुत-से माता-पिता और कुछ अध्यापक अपने बच्चों की आवश्यकता से अधिक चिन्ता करते है। उन्हे हमेशा यही भय रहता है कि उनका बच्चा हो सकता है अच्छा व्यवहार न करे, या हो सकता है उन्हें दुखी करे, या शायद कही गिर पड़े आदि। इन सब दुश्चिन्ताओं की वजह से वे कभी-कभी ऐसे कार्य कर बैठते है जिनसे बच्चा ठीक वही काम करने लगता है जिन्हे वे नही चाहते। यदि अभिभावक और अध्यापक बच्चों का थोडा-सा अधिक विश्वास करने लगें, अपने ऊपर तथा दूसरो पर थोड़ा और अधिक विश्वास पैदा कर ले तो उन्हें कठिनाइयों, दुखो और दुर्घटनाओ की अधिक चिन्ता नहीं करनी पडेगी और इस प्रकार बहुत-से ऐसे कारण स्वतः दूर हो जायेंगे जिनसे उन्हे क्लेश हो सकता होगा।

मै अपने अनुभव से नीचे कुछ ऐसे दृष्टान्तों का उल्लेख कर रही हूं जिनसे उन कठिनाइयो का परिचय मिलता है जिनका सामना सत्ता और स्वतन्त्रता के बीच का मार्ग अनुसरण करने वाले माता-पिता या अभिभावको को करना पड़ता है। कभी-कभी बच्चों को जो अप्रिय सुझाव दे दिये जाते हैं या उनमें किसी वजह से गलतफहमी पैदा हो जाती है इन सब दृष्टान्तों का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। इनसे यह पता चलता है कि बडो के अपने ऊपर विश्वास न होने के कारण बच्चे पर कितना प्रतिकूल असर पड़ता है और फिर अधिकार और आग्रह ये दोनों चीजें एक बार गलत सुझाव दे देने पर कितनी शक्तिहीन सिद्ध होती है।

(अ) दीपिका द्वारा मछली के तेल पीने का विरोध

दीपिका 7 वर्ष की बालिका थी। वह कई वर्षो से लगातार बिना कोई कठिनाई

पैदा किये मछली का तेल पीती चली जा रही थी . वस्तुत वह उस तेल के पीने की इतनी आदी हो गयी थी कि यदि उसकी मां कभी उसे तेल पिलाना भूल-सी जाती तो वह स्वयं याद दिला देती थी। एक दिन अकस्मात् दीपिका ने कोई ऐसी बात सुन ली जो उसे नही सुननी चाहिए थी। बस, उसका रुख सहसा बदल गया। उसने मछली का तेल पीने से साफ इन्कार कर दिया। दीपिका ने अपनी मा को पिता से बगल वाले कमरे मे यह कहते सुन लिया था कि 'मैं नही जानती दीपिका कैसे मछली का तेल इतनी खुशी से पी जाती है। मैं तो उसकी एक बूद भी नही पी सकती। उस तेल की गंध से ही मेरी तो तबीयत बिगड़ जाती है।' इस बात से सम्भवत बालिका को यह सकेत मिल गया कि उसकी मा को तेल से होने वाले लाभ मे विश्वास नही है।

इसके बाद दीपिका से मछली का तेल पीने के लिए बहुत कहा गया और उसे समझाया भी गया कि यद्यपि उसकी मां का ख्याल वही था जो उसने सुना था लेकिन वह उसकी मा की अपनी राय है और इस सम्बन्ध मे लोगो की राय बहुत भिन्न-भिन्न है। बालिका को यह भी याद दिलाया गया कि वह अब तक बडे प्रेम से मछली का तेल पीती आयी है। इसके बाद दीपिका ने तेल पीने की कोशिश की। लेकिन पीते समय उसने अपना मन इतना बिगाडा कि माता-पिता ने इसी मे बच्ची की भलाई समझी कि वह तेल न पिये।

(आ) विभा का बचपना

जब विभा केवल 4 वर्ष की बालिका थी—तब उसकी मा ने एक बार कहा था, 'मै यह कल्पना भी नही कर सकती कि विभा बड़ी हो जाये और अपनी बाल- सुलभ आकर्षक आदतों को भूल जाये। ये 'बालसुलभ आकर्षक' बाते क्या थी ? ये थी उसके बोलने की कुछ त्रुटियां। उदाहरण के लिये 'स' को 'श' कहती थी, 'ऊ' की जगह 'ओ' कहती थी और 'था' की जगह 'थे' कहती थी। वह मा के प्रति सहज स्नेहपूर्ण निर्भरता भी दिखलाती थी।

4 वर्ष की आयु मे ही वह अजनबियों से बहुत शर्माती थी—खासतौर से उन आदमियो से जिनसे वह भली-भाति परिचित न होती थी। वह नये या अपरिचित आदमियो को देखते ही मा के पास दौड़ जाती और मां के कपडों मे अपना मुंह छिपा लेती। यह विभा की ऐसी आदत थी जो उसकी मा को बड़ी आकर्षक लगती थी। मा ने विभा की यह आदत उस समय भी नही छुडायी जब उसे यह बात अपने आप छोड देनी चाहिए थी। विभा ने अपने आप यह आदत इसलिये नहीं छोड़ी कि वह अपनी मां के मुंह से अक्सर सुनती थी, 'विभा बडी ही शर्मीली है। जहा उसने कोई अपरिचित आता देखा कि वह तुरन्त मेरे पास दौड आती है।' या, 'विभा बेटी, आ

तू अपनी मा के पास आ जा। तू तो हमेशा नये आदमियों से शर्माती है और सदा अपनी मा के पास ही खुश रहती है।'

विभा को हमेशा एक-से कपडे एक ही ढग से पहनाये जाते थे। उसे कपडे पहनाने का काम भी सदा उसकी मां ही करती थी। विभा शायद आगे चलकर अपने आप ही कपडे पहनने लगती लेकिन अपने आप कपड़े पहनने की जो आदत क्रमश डाली जानी चाहिए थी वह नही डाली गयी थी। उसकी मा उसकी कपडे न पहन सकने की अयोग्यता से उसे छोटी बच्ची ही समझती थी और वह इसके प्रतिकूल उसे कुछ करने भी नहीं देना चाहती थी।

6 वर्ष की हो जाने पर भी विभा को ठीक से अपने कपडे पहनने की आदत नही पडी थी। उसकी मां तब तक पहले से अधिक कार्य मे व्यस्त रहने लगी थी। इसलिये वह उसकी तरफ अधिक ध्यान नहीं दे पाती थी। यदि विभा अपने कपडे अपने-आप पहनने लगती तो इससे उसे प्रसन्नता ही होती। वह कभी उलटा कपडा पहन लेती तो कभी आगे का हिस्सा पीछे और पीछे का आगे कर लेती और जब उससे गलती सुधारने के लिये कहा जाता तो वह त्रुटि दूर करने को तनिक भी चेष्टा न करती।

सच तो यह है कि 6 वर्ष की आयु हो जाने पर भी विभा 4 वर्ष की बालिका ही बनी हुई थी और अपने को सुधारने की कोई चेष्टा नहीं करती थी। ऐसा लगता था कि उसे शिशु की अवस्था मे ही बना रहना पसन्द था। हालाकि वह अन्य बालको की तुलना मे किसी से योग्यता मे कम न थी। उसमें जो कुछ भी खराबी थी—वह माता के व्यवहार के कारण थी। विभा मे स्वत. कोई खराबी नहीं थी। यदि उसकी मा ने विवेक से काम लिया होता तो वह यह त्रुटि दूर कर सकती थी।

(इ) साफ दीवाल पर उमेश की लिखने की आदत

उमेश की आयु सवा दो वर्ष की थी। एक दिन उसने देखा कि कुछ मजदूर बैठक की सफाई करने में लगे हैं और दीवालो पर कागज चढा रहे हैं। मजदूर जब तक अपने काम मे लगे रहे उमेश बड़ी उत्सुकता से उनके इस काम को देखता रहा। उसने मजदूरों को इसके पहले दीवालो पर कागज चढ़ाते कभी नही देखा था। इसलिये उसे मजदूरो को यह काम करते देखकर बडी उलझन हो रही थी। मां की बातो से उसने यह समझा था कि कागज भी दीवाल का ही एक भाग है। वह यह नही जानता था कि कागज को बदला कैसे जा सकता है।

पहले उसने वह कागज छूकर देखा जो गोलो के रूप में लिपटा हुआ रखा था। इसके बाद उसने दीवाल को छुआ जो बिना कागज चढ़ी थी। कागज छूने के बाद उसने कहा 'क्यों यह तो कागज है उसके कहने के स्वर से ऐसा लगता था जैसे

उसने कोई बहुत बडी खोज कर ली हो। इसके बाद दीवाल छूने के बाद बोला, 'क्या यही दीवाल है, मा ?'

शीघ्र ही उमेश की नयी खोज संबधी रुचि का पता लग गया। दीवाल पर कागज चढ़ जाने के बाद जैसे ही पहली बार उमेश को कमरे मे अकेले रहने का मौका मिला उसने लाल रंग से पूरी दीवाल के कागज पर, जहां तक वह पहुंच सकता था, निशान लगा दिये। इसके बाद दौड़कर अपनी मा को बुला लाया और कहने लगा कि अब दीवाल कितनी सुन्दर लगती है। दीवाल पर चढ़े नये कागज की यह दुर्दशा देखकर मा घबरा गयी। उसे बड़ा आश्चर्य भी हुआ। मां का ख्याल था कि उमेश बहुत पहले यह समझ गया है कि उसे दीवाल को गन्दा करने की इजाजत नही है।

अपनी मा को भयभीत और परेशान देखने पर उमेश का उत्साह उड़ गया। उसकी आंखो में आसू भर आये और वह बोला, 'मैं तो ऐसा केवल कागज को सुन्दर बनाने के लिये किया था।' उमेश की मां ने कहा, 'लेकिन तुम तो यह जानते हो कि दीवाल पर नही लिखना चाहिए। जानते हो न ?' उमेश ने इसका उत्तर यह दिया कि 'मैंने दीवाल पर थोडे ही लिखा था। मैंने तो कागज पर लिखा था और कागज तो लिखने के लिए ही होता है, मा।'

उमेश ने जो गलती की थी कि इसका कारण तो यह था कि जो कागजदीवाल पर चढ़ाया गया था--वह एकदम सफेद था। वह पहले की भांति रगीन न था।

उमेश की मां को अपने बच्चे को यह समझाने में कुछ समय लगा कि दीवाल का कागज अलग होता है और लिखने का अलग।

(ई) बीमारी में शीला का व्यवहार

शीला जब 5 वर्ष की थी तो एक बार बीमार पड गयी और कई सप्ताह उसे बिस्तर पर पडे रहना पडा। वह इस बात की आदी हो गयी थी कि बडे उसकी तरफ पूरा-पूरा ध्यान दे और उसे ऐसे कोई उपहार भी दिये गये थे जिनकी वजह से उसका जी बहला रहे और समय आसानी से कट जाये। उसे प्राय' वे सब चीजे मिल जाती थी जिनकी वह इच्छा करती थी। इसका नतीजा यह हुआ कि वह दैनिक कर्म भी तभी करती जब वे खेल के रूप में उससे कराये जाते। वह चाहती थी कि हर काम उसकी इच्छा के अनुसार ही हो। उसकी यह आदत क्रमशः पुरानी ही पडती चली गयी। इसका एक कारण तो यह था कि वह बहुत बीमार थी और दूसरा कारण यह था कि शीला के मा-बाप उसके कल्याण और सुख की बडी ही फिक्र रखते थे। लेकिन यहां सबसे दिलचस्प बात यह हुई कि शीला बरावर दुखी रहने लगी और उसका मिजाज अधिकाधिक बिगडने लगा। उसे अपने पुराने खिलौने से खेलने मे मजा न आता किसी खेल में भी उसका मन न लगता वह बराबर एक के बाद

दूसरा खिलौना चाहती। वह यह भी मांग करती कि बडों में से कोई-न-कोई उसके पास बराबर बना रहे। उसका ऐसा मिजाज हो जाने का आंशिक कारण तो उसकी बीमारी थी लेकिन यही एक कारण नहीं था। दूसरे कारण यह थे कि उसके माता-पिता ने बालिका के मार्ग की सारी कठिनाइयां हटा दी थी और उसकी हर अप्रिय चीज को खेल में बदल दिया था और वह कठिनाइयो को सोच न सके इसलिये उसे खिलौने दे-देकर बराबर बहलाया जाता रहा था। उसके मा-बाप ने शीला की परेशानी इस बात से और भी बढा दी थी कि घर के सब बडे लोग उसकी सेवा मे है और वह जो चाहे अपनी आज्ञानुसार उनसे करा सकती है।

लेकिन जब मां-बाप ने देखा कि शीला किसी तरह काबू में ही नही आती है तो उन्होने उसके साथ पहले की भांति ही व्यवहार करना शुरू कर दिया। उन्होने क्रमश उसे अपनी कठिनाइयां अपने आप सुलझाने के लिये छोड़ दिया, नये खिलौने देने भी कम कर दिये और यह दिखलाना शुरू कर दिया कि वे आशा करते है कि शीला अपने नित्य कर्म अपने आप बिना किसी हठ के करेगी और उन्होंने नये-नये वायदे करने छोड दिये।

इसकी प्रतिक्रिया बड़ी अच्छी हुई। शीला का रोना छूट गया। मिजाज को बिगाडना भी वह भूल गयी। उसने क्रमशः चंचलता छोड़ दी। अपने आपको सयमित करने और वातावरण के अनुकूल बना लेने की आवश्यकता भी समझ ली। इससे वह कालान्तर में अधिक प्रसन्न भी रहने लगी। शान्त रहने की भावना ने शीला के स्वस्थ होने में भी मदद की। उसकी जीवनीशक्ति भी बढ़ी और सामान्य जीवन बिताने की इच्छा भी उसमें उत्पन्न हो गयी।

(उ) ट्राम स्टॉप पर बड़ों के पीछे जाना

सुमन की आयु 6 वर्ष की थी। उसकी मीरा नाम की 9 वर्ष की एक बहन भी थी। सुमन वह सब काम करने के लिये लालायित रहती थी जो मीरा को करने दिया जाता था। लेकिन कभी-कभी आयु के अन्तर के कारण सुमन को वह काम नही करने दिया जाता था जो मीरा करती थी। एक बार बच्चो की चाची आयीं और उनके मनोरंजन की तैयारिया की गयीं। यह तय हुआ कि मां और चाची एक दिन सामान खरीदने बाजार जायें और यह भी कहा गया कि यदि मीरा चाहे तो वह भी उनके साथ चले। मीरा बडी खुशी से उनके साथ बाजार जाने को तैयार हो गयी। मीरा से कह दिया गया कि यदि उसे बाजार जाना हो तो वह बाहर जाने के सम्बन्ध मे सुमन को कुछ भी नहीं बतलाये।

जब वे लोग तैयार हो गये तो सबके-सब चुपचाप सामने के दरवाजे से सुमन से बिना कुछ कहे-सुने ट्राम स्टॉप की तरफ चल दिये सुमन उस समय बाग में खेल



रही थी। मा, चाची और मीरा के जाते ही सुमन घर मे गयी, नौकरानी से उसे पता चला कि उसकी अनुपस्थिति मे क्या हो गया। वह तुरन्त ही बाग के फाटक से निकलकर ट्राम स्टॉप की तरफ भागी। वह उस सडक से नहीं गयी जिससे वे लोग गये थे बल्कि सुमन ने समानान्तर जाने वाली सडक पकड ली जिससे उसे ट्राम स्टॉप पहुचने से पहले कोई भी न देख सके।

वह रास्ते भर दौडती गयी। सब लोगो के साथ ही वह भी ट्राम स्टॉप पर पहुची। वह अपने खेलने के कपडे ही पहने थी। उसके पास न चुन्नी थी और न दुपट्टा। उसे वहा देखकर मा उस पर बडी अप्रसन्न हुई और उससे मा ने कहा कि वह तुरन्त घर वापस लौट जाये। सुमन ने घर लौटने से इन्कार कर दिया। सुमन को पहले तो समझाया गया। फिर डराया और धमकाया भी गया। आग्रह भी किया गया लेकिन वह नहीं मानी। वह जोर-जोर से रो रही थी और एक तरफ तो यह विनय कर रही थी कि उसे भी साथ ले चला जाये और दूसरी तरफ यह भी कहती थी कि वह उनके साथ अवश्य जायेगी चाहे वह उसे ले जाये या न ले जायें। यह दृश्य देख बहुत-से लोगो का ध्यान उस तरफ आकृष्ट हुआ। मा को लगा कि यह सुमन को सन्तोषजनक ढग से सभाल नही सकती है।

आखिरकार मा को फैसला करना पडा कि सब लोग घर वापस लौटे। जब सब लोग घर वापस लौट आये तो सुमन को उसकी मा ने खूब पीटा। लेकिन इसके बाद भी चूँकि सुमन जिद करती रही कि वह बाजार अवश्य जायेगी। इसलिये उसे कपडे पहनाने के पूर्व खूब नहलाया-धुलाया गया और साथ ले जाया गया। लेकिन इसमे सुबह का काफी समय नष्ट हो गया और बाजार जाने का मजा प्राय सबके लिये किरकिरा हो गया।

यदि मां ने जाने के पहले ही सुमन को अपनी योजना बतला दी होती और सुमन के मनोरजन के लिये घर पर कुछ विशेष व्यवस्था कर दी होती तो बहुत सभव था कि सुमन मान जाती क्योंकि वह स्वभावत जिद्दी नही थी। यदि उससे कह दिया जाता कि उसे अगले किसी दिन ले चला जायेगा तो भी वह बात मान लेती। लेकिन जिन परिस्थितियों मे उसे पता चला उनको देखते हुए कोई आश्चर्य नही था कि वह अपने आपको बहुत आहत अनुभव करती और हठ करती। उस पर इस घटना का जो बुरा प्रभाव पड़ा था उसे दूर करने के लिये कई सुखदायी अनुभवो की आवश्यकता पडी होगी। काफी समय तक वह अपनी मा पर अविश्वास करती रही होगी।

इस दृष्टान्त मे सबसे दिलचस्प बात यह है कि मारपीट, आग्रह, डराने-धमकाने आदि का कोई परिणाम नहीं हुआ और अन्त मे जीत बालिका की ही हुई क्योकि वह बाजार गयी इस प्रकार की कठिनाइयों के सबध में हमेशा रहना चाहिए क्योंकि इनके परिणाम हर दृष्टि से होते हैं

(ऊ) दादी की देखभाल में 5 वर्ष के जुड़वां बच्चे

राम और श्याम दोनों जुडवा पैदा हुए थे। इनकी आयु 5 वर्ष की थी। इस बीच इनकी वैज्ञानिक रूप से बराबर चिकित्सा होती रही। उनके माता-पिता ने उचित भोजन, विश्राम, खेल आदि की ऐसी व्यवस्था की थी जिससे दोनों बच्चों के स्वस्थ विकास के लिये वातावरण मिलता रहे। उनको यह भी ज्ञात था कि बच्चो को खुली हवा मिलनी चाहिए। उन्होने बच्चो को इस बात की सुविधा दी थी कि वे एकाग्रतापूर्वक खेल सकें। बच्चों के खेल मे अनावश्यक रूप से हस्तक्षेप भी नहीं करते थे। हां, वह कौन-सा खेल कितने समय खेले—इसकी योजना बनाने मे अवश्य सहायता कर देते थे। दोनों बच्चे काफी प्रसन्न रहते थे और घण्टों बिना बडों की देखभाल की जरूरत महसूस किये खेलते रहते थे।

राम और श्याम दोनो को ही अपने माता-पिता के अलावा अन्य किसी की देखभाल मे रहने की पहले कभी न जरूरत पडी थी और न वैसा कोई अवसर ही प्राप्त हुआ था। अकस्मात् बच्चो की मा बीमार पड़ गयी और ऑपरेशन हुआ। ऐसी अवस्था मे माता और पिता दोनों को ही राम तथा श्याम की चिन्ता होना स्वाभाविक था। दोनो ने यह तय किया कि बच्चो की दादी को देखभाल के लिये बुला लिया जाये। उन्हे आशा थी कि मा के अच्छी होने तक बच्चों को उनकी दादी संभाल लेगी।

दादी को बच्चों से बड़ा प्रेम था। उन्हें बच्चों को संभालने का कुछ स्वाभाविक अभ्यास था। फिर भी उन्हें बच्चो की देखभाल करने के आधुनिक तरीकों का ज्ञान नही था। माता-पिता को भय था कि दादी के आने से शायद बच्चो के दैनिक कार्य में कुछ बाधा पड़े। लेकिन दूसरा कोई रास्ता भी न था। फलत· दादी ने आकर बच्चों की देखभाल का काम संभाल लिया।

कोई भूल न हो इसलिए बच्चो सम्बन्धी हर एक बात मां ने अस्पताल जाने के पूर्व दादी को बतला दी। पिता भी यह देखते रहते थे कि निर्दिष्ट व्यवस्था में कोई अन्तर न पड़ने पाये। यदि ऐसा होता था तो संकेत कर देते थे। मा अस्पताल से प्रतिदिन यह खबर भेजती रहती थी कि किस बच्चे के लिए दिन मे क्या किया जाना चाहिए। नतीजा यह हुआ कि छोटी-छोटी बातों को भी बहुत अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। और अपनी गलतिया निकाले जाने के कारण दादी का आत्मविश्वास कम हो गया और हीनता की भावना आ गयी।

राम और श्याम को जल्दी ही यह पता चल गया कि उनके पिता उनके लिए होने वाले हर काम पर बहुत अधिक ध्यान देते हैं। इसलिए यदि कोई भी बात पहले की तरह न होती तो वे तुरन्त उसकी शिकायत अपने पिता से करते जब इन

शिकायतों पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया जाने लगा और दादी से कहा जाने लगा कि वह सब काम पहले की ही तरह करें तो दोनो बच्चे और भी शेर हो गये। वे नित नयी सुविधाएं मागने लगे। यदि वे उन्हे न मिलतीं तो वे अपने पिता से शिकायत करते और पिता बच्चों की प्रसन्नता का ध्यान रखते हुए कह देते कि बच्चे जैसा कहे वैसा ही दिया जाये। उन्हें लगता कि ऐसा करने से बच्चे पहले की तरह ही प्रसन्न रह सकेंगे।

नतीजा यह हुआ कि दादी को राम और श्याम जैसा चाहते वैसा नचाते। वे जो कुछ भी कह देते पिता उसको सच मान लेते और दादी से पूछते भी नहीं कि बात क्या है ? ऐसी अस्वाभाविक अवस्था मे दादी का बच्चों के लिए जो स्वाभाविक प्रेम था और उनमें बच्चों की साज-सभाल की जो नैसर्गिक योग्यता थी उसका वे पूरी तरह उपयोग न कर पातीं।

दादी की सारी कठिनाइयों के बावजूद बच्चे दादी को बहुत अधिक चाहने लगे। पिता को बच्चों के प्रति दादी और दादी के प्रति बच्चों का स्नेह देखकर कुछ कुढन-सी होने लगी। मां जैसे ही अस्पताल से वापस लौटी वह बच्चो सम्बन्धी हर बात का फैसला स्वय करने की उत्सुकता दिखलाने लगी और चाहने लगी कि बच्चो के लिए जो कुछ भी हो उससे पूछकर हो। मा ने आशा की कि ऐसा करने से वह बच्चो को अधिक सुखी रख सकेगी। लेकिन मा का यह प्रयत्न व्यर्थ गया क्योकि मा के निर्देशों के अनुसार भी काम तो दादी ही करती थीं और मा-बाप का बच्चो की दादी पर जो अविश्वास था उससे वे बच्चों को संभालने के अपने काम अपने आपको अपाहिज-सा अनुभव करने लगी थी। फल यह हुआ कि बच्चे नासमझी करने लगे और समय-समय पर ऐसे हठ करने लगे जो पूरे नहीं किये जा सकते थे। वे न केवल अपनी दादी के लिए ही समस्या बन गये बल्कि अब माता और पिता दोनो के लिए समस्या हो गये।

मा फिर बीमार पड गई। दोबारा बीमार पड़ने का मुख्य कारण बच्चो की फिक्र ही था। डॉक्टरो ने आज्ञा दे दी कि बच्चों को बिल्कुल दादी के ही सुपुर्द कर दिया जाये। इस बार पिता को मा की बहुत अधिक देखभाल करनी पडी और अक्सर रात मे बहुत देर तक काम करना पडता। इसलिए इस बार उन्होंने भी पहले की तरह राम और श्याम की तरफ कोई ध्यान नही दिया। इस प्रकार दादी पर से जब सारा दबाव हट गया तो उनमें बच्चों की देखभाल का स्वाभाविक विश्वास पुन जाग उठा और वे बच्चो की साज-सभाल बडी बुद्धिमानी से करने लगी। राम और श्याम को भी विवश होकर दादी की ही बाते माननी पडीं क्योंकि उनकी शिकायते सुनने वाला कोई रह नहीं गया था। कुछ दिनों के बाद बच्चे समझदार हो गये। उनकी जिद की आदत छूट गयी और एक बार वे पुन सबकी प्रसन्नता के स्रोत बन गये

(ए) सीमा का आगुन्तकों के साथ व्यवहार

सीमा की आयु 5 वर्ष की थी। वह गांव मे अत्यन्त शान्त जीवन बिताने की आदी थी। वह आगन्तुको के सामने बहुत लजाती थी। उसके माता-पिता ने उसका यह सकोच दूर करने की बडी चेष्टा की लेकिन उन्हें अधिक सफलता नहीं मिली। जब उसकी तरफ बहुत अधिक ध्यान जाता तो वह उत्तेजित हो उठती और उसको सभालना मुश्किल हो जाता। कभी-कभी वह अपरिचितो द्वारा अपने खेल मे बाधा डाले जाने से ऊब जाती और उनसे अशिष्ट व्यवहार भी कर बैठती।

माता-पिता को न तो सीमा पर ही पर्याप्त विश्वास था कि वह समझदारी का व्यवहार करेगी और न नवागन्तुको पर ही यह विश्वास था कि वे सीमा की बालसुलभ क्रियाओ को समझ लेंगे। नतीजा यह होता कि बच्चो पर और आगन्तुको पर अस्वाभाविक दबाव पडता। आगन्तुक यह अनुभव करते कि उन्हें शीघ्र ही बच्ची से मित्रतापूर्ण सबध स्थापित कर लेने चाहिए। वे इस बात की प्रतीक्षा नही करते कि परिचय धीरे-धीरे अपने आप प्रगाढ मैत्री में बदल जायेगा।

एक दिन सीमा की चाची कुछ दिनों के लिए उनके घर पर ठहरने आयीं। सीमा बडी खुश थी और उसके माता-पिता की भी यह इच्छा थी कि वह अपनी चाची से खूब निकटता स्थापित कर ले।

पहले दिन तो सब लोग बहुत खुश रहे। लेकिन दूसरे दिन चाची के आगमन का उत्साह ठडा पड़ गया। सीमा अपनी चाची की उन तुलनाओं से ऊब गयी जो वे उसके तथा अपनी एक अन्य भतीजी के बीच करती थी। वे सीमा से अपनी उस भतीजी की ऊचाई, योग्यता आदि सबकी तुलना करतीं और साथ ही यह भी बतलातीं कि दोनो में से किससे कौन कितना अच्छा है। सीमा को अपनी नयी चाची के इन सब बातो से बड़ी ऊब पैदा हो गयी।

आखिरकार सीमा चित्र बनाने लगी। थोडी देर बाद इस तरफ उसकी चाची का ध्यान भी गया। वे उसके चित्र देखने के बाद बोलीं, 'सीमा, दरवाजे को नीला रगना और पत्तियो को भूरे के बजाये हरा रगना।' इस पर सीमा ने गर्म होकर उत्तर दिया, 'चित्र तो मै बना रही हूं, आप नही बना रहीं। आप मुझे यह बतलाकर कि मै क्या करू मेरा सारा मजा क्यो किरकिरा किये दे रही है ?'

सीमा से कहा गया कि वह अपनी चाची से नम्र शब्दो मे कुछ बातचीत करे जिससे उसने जो सख्त बात कही है उसका असर कम हो जाये लेकिन सीमा ने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया। वह बराबर अपनी बात पर ही दृढ़ रही और कहती रही 'मैंने ठीक ही तो कहा वह मेरा खेल क्यों बिगाड रही थी ?

माता पिता ने यह अनुभव नहीं किया कि जो दबाव उन्होंने डाला था उसका

और क्या फल होता। उन्हें सीमा के व्यवहार से बडा धक्का लगा लेकिन उन्हे समझना चाहिए था कि सीमा को उन्होने और चाची ने बहुत अधिक दबाया था। बच्चा अपने आप मैत्री धीरे-धीरे ही करता है और होना भी ऐसा ही चाहिए। बच्चे को मैत्री अपने आप करने देना चाहिए और इसके लिए काफी समय दिया जाना चाहिए। नये और अपरिचित लोगो को बच्चो के ऊपर सवार हो जाने की कोशिश कभी नही करनी चाहिए। उन्हें बच्चे की मैत्री के आमन्त्रण की प्रतीक्षा करनी चाहिए। ऐसा करने से ही वे बच्चे के स्नेहभाजन हो सकते है।

इसके विपरीत माता-पिता को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि वे नवागन्तुको के सामने बच्चे की लजाने या शरमाने की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहित न करे, विशेष रूप से कमजोर बच्चे को इस बात से खासतौर से बचाना चाहिए। अन्यथा इसमें खतरा यह रहता है कि बच्चा वही बात करने लगता हे जिससे उस बचाने की चेष्टा की जाती है।

(ऐ) 2 वर्ष के बच्चे का गाना

रवि की आयु 2 वर्ष की थी। उसे यह बिल्कुल अच्छा न लगता था कि जिस समय वह बैठा हो उस समय उसके बारे मे कोई बातचीत की जाये। रवि के माता-पिता ने अन्य बडे बच्चो के सम्बन्ध मे तो यह आवश्यकता समझ ली थी ओर वे ऐसा करने से बचते भी थे लेकिन उन्होने रवि को अभी इस योग्य नही समझा था कि उसके सामने भी वे उसके बारे मे कोई बातचीत न करे। वे उसके क्रिया-कलापों के संबंध में उसके सामने ही बातें करते जाते थे। आखिरकार उन्होने एक बार यह देख ही लिया कि वह ऐसी बातो के समय उदास हो जाता है और अपना चेहरा छिपा लेता है।

इसके बाद से वे सावधान रहने लगे लेकिन अपनी आदत छोडने मे उन लोगो को जरा कठिनाई हो रही थी। एक दिन रवि की मा ने बिना सोचे कि वह क्या कह रही है एक नये आदमी के सामने रवि की एक दिलचस्प आदत कह डाली। रवि इस पर जोर-जोर से इस तरह गाने लगा जैसे जो कुछ कहा गया है उसका असर धो बहाना चाहता है या अपनी मा का ध्यान उस बात की तरफ से हटा देना चाहता है जो वह कह रही थी।

अक्सर यह होता है कि बडे बच्चो के सामने उन्ही के बारे मे बातें करते है, लेकिन अभी हाल ही मे बच्चो के सम्बन्ध में जो प्रयोग और पर्यवेक्षण किये गये है उनसे पता चलता है कि ऐसा करना कितना हानिकारक है। ऐसा करने से कुछ बच्चे तो आत्म (Self conscious) हो जाते हैं और उन्हें कुछ -सी होने लगती है जब कि कुछ बच्चे प्रसन्न और उत्तेजित-से हो जाते हैं और अपना चेहरा

छिपाने की कोशिश करने लगते है।

व्यवहार सम्बन्धी बहुत-सी समस्याए किसी-न-किसी प्रतिक्रिया के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न हो जाती है और बुद्धिमान अभिभावक तथा अध्यापक यह जानते हैं कि बच्चे के साथ कभी उसके बारे मे बातचीत नही करनी चाहिए।

बच्चे के बारे मे उसके सम्बन्ध मे बाते करने की आदत अक्सर तभी पैदा हो जाती है जब वह नितान्त नासमझ शिशु होता है। उस समय यह समझा जाता है कि जो कुछ कहा जा रहा है उसे वह नही समझेगा। लेकिन शिशु भी ऐसे लक्षण प्रकट करते देखे गये हैं जिनसे यह समझा जाने लगा है कि उनके बारे में जो कुछ कहा जाता है वे उससे यह समझ लेते है कि उनके बारे मे बातचीत की जा रही है। ऐसा करने से बच्चे बहुधा बेचैन और आत्म-जागरूक हो जाते है। ऐसा होना उनके बोलना सीख सकने के बहुत पहले से ही शुरू हो जाता है।

प्रश्नावली

1 बच्चों को ऐसे सुझाव देने से किस प्रकार वचा जा सकता है जिनसे उनको कोई मदद नही मिलती ? ('अ', 'आ', 'ऊ' और 'ए')

2 माता-पिता बच्चे के विकास में किस प्रकार मदद दे सकते है ? ('आ')

3 किसी भ्रम के पैदा हो जाने पर शारीरिक दण्ड देना क्यों लाभदायी नही होता ? ('इ')

4 यदि बच्चे को बीमारी की हालत मे खुश रखना है तो कौन-कौन-सी बातो पर विशेष रूप से सावधानी रखनी चाहिए ? ('ई')

5 बच्चे को उससे सम्बन्धित योजनाओं को पहले बता देना क्यो अच्छा है, बजाय इसके कि वह स्वयं अकस्मात् उनको जान ले ? ('उ')

6 जब माता-पिता के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति को बच्चे को संभालना पडे तो माता-पिता देखभाल करने वाले की किस प्रकार सर्वोत्तम रीति से मदद कर सकते है ? ('ऊ')

7. जब आगन्तुक आये हों तो कौन-सी विशेष समस्याये उठ खड़ी होती है ? उनको किस प्रकार हल किया जा सकता है ? ('ए')

अध्याय-3

पारिवारिक संबंध

प्रत्येक बच्चे के जीवन में एक सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होती है कि वह अन्य मनुष्यो के साथ कैसा व्यवहार करता है। हो सकता है—उसकी पूरी देखभाल की जाती हो, सुन्दर खिलौने दिये जाते हो, साफ हवा मे रखा जाता हो, आवश्यकतानुकूल भोजन दिया जाता हो, विश्राम भी कराया जाता हो और वस्तुत' उसे वे सारी चीजे दी जाती हो जो उसके स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक हो और फिर भी यह सभव है कि घर या स्कूल मे बडो और बच्चों के साथ उसके सम्बन्ध कुछ इस प्रकार के हो जिनकी वजह से वह खुश न रह पाता हो और उसकी इस नाखुशी से बच्चे के विकास मे बाधा पड़ रही हो, व्यवहार सम्बन्धी समस्याये उठ खड़ी हो रही हों और उसके व्यक्तित्व को आच्छादित कर रही हों।

बहुधा कठिनाई क्या है—यह समझने और ढूढ़ने मे काफी परेशानी हो सकती है। यह परेशानी तब भी ज्यो-की-त्यों बनी रह सकती है जब आप यह समझ ले कि बच्चे के वातावरण में कुछ ऐसे व्यक्ति आ गये है जिनकी वजह से वह खुश नही है। वह खुश क्यों नहीं है—यह बात बच्चा स्वयं भी नही बतला सकता क्योंकि इसका कारण बहुधा अतीत में छिपा रहता है और उसे आसानी से नही खोजा जा सकता है।

व्यक्तित्वों को वातावरण के अनुकूल बनाने के सम्बन्ध मे प्रत्येक घर और स्कूल की अपनी-अपनी समस्याए अलग-अलग होती हैं। बच्चो के जीवन मे कठिनाइयां उत्पन्न होने के कुछ मुख्य कारणों की तरफ इंगित करने से कुछ सहायता मिल सकती है क्योंकि यदि बडे आदमी को यह ज्ञात हो जायेगा किस जगह से खतरा पैदा होता है तो वह वही से सावधान हो जायेगा और कठिनाई को बढने से रोक सकता है।

जिन बातो से गभीर समस्याएं उत्पन्न होती हैं उनमे से एक बच्चों की बौद्धिक असमानता है। बौद्धिक दृष्टि से पिछडा हुआ बच्चा हीनता, अक्षमता, हतोत्साह आदि की भावनाओ से ग्रस्त होता है और उसके अपेक्षाकृत अधिक चतुर भाई-बहने या सहपाठी अपने साथ रखना पसन्द नहीं करते इसके विपरीत तेज बच्चे के लिये

यह खतरा रहता है कि कहीं वह दूसरो की मन्दता से अधीर न हो जाये और अन्य साथियों के साथ अपनी श्रेष्ठता को प्रकट करने वाला व्यवहार न करने लगे। बच्चो के इन दोनो ही पक्षो को अनुकूल ढग से संभालने का सबसे अच्छा रास्ता यह है कि तेज और धीमे बच्चो के मध्य प्रतिद्वंद्विता न करायी जाये और न उनकी परस्पर तुलना ही की जाये। ऐसे स्थलो पर यही बुद्धिमत्तापूर्ण होता है कि प्रत्येक बच्चे को उसकी अपनी गति अग्रसर होने दिया जाये और प्रयत्न यह किया जाये कि वह अपनी पहले की सफलताओ से अधिक सफलताएं प्राप्त करे।

मन्दबुद्धि बालक को उस समय अपने काम में अधिक सहायता मिलती है जब अभिभावक या अध्यापक उसके लिये कोई ऐसा विषय खोज निकालते हैं जिससे वह अधिक आसानी से सफलता प्राप्त कर लेता है या औसत दर्जे की योग्यता प्राप्त कर लेता है। इससे बच्चे को बड़ा उत्साह होता है। कोई बच्चा ऐसा मन्दबुद्धि होता हे कि उसके लिये कोई भी अनुकूल विषय खोजना बडा ही कठिन होता है लेकिन ऐसे बच्चे बहुधा बहुत अधिक परिश्रमी होते है और उन्हें कोई भी ऐसा काम करने मे विशेष आनन्द आता है जो एक-सा हो—जिसमे एक ही बात की पुनरावृत्ति करनी पडती हो। उन्हे सामान्यतः दस्तकारी का काम करने मे बडा आनंद आता है और वे कालान्तर मे ऐसा काम बहुत अच्छा कर सकते है।

कुशाग्रबुद्धि बालक को जितनी सहानुभूति सामान्यत प्राप्त होती है वह उससे अधिक सहानुभूति प्राप्त करने का अधिकारी होता है। उसके लिए मन्द गति से सोचने वाले बालक की प्रतीक्षा करना साधारण रूप से कठिन होता है। यह बार-बार ऐसे निर्देशों या व्याख्याओ की पुनरावृत्तियो से झुझला उठता है या ऊब उठता है जिन्हें वह आसानी से एक ही बार में समझ लेता है और उनके अनुसार कार्य करने के लिए उतावला हो उठता है। उसे कक्षा मे मन्दबुद्धि बालक के उत्तर की प्रतीक्षा करना भी बुरा लगता है और वह प्रतीक्षा करने के बजाय बहुधा अवाछनीय कार्य करने लगता है। ऐसे बालक को उन कार्यो को करने के लिए उत्साहित किया जाना चाहिए जिन्हें वह आसानी से नही कर पाता है जिससे उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो सके तथा उसमें सहानुभूति और धैर्य की भावना उत्पन्न हो सके। आधुनिक क्रिया पद्धतियां, जिनका स्कूलो मे प्रयोग किया जाता है, निश्चित रूप से मन्द और कुशाग्र बुद्धि दोनों प्रकार के बालकों के लिए उपयोगी हैं। (लेकिन यह बात इग्लैड के स्कूलों को ध्यान मे रखते हुए लिखी गयी है।—अनु.)

कभी-कभी ऐसा होता है कि एक बालक चतुर होते हुए भी परिवार में अपने आपको हीन और हताश अनुभव करता है। ऐसी अवस्था मे साधारणत. बात यह होती है कि परिवार के अन्य सदस्यों से उसका स्वभाव बिल्कुल भिन्न होता है। उसकी रुचि और अरुचिया बिल्कुल अलग-अलग होती हैं हो सकता है कि वह गणित में

बहुत तेज हो जबकि परिवार के अन्य सदस्य संगीत मे अच्छा दखल रखते हो। शायद वह एक अच्छा कलाकार बन सकता हो जबकि उसके माता-पिता उसे घर की परम्परा के अनुसार इजीनियर बनाना चाहते हों। जब भी कोई बच्चा अपने बहन-भाइयो से इस रूप में भिन्न हो या वह किसी कार्य मे रुचि प्रकट करे जिसमे उसके माता या पिता दोनो मे किसी को भी रुचि न हो और वे चाहते हो कि उनका बच्चा उस तरह का काम करे, तो यह बहुत जरूरी है कि बच्चे मे मानसिक हीनता की भावना न जाग पाये इसका ध्यान रखा जाये। बच्चे की स्वाभाविक वृत्तियो को विकसित न होने देना कभी भी खतरे से खाली नही होता। उसके स्वस्थ विकास के लिए यह बहुत ही जरूरी है कि बच्चे को उसी क्षेत्र में कार्य करने के लिए उत्साहित किया जाये जिसमें वह अधिक सफलता प्राप्त कर सकता हो।

माता-पिता की बच्चे के भविष्य के बारे में एक कल्पना होती है। जब बच्चा कल्पना के अनुकूल सिद्ध नहीं होता तो उनका निराश होना स्वाभाविक है; परन्तु उन्हें अपने को बच्चे के स्वभाव के अनुकूल बना ही लेना चाहिए। जब तक वे ऐसा नहीं करेंगे तब तक बच्चा परिवार मे बेचैन रहेगा और अपने आपको कमजोर अनुभव करेगा। माता-पिता को सबसे पहले तो ऐसी कल्पना ही नही करनी चाहिए कि उनका बच्चा वही काम करेगा जिसमें उसके पिता या चाचा या किसी अन्य सम्बन्धी को सफलता मिल चुकी है। उन्हे चाहिए कि वे बच्चे की स्वाभाविक इच्छा के प्रकट होने की प्रतीक्षा करे और देखे कि वह किस कार्य या विषय में अधिक रुचि दिखलाता है।

बौद्धिक प्रतिभा के अलावा भी ऐसी कई बातें होती है जिनकी वजह से बच्चे को अपने आपको वातावरण के अनुकूल बनाने मे दिक्कत होती है। बच्चा परिवार के जिस वातावरण में रहता है वह वातावरण भी किन्हीं अवस्थाओं मे उसके लिये कुछ कठिनाइयां पैदा कर सकता है और यदि बचाने की चेष्टा न की जाये तो कभी-कभी बच्चा अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण व्यवहार भी कर सकता है। उदाहरण के लिये हर एक बच्चे के लिये किसी समूह का सदस्य बन जाना और उसके कामो में भाग लेना सहज नहीं होता। इसके विपरीत कोई परिवार इतना बडा होता है कि उसमे हर बच्चे के लिये एकान्त की व्यवस्था नहीं की जा सकती। कभी-कभी यह भी कहा जाता है कि बडे बच्चे छोटे भाई या छोटी बहन की बात मान लें। या बड़े बच्चो से आशा की जाती है कि वह छोटे बच्चों की देखभाल मे अपना समय बिताये। लेकिन यह व्यवस्था बहुधा छोटे और बडे दोनों ही प्रकार के बच्चो के लिये असन्तोषजनक सिद्ध होती है। बड़े बच्चों को छोटे भाई-बहनों को देखने के उत्तरदायित्व का भार क्लान्त कर देने वाला होता है जब कि छोटे बच्चों को बड़े भाई या बडी बहन का स्वामित्व का भाव या हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति से ऊब हो जाती है जिसका परिणाम

यह होता है कि दोनो ही बच्चे हाथ से निकल जाते है।

इकलौते बच्चे के बिगड जाने का हमेशा खतरा रहता है क्योकि उसे बडो के आकर्षण के केन्द्र से बचाना बडा कठिन होता है। यदि उस वच्चे को उसकी आयु के वच्चो मे मिलने दिया जाये तो वह अपना स्थान आसानी से खोज लेता है। यदि उसे अकेले खेलने दिया जाये तो इससे भी उसे सहायता मिलती है। इकलौते बच्चे के बारे मे यह बहुत ही जरूरी है कि उसकी हर बात को बहुत अधिक महत्त्व न दिया जाये। उसके हर काम को सामान्य तथ्यात्मक रीति से किया जाना चाहिए अन्यथा इससे बच्चे का स्वभाव बिगड जाने की आशका रहती है।

वच्चे को बाहर के बच्चों के साथ मिलने-जुलने और खेलने के लिये चाहे जितना प्रोत्साहित किया जाये फिर भी उसे बाहर की दुनिया मे अपने आपको समन्वयात्मक रीति से अनुकूल बनाने मे थोडी कठिनाई होती है क्योकि पारिवारिक क्षेत्र मे तो वह अकेला ही होता है और उसके साथ ऐसा अन्य कोई बच्चा नही होता जो माता-पिता का स्नेह बटा लेता हो या जो रोजमर्रा की साधारण घटनाओ मे भाग लेता हो। यह ऐसा अभाव है जिसे दूर नही किया जा सकता। इसलिये इकलौते बच्चे को सामान्य से अधिक सहायता की आवश्यकता पडती है जिससे वह अपने जीवन का भली-भाति सन्तुलित विकास कर सके और प्रसन्नतापूर्वक उन साथियो की ओर भी बढ सके जो उसके पारिवारिक क्षेत्र से वाहर के संसार में रहते हैं।

सबसे बडे वच्चे का जीवन वहुत-सी बातो मे इकलौते बच्चे से भी अधिक कठिन होता है क्योकि सबसे बड़े बच्चे को प्रथम या पहले दो वर्षो मे, या इससे भी कुछ आगे तक, निपट बच्चा ही समझा जाता है और फिर अकस्मात् उसे एक दिन पता चलता है कि उसका स्थान किसी दूसरे ने छीन लिया है और न केवल स्थान ही छीन लिया है अपितु यह भी आशा की जाती है कि वह भी उसे चाहेगा। पहले बच्चे के लिए यह बड़ा कठिन होता है। इसलिये पहले बच्चे को उससे छोटे बच्चे के आने के पूर्व ही तैयार करना चाहिए। बडे बच्चे को माता-पिता द्वारा यह समझने मे मदद मिलनी चाहिए कि वह अब भी उनके लिये उतना ही अमूल्य है, उतना ही प्यारा है जितना छोटे वच्चे के आने के पूर्व था। बडे बच्चे को पारिवारिक उत्तरदायित्वो मे भी थोडा-सा भाग लेने के लिये उत्साहित करना चाहिए जिससे वह यह समझे कि छोटे बच्चे के आने के बाद उसे परिवार मे एक विशेष स्थान की पूर्ति करनी है।

सबसे छोटे बच्चे की स्थिति भी कभी-कभी विशेष कठिनाइया पैदा कर देती है क्योंकि सबसे छोटा बच्चा हमेशा बच्चा ही समझा जाता है और उससे बचपने के व्यवहार की आशा भी की जाती है। इसलिये उसके विकास के मार्ग मे बाधाए भी पडती है। अभिभावको को छोटे बच्चे के लिये ऐसे मौके प्रयत्न करके तलाश करने चाहिए जिनमें उसे जिम्मेदारी सौंपी जा सके माता-पिता को सबसे छोटे बच्चे को

अपने प्रति निर्भरता को घटाने की चेष्टा करनी चाहिए और यह देखना चाहिए कि बड़े होने के साथ ही उसकी बचपन की आदतें छूटती जा रही है या नही। परिवार के अन्य सभी बच्चो का विकास स्वतः सामान्य रूप से होता चलेगा। सबसे छोटे बच्चे के सबध में ही यह कठिनाई उत्पन्न हो सकती है—इसलिये उसे यह विशेष सहायता दी जानी जरूरी है। यह भी उसके विकास के लिये आवश्यक है कि उससे बड़े बच्चों से हमेशा सबसे छोटे बच्चे की बात मान लेने के लिये न कहा जाये। यह भी न कहा जाये कि वे अपने खिलौने उसे दे दे क्योकि वह सबसे छोटा है। यह जरूरी है कि सबसे छोटे बच्चे में लेने और देने—दोनो की ही भावना पैदा हो।

दो बच्चो के परिवार मे स्पष्टत: दोनो ही बच्चो पर बहुत अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। यहा सबसे बड़े और सबसे छोटे दोनो ही प्रकार के बच्चो की कठिनाइयो को सुलझाने की जरूरत है। दो बच्चों के परिवार में सबसे बड़े बच्चे को तो अपना स्थान छोटे बच्चे के लिए छोडना पडता है और इधर छोटा बच्चा सारे परिवार के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है और उसके बिगड जाने का खतरा बना रहता है। ऐसे परिवार मे बच्चो के बीच जलन, कुढन और झगडा भी चलता रह सकता है लेकिन ऐसा तभी होगा जब अभिभावक दोनो स्थितियो से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को भली-भाति समझते न होंगे।

बड़े परिवार में केवल सबसे बड़ा और छोटा बच्चा ही घर के क्षेत्र में अप्रसन्न नही रहेगा। कोई भी बच्चा किसी-न-किसी कारण से अप्रसन्न हो सकता है। किसी बडे परिवार में बीच का बच्चा ऐसा भी हो सकता है जो न तो बड़े बच्चो के साथ जम सके और उनकी जिम्मेदारिया सभालते हुए बडे बच्चों को मिलने वाली सुविधाओ का लाभ उठा सके और दूसरी ओर यह भी हो सकता है कि बिल्कुल छोटे बच्चों मे भी उसे कोई आनन्द न मिले। एकदम छोटे बच्चो के खेलों के लिये वह बहुत बडा हो। ऐसे बच्चे को असन्तोष होना स्वाभाविक है और उसे अपना असन्तोष दूर करने मे काफी कठिनाई का सामना करना पड सकता है क्योंकि वह सम्पूर्ण परिवार में अपने आपको सबसे भिन्न पाता है।

जब किसी बड़े परिवार में सब बच्चो के जोड़े-जोडे बन जाते है और कोई एक बच्चा जोड़ा बनने से छूट जाता है तो वह भी कठिनाई पैदा कर देता है। वह प्रायः सबसे अप्रसन्न रहता है और सबके विरुद्ध कुढ़ता भी रहता है क्योकि वह समझता है कि वह उपेक्षित है, परिवार में उसकी आवश्यकता नहीं है। जब भी कभी इस प्रकार की आशंका प्रतीत हो माता-पिता को तत्काल ऐसे बच्चे के लिये किसी बाहरी मित्र की व्यवस्था जल्दी-से-जल्दी कर देनी चाहिए। इसके साथ ही माता-पिता को अपने किसी भी व्यवहार से बच्चे को यह समझने का मौका नही देना चाहिए कि वे उसकी महसूस नहीं करते इसके विपरीत माता-पिता को जब भी

मौका हो यह दिखलाने का यत्न करना चाहिए कि वह उनको कितना प्यारा है, कितना बहुमूल्य है उनके लिये।

ऐसे परिवार मे भी बच्चों के साथ व्यवहार करने मे कुछ कठिनाइया पैदा हो जाती है जहां माता-पिता के अलावा परिवार में कुछ और भी वयस्क व्यक्ति रहते है। यहा बच्चे से कहा जाता है कि वह कई बडो की इच्छा के कार्य करे। ऐसी अवस्था मे बच्चा परेशान हो जाता है और प्रतिरोध करता है। बच्चे की ऐसी अवस्था को बचाया जा सकता है यदि वडे परस्पर सोच-विचारकर कार्य करे। फिर वे बच्चो से अपनी इच्छाओ के अनुसार कार्य करने के लिये नही कहेगे बल्कि वे ऐसे नियमो के अनुसार—लेने और देने तथा कार्य और परिणाम के नियमो के निर्देशो के अनुसार बच्चो से कार्य करने को कहेंगे जिनसे सभी जीवित वस्तुओं मे सामजस्य स्थापित होता है। बडों को बच्चो को आदेश देने के सबंध मे उस समय तो अवश्य ही परस्पर कोई-न-कोई समझौता कर लेना चाहिए जब उनके मिजाज अलग-अलग हो और दृष्टिकोणों मे भी भिन्नता हो।

अभिभावको मे यदि जरा-सा भी असामजस्य है तो बच्चे के सबधों को वह अमधुर बना देने का कारण हो सकती है क्योंकि बच्चे मे किसी एक अभिभावक का पक्ष लेने और दूसरे के प्रति असन्तुष्ट रहने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। यह असन्तोष आगे चलकर अन्य बडे के प्रति भी हो सकता है या यह भी हो सकता है कि इस असन्तोष के परिणामस्वरूप बच्चा आगे चलकर समस्त सत्ता का विरोध करने लगे।

यदि बच्चे के माता-पिता मे से किसी एक की मृत्यु हो जाये या इसी प्रकार बच्चे को अन्य कोई दुखद अनुभव हो तो बच्चे की तरफ विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है जिससे उसमे स्थिरता और सामजस्य की खोयी भावना पुन: उत्पन्न हो सके।

यह भी याद रखना चाहिए कि किसी परिवार मे बच्चे अत्यन्त स्वाभाविक ढग से विकसित होते चले जाते हैं और उस समय भी जब कि माता-पिता उनकी तरफ कोई भी विशेष ध्यान नही देते है। लेकिन माता-पिता या अध्यापक के विरुद्ध कटुता पैदा होने के कारण की जानकारी होना सदैव लाभदायी ही होगा। यही नही इस प्रकार के ज्ञान से यह भी सभव है कि उक्त प्रकार की कठिनाइयो के न पैदा होने देने मे भी सहायता मिले।

बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिये यह बहुत जरूरी है कि उसके सारे पारिवारिक सम्बन्ध भली-भाति समन्वित हो क्योंकि किसी भी सम्बन्ध की कटुता का असर विभिन्न और असम्बद्ध से प्रतीत होने वाले क्षेत्रो मे भी हो सकता है। सम्भव है कि पारिवारिक क्षेत्र में कुछ व्यक्तियो से अच्छे और मधुर सम्बन्ध न होने की वजह स्कूल

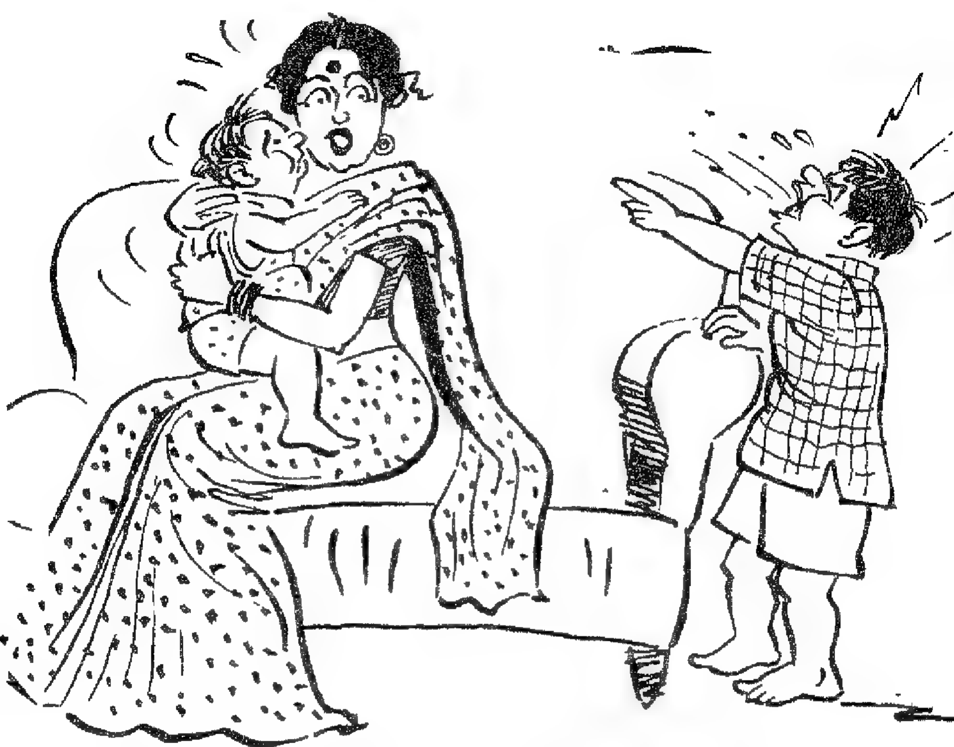
में बच्चे को किसी विशेष विषय मे अरुचि हो जाय यह भी हो सकता है कि वह उद्दण्डतापूर्ण व्यवहार करने लगे या सम्भव है कि अधिकारी का प्रतिरोध करे। उसका स्वभाव कटु हो सकता है, मानसिक हीनता, आलस, जलन, घृणा आदि की भावना पैदा हो सकती है। इसके अलावा यह चीज अन्य भी किसी अस्पष्टतः परिभाषित रूप से प्रकट हो सकती है।

कभी किसी मामले मे यह भी कहा जा सकता है कि बच्चे की कटुतापूर्ण प्रतिक्रिया किसी अमधुर पारिवारिक सम्बन्ध की वजह से नही बल्कि बच्चे के खराब स्वास्थ्य या उसकी अयोग्यता के कारण है, या यह भी सम्भव है कि उसे किसी विषय की शिक्षा अत्यन्त असहानुभूति पूर्ण ढग से दी जा रही हो अथवा उसे किसी जगह अनुचित ढंग से दबाया जा रहा हो आदि। कुछ भी हो, यह हमेशा बुद्धिमत्तापूर्ण होता हे कि बच्चे की समस्या का निदान करने के पहले उसके पारिवारिक सम्बन्धों का भली-भाति शोध कर लिया जाये खासतौर से उस समय जब कि विचाराधीन बच्चे की कठिनाई का अन्य कोई सन्तोषजनक स्पष्टीकरण सामने न हो। इस सम्बन्ध मे बच्चे के घर और स्कूल के निकट सहयोग होना अत्यन्त आवश्यक हे।

मै अपने अनुभूत कुछ ऐसे दृष्टान्त नीचे दे रही हू जिनसे बच्चे के जीवन मे पारिवारिक सम्बन्धो का महत्त्व समझने मे सहायता मिलेगी।

(अ) दो भाइयों की लड़ाई

राजू की आयु उस समय 4 वर्ष की थी जब नया बच्चा घर मे आया। इसके पहले माता-पिता के स्नेहवर्षण का वही केन्द्र था, अपनी दादी का वह एकमात्र लाडला पोता था और बहुत-सी चाचियो और चाचाओ का एकमात्र भतीजा था। जिस क्षण से नये बच्चे ने घर मे जन्म लिया सब लोगो का सारा ध्यान, समस्त प्रेम, राजू को ऐसा प्रतीत हुआ कि नये बच्चे पर केन्द्रित किया जाने लगा हे। वह अपने नन्हे-से भाई से घृणा करने लगा और अक्सर उसे मारने की कोशिश करता। ऐसा करने की वजह से राजू को 'शरारती', 'घृणा योग्य' और 'भयावह लड़का' आदि विशेषण दिये जाने लगे तथा सजा भी दी जाने लगी। राजू बच्चे को अधिकाधिक घृणा की दृष्टि से देखने लगा क्योकि धीरे-धीरे छोटे बच्चे ने उसके सारे खिलौने, उसका खटोला और अन्त मे सोने का कमरा तक छीन लिया। राजू से हमेशा छोटे भाई की इच्छा के अनुकूल आचरण करने के लिये कहा जाता। राजू को वह सब देना पडता जो उसका छोटा भाई मांगता। यदि छोटा भाई राजू को नोचता, काटता या मारता तो भी राजू से कहा जाता कि वह कोई बदला न ले। इसलिये यह स्वाभाविक था कि दोनो भाई ज्यों-ज्यो बडे होते गये त्यो-त्यो दोनो को एक-दूसरे का साथ अप्रिय प्रतीत होने लगा। दोनो बच्चे जहा तक होता एक-दूसरे से दूर ही रहते और दोनो



को एक-दूसरे से अरुचि है—यह देखते ही पता चल जाता था। जब वे दोनो घर से अलग हुए और दूर-दूर चले गये तो वर्षो बीत जाने पर भी दोनो मे से किसी ने एक-दूसरे को पत्र नही डाला। असामंजस्य की यह स्थिति आगे भी अनिश्चित काल तक चलती रहती यदि वे दोनो एक ही मोटर दुर्घटना में न पड गये होते। इस मोटर दुर्घटना में दोनों ही व्यक्तियों का जीवन चमत्कारिक रीति से बच गया। इस दैवी रक्षा ने दोनो भाइयों के बीच की तटस्थता की दीवाल को तोड़ डाला और दोनो का व्यवहार एक-दूसरे के प्रति मैत्रीपूर्ण हो गया।

(आ) पांच के परिवार में अकेला बच्चा

शकर पाच के परिवार मे तीसरा बच्चा था। उससे बडे दो भाई थे और उससे छोटी दो बहने थी। जब शंकर का जन्म हुआ उसके पहले से ही दोनों बड़े भाई एक-दूसरे के घनिष्ठ मित्र हो गये थे। उस समय दोनो बडे भाइयो की अवस्था क्रमश: सात और पांच वर्ष की थी। ये दोनो साथ ही स्कूल भी जाते थे। शिशु शंकर उनके खेलो मे कभी भाग नहीं लेता था क्योकि शकर के दोनों भाई उसका साथ बचाने की कोशिश करते थे।

जब शकर डेढ वर्ष का था तभी घर मे एक उसकी वहन ने जन्म लिया। माता-पिता दोनो लडकी के बहुत इच्छुक थे और उन्हें शकर के पैदा होने पर इस वात से निराशा भी हुई थी कि वह लडकी न होकर लडका क्यो हुआ ?

फलस्वरूप पुत्री के जन्म से परिवार-भर मे बहुत अधिक प्रसन्नता हुई। पुत्री के बाबा और दादी ने भी नवागत पोती का स्वागत किया। बहुत अधिक प्यार ने लडकी को एकदम बिगाड दिया। इधर शकर की उचित देखभाल नही हुई और उसे वह प्रेम भी नही मिला जो अन्यथा स्थिति से उसे मिलता।

शकर मे आयु के साथ ही अपने आप मे सीमित रहने की भावना, सकोचशीलता और गभीरता जड़ पकड़ती गयी। जव वह 4 वर्ष का था तभी घर मे एक और लडकी पैदा हो गयी। इस बीच शकर को पास के ही एक प्राइवेट स्कूल मे भेजा जाने लगा।

इस प्रकार दोनो छोटी लडकिया एक साथ रहती थी और दोनो बडे लड़के एक साथ रहते थे। ज्यो-ज्यो शकर बडा होता गया एकाकी रहने की उसकी आदत बढती चली गयी। वह अपने आपको हीन, अवाछित और अन्य सव लोगो से भिन्न समझता था। उसे भिन्न तरह का भोजन पसन्द आता और भिन्न प्रकार की पुस्तकें भी। भोजन और पाठन दोनों की उसकी रुचिया अलग-अलग थी। वह गोश्त पसन्द नही करता था और उसके माता-पिता प्रयत्न करके भी उसे गोश्त खाना न सिखा सके। स्कूल मे वह अपना काम ठीक-ठीक करता था लेकिन अन्य वच्चो मे उसे बहुत कम रुचि थी। वह घर की ही तरह स्कूल मे भी अपने आपको अलग, एकाकी और अजनबी-सा अनुभव करता था।

यदि शंकर को अकेला छोड दिया जाता तो घर के संकुचित, रूढिवादी और कट्टर दृष्टिकोण के विपरीत वह अधिक गहरे और मौलिक परिणामो पर पहुचता था।

शंकर जब तक बडा नही हो गया और जब तक उसे अपने ही विचार के लोग नही मिले और उसके तथा उनके विचारों का परस्पर आदान-प्रदान नही हुआ तब तक उसका एकाकी और सकोची स्वभाव नहीं बदला। अपने जीवन-भर उसने कल्पित कमजोरियो और कल्पित हीनता की भावनाओ के कारण बड़ा दुखपूर्ण समय काटा था। यदि उसके घर या स्कूल मे उसे कोई दूरन्देश आदमी मिल जाता तो उसका यह कष्ट कम भी हो सकता था। जब उसमे समाजविरोधी वृत्तिया उत्पन्न हो रही थी कभी उसे उनके दमन मे यदि जरा-सी सहायता कर दी जाती तो उसे इतनी तकलीफ न उठानी पडती।

(इ) इकलौते और बहुत प्यार किये जाने वाले पुत्र का हकलाना

रवि इकलौता लडका था और मां का बड़ा ही लाडला पुत्र था। पिता उसकी अवहेलना करते थे क्योंकि वह उतना प्रतिभासम्पन्न नही निकला जितनी उन्होंने

कल्पना की थी। इसके विपरीत यह अत्यन्त सचेत्य और कलात्मक प्रवृत्ति वाला निकला। उसकी मा दिन-रात उसी की सेवा मे लगी रहती थी। वह दिन दूनी रात चौगुनी रवि की प्रसन्नता और सफलता की कामना किया करती थी।

रवि अपनी मा द्वारा अत्यधिक ध्यान रखे जाने के कारण उस बोझ से दबा जा रहा था। वह बडा कल्पनाशील और आलसी-सा हो गया था। वह किसी भी काम को ठीक वही छोड देता था जिसमे तुरन्त थोडे ही समय के पश्चात् उसे सफलता मिलने वाली होती थी। जैसा कि हम ऊपर बता चुके है रवि पढाई-लिखाई मे बहुत अधिक तेज न था। लेकिन मां यह चाहती थी कि पुत्र अपने पिता का भी लाडला हो जाये और मा की समझ मे लाड़ला बनाने का एकमात्र तरीका यही था कि वह अधिकाधिक पढे। इसलिये, उसे वह पढने-लिखने के कार्य मे खूब प्रोत्साहित करती थी। बालक की स्वाभाविक वृत्ति कला और सगीत की तरफ थी और इस क्षेत्र मे वह तुरन्त सफलता भी प्राप्त कर लेता था लेकिन मां का ध्यान उसकी इस योग्यता पर न था और वह अपने पुत्र को पढाई के अलावा अन्य किसी क्षेत्र मे रुचि ग्रहण से निश्चित रूप से अनुत्साहित करती थी।

रवि जब 7 वर्ष का हो गया और जब उसे ऊंची कक्षाओ की पढाई के लिये अपर स्कूल मे भेजा गया तो वहा वह हकलाने लगा। यह त्रुटि सचमुच उसके लिये बडी कष्टकारी सिद्ध हुई। उसकी मा को भी इससे बडी चिन्ता हुई लेकिन काफी समय तक उसने न तो इस ओर कोई ध्यान दिया और न ही दूसरो के सामने अपने पुत्र के दोष के अस्तित्व को स्वीकार ही किया।

आखिरकार जब रवि 16 वर्ष का हो गया और उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध पिता के ऑफिस में काम करने के लिये भेजा गया तो उसकी हकलाहट बहुत बढ गयी। फलत- मां ने इस विषय के एक जानकार विशेषज्ञ से सलाह ली।

विशेषज्ञ ने रवि की परीक्षा की। उन्हे यह पता लगा लेने मे अधिक समय न लगा कि बालक के हकलाने का कारण किसी प्रकार की कमजोरी और मानसिक क्लान्ति का परिणाम है। उसके बोलने के किसी अग मे कोई खराबी नही। वह उसी जिह्वा से धाराप्रवाह बोल सकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि उसके दिमाग मे जो भार है, जो उलझन है, वह उसे निकाल दे। बस वह फिर आसानी से बोलने लगेगा क्योकि मानसिक उलझन ही उसके धाराप्रवाह बोलने मे बाधक है।

विशेषज्ञ ने रवि के लिए अपने यहां आने पर लेटना अनिवार्य कर दिया। और विश्राम करने की कला की भी शिक्षा दी। लेकिन रवि को वर्षो ऐसे वातावरण में रहना पडा था जिसमें उसके मस्तिष्क पर बड़ा भार पडा था। इसलिये वह आसानी से विश्राम भी नहीं कर सकता था कुछ दिन तो आराम करने के लिये भी उसे बड़ा प्रयत्न करना पडा वह समझ गया कि उद्देश्य क्या है और किसी तरह

मस्तिष्क को विश्राम देने में सफल हो गया इसमे सफलता मिलते ही उसकी हकलाने की आदत में भी कमी हो गयी

लेकिन इसके कुछ समय बाद ही मा को पता चला कि विशेषज्ञ पढाने के बजाय बच्चे को लेटाती है तो मां को लगा यह तो समय और पैसे का निरर्थक व्यय है और अपने पुत्र को विशेषज्ञ के यहा भेजना बद कर दिया।

बालक को अपनी मा के इस निश्चय से बडी परेशानी हुई क्योंकि विशेषज्ञ के रूप मे उसे अपने से सहानुभूति रखने वाला एक अच्छ मित्र मिल गया था और दूसरे उसके हकलाने की आदत भी सुधर रही थी। बालक ने विशेषज्ञ से जाकर अनुरोध किया कि वह उसकी मा से मिले और कहे कि लेटकर विश्राम करने का अभ्यास डालना उसके लिये कितना जरूरी है। विशेषज्ञ ने ऐसा किया भी लेकिन उसकी मा निर्णय कर चुकी थी। मां का ख्याल था कि उसका निर्णय वह तर्क-सम्मत है—इसलिए रवि का विशेषज्ञ के पास जाना बन्द हो गया।

एक वर्ष के भीतर ही बालक को अपने पिता का ऑफिस घोर स्नायुविक अस्वस्थता के कारण छोड़ना पड़ा। इसके बाद भी वह कई मास इसी प्रकार पडा रहा। अन्त मे उसकी मा को किसी ने मनोविज्ञान द्वारा चिकित्सा करने वाले डॉक्टर के पास जाने की सलाह दी। इस डॉक्टर ने सिफारिश की कि रवि को उसकी अपनी इच्छा के अनुकूल कला और सगीत की शिक्षा प्राप्त करने के लिये स्कूल भेज दिया जाये। अन्त मे यही हुआ और बालक ने इस क्षेत्र में पहुचते ही अपनी योग्यता और प्रतिभा का परिचय दिया। उसके मस्तिष्क के स्नायुओ का तनाव क्रमशः कम हो गया और उसके हकलाने की आदत सुधर गयी। एक बार फिर अपने मित्र और विशेषज्ञ की सलाह के अनुसार उसने व्यायाम और विश्राम करना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही महीनों मे हकलाना बिल्कुल छूट गया। हां, कभी-कभी वह अपने पिता के सामने बात करते हुए अवश्य हकलाने लगता था और इसका कारण था कि वह अपने पिता से बहुत डरता था। इसके अलावा स्नायुविक तनाव बढ़ जाने पर भी कभी-कभी हकलाने लगता था वैसे नहीं।

(ई) सबसे बड़ी बच्ची आशा का अपने परिवार को हर एक चीज दे देना

छ. बच्चों के परिवार मे आशा सबसे बड़ी बालिका थी। उसके ऊपर अपने पांच छोटे भाई-बहनों को संभालने की बड़ी जिम्मेदारी थी क्योंकि उसकी मां का स्वास्थ्य बड़ा नाजुक रहता था और आर्थिक परेशानियों की वजह से कोई नौकर भी नही रखा जा सकता था। आशा पढ़ने-लिखने में बडी होशियार थी और सेकेण्डरी स्कूल की कक्षाओं में पढने के लिए उसे वजीफा भी मिला था। इस स्कूल से वह अध्यापकों के ट्रेनिंग कॉलेज भेज दी गयी थी जहा उसे कार्य का प्रशिक्षण

मिला था। इन सारे वर्षो मे आशा घर के काम-काज में बराबर मदद करती रही। और इस बीच अपनी पढाई की तैयारिया भी अत्यन्त सावधानी के साथ करती रही। वह अपनी मा की सहायता स्वेच्छा से करती थी लेकिन इस सहायता करने मे उसका आत्मोत्सर्ग का भाव साफ-साफ प्रकट हो जाता था क्योंकि घर के कामकाज के कारण वह उन बहुत-से कार्यो मे भाग नहीं ले पाती थी जिनमे उसकी सहेलिया सयुक्त रूप से शामिल होती थी। इसकी वजह से वह काफी सख्त हो गयी थी और उसका स्वभाव भी कटु हो गया था। वह कपडे भी ठीक से नहीं पहन पाती थी, इसलिए उसकी कटुता और बढ जाती थी।

जब वह कॉलिज की उच्चतम कक्षा के अंतिम वर्ष मे पढ रही थी तभी उसके पिता की मृत्यु हो गयी। आर्थिक समस्या और भी जटिल हो गयी। अगले वर्ष आशा को एक स्कूल में अध्यापिका की जगह मिल गयी और उस समय से आशा का वेतन परिवार के लिए बहुत बडा साधन हो गया। वह जो कुछ भी बचा पाती थी वह सब परिवार के खर्च के लिये दे देती थी। उसने यह सब उस समय तक किया जब तक उसके सारे भाई-बहन पलकर बडे नही हो गये। उसने विवाह का विचार भी इसलिये त्याग दिया कि वह अपने परिवार की सहायता करती रह सके। उसके सामने तीन युवको ने विवाह का प्रस्ताव रखा लेकिन उसने तीनो के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। तीस वर्ष की आयु होते न होते वह अस्वस्थ रहने लगी। स्वभाव बड़ा कर्कश और कटु हो गया और उसके लिए जीवन मे आनन्द की कोई भी वस्तु नही रह गयी।

यदि मा या अन्य किसी व्यक्ति ने आशा की सहायता की होती और उसको दबा देने वाला अत्यन्त गुरु उत्तरदायित्व उसी के कधो पर न छोड दिया होता और क्रमश· उसका भार हलका किया जाता रहता तथा परिवार के अन्य बच्चे भी बडे होने के साथ-साथ अन्य जिम्मेदारियों मे हिस्सा बंटाते रहते तो शायद आशा भी अपना जीवन सुख से बिता लेती।

(उ) अनुचित सम्बन्धों से उत्पन्न बच्चे की कठिनाइयां

बेटी एक बड़े गरीब घर से गुजारा करती थी और वह अपने असली माता-पिता को नहीं जानती थी। उसने अपनी धाय मा की बातो से यह जान लिया था कि उसका पिता एक डॉक्टर था और उसकी मा एक नौकरानी थी किन्तु उसे कभी भी इस बात पर विश्वास नही हुआ कि जो सूचना उसे मिली है वह सही है। वह अपने धाय मां-बाप के साथ बराबर रही थी और घर के अन्य बच्चो के समान ही उसके साथ भी व्यवहार किया जाता रहा था। घर मे उससे अन्य सब बच्चे छोटे थे। स्पष्ट था कि वह नाजायज सम्बन्धों से पैदा हुई थी लेकिन वह धाय मा-बाप के किसी रिश्तेदार की ही सन्तान थी यह वह कभी नहीं जान पायी

आरम्भ से ही, जब से उसने होश सभाला और जिस वातावरण में वह रहती थी उसके प्रति उसके हृदय मे बडी घृणा का भाव जाग उठा था। उसकी रुचि स्वभावत परिष्कृत थी और पुस्तको से उसे बड़ा प्रेम था। यह स्पष्ट था कि पढने मे उसकी रुचि उस वातावरण की देन नही थी जिसमें वह रहती थी। सफाई और भोजन आदि का वह बडा ख्याल रखती थी और इन्ही कारणो से वह अकेली सी भी पड जाती थी और शेष परिवार द्वारा घमण्डी भी समझी जाती थी। उसे घर के काम-काज से अरुचि थी और वह इस बात का कोई प्रयत्न भी नही करती थी कि वह उसमें मन लगाये और घर के काम को अच्छे ढग से करने की कोशिश करे। उसकी धर्म बहने समझती थीं कि वह घर का अपने हिस्से का कामकाज भी ठीक से नही करती है। उन लोगो को बेटी की किताबो की रुचि भी अच्छी नही लगती थी और वे उसे उसकी बेवकूफी का शौक समझती थी। वे बेटी के शुद्ध भाषा बोलने के प्रयत्न का मजाक उडाती थीं और उस गन्दी गली मे रहते हुए बेटी अपने कपडो की सफाई का जो ख्याल रखती थी वह उन्हें अच्छा नही लगता था।

नतीजा यह हुआ कि बेटी दुनिया के प्रति घृणा का भाव लेकर बडी हुई। उसमे दो व्यक्तियों का विकास हुआ। उसका एक व्यक्तित्व उसे गदे घर का प्रतिनिधित्व करता था जिसमे वह रही थी और दूसरा उस व्यक्तित्व का जो उन परिस्थितियो के बिल्कुल विपरीत था।

अपने दोनो व्यक्तित्वो को वातावरण के अनुकूल बनाने के प्रयत्नों की वजह से स्कूल मे उसकी प्रगति मे बाधा पडने लगी। उस पर अपने परिवार का जो असर था और उस पर जो रोज तानें सुनने पडते थे वे उसके चेतन मस्तिष्क को बराबर इस अप्रिय तथ्य की ओर खीचते थे कि वह अपने मूल स्थान को नही जानती है। उसके जन्म का मूल स्थान और चाहे जो कुछ भी हो वह स्थान उसके घमण्ड का विषय नही हो सकता था।

उसका व्यवहार अत्यन्त समाजविरोधी हो गया। वह अन्य बच्चो से स्कूल मे पैसे ले लेती, पेंसिले आदि ले लेती जिसकी वजह से अक्सर कठिनाई में भी पड जाती। लेकिन बेटी जिस स्कूल में पढती थी उस स्कूल के अध्यापिका मण्डल मे एक ऐसी अध्यापिका थी जिसका व्यवहार बेटी के प्रति बडा सहानुभूतिपूर्ण था और जो यह समझती थी कि बेटी के जीवन में अवश्य ही कोई ऐसी गुत्थी है जिसकी वजह से उसका सन्तोषजनक विकास नहीं हो पा रहा है। वह बेटी को अपने घर ले जाने लगी और धीरे-धीरे उसने बच्ची की सारी कष्टगाथा जान ली। उसने यह भी जान लिया कि बेटी अत्यन्त सुशिक्षित बनने की आकांक्षा रखती है।

बेटी के 14 वर्ष की अवस्था मे स्कूल छोड़ने पर इस अध्यापिका ने उसे एक किताब की दुकान में नौकरी दिलवा दी वह उस लडकी की पक्की दोस्त भी बन

ोर बच्ची को अन्य लोगों के प्रति सामजस्यपूर्ण व्यवहार की शिक्षा देने मे वह हुत बडा साधन बनी रही। बेटी नये काम को बडी अच्छी तरह करने लगी। साथ ही जो भी उसे मिलता वह उसे पढ भी लेती। इस सफलता से उसे बडा मिला तथा परिवार के अन्य लोग भी सफलता के कारण उसका सम्मान करने लगे। तीन वर्षो बाद बेटी को एक बडे विक्रेता की दुकान मे जगह मिल गयी और तन भी अधिक मिलने लगा। अपनी बढी हुई आय के जरियें वह उस गदे स्थान कर अलग आ गयी जिससे उसे बहुत ही ज्यादा अरुचि थी।

प्रश्नावली

क्या आप किसी परिवार के ऐसे इकलौते बच्चे या सबसे बडे या सबसे छोटे बच्चे को जानते है जिसे अमधुर वातावरण में रहना पडा हो ? यदि ऐसा हो तो उसका फल क्या हुआ ? ('इ' और 'ई')

क्या आप किसी बडे परिवार के ऐसे बच्चे को जानते है जो एकाकी पड़ गया हो या विशेष रूप से अधिक दुखी रहता हो ? यदि हां तो क्या आप जानते है कि उसके दुखी रहने के क्या कारण हैं ? ('आ')

नये बच्चे के आगमन के लिए घर के सबसे छोटे बच्चे को तैयार करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है ? माता-पिता के लिए यह क्यो अबुद्धिमत्तापूर्ण है कि वह लड़का चाहते है या लडकी--यह पहले से सोच ले ? ('आ')

यदि माता-पिता के बीच पटती न हो तो ऐसा कौन-सा उपाय है कि जिसकी वजह से वह दोनो के ही बारे मे सहानुभूतिपूर्ण ढंग से सोचे ? किसी भी बच्चे को किसी विपत्ति से सर्वथा अनभिज्ञ रखना क्यों असम्भव है ?

क्या यह उचित है कि नाजायज सम्बन्धो से उत्पन्न बच्चो को उनके माता-पिता के बारे में सब कुछ बतला दिया जाये ? ('उ')

आप अपने परिचित किसी भी ऐसे परिवार के बच्चो की कठिनाई बतलाइये जहां बच्चों की योग्यता या रुचि के कारण कोई समस्या उठ खडी हुई हो। क्या ऐसी अवस्था में सभी बच्चो का समुचित विकास हो सका ? यदि हा, तो कैसे ? यदि नहीं, तो बतलाइए कि किस प्रकार उद्देश्य सिद्ध हो सकती थी ? ('उ')

किसी ऐसे बच्चे के सम्बन्ध में बतलाइए जो हकलाता हो। हकलाना कब शुरू हुआ ? उसका कारण क्या प्रतीत होता था ? किन परिस्थितियों मे आसानी से बच्चा बोल लेता था और किन परिस्थितियों मे उसे बोलने मे कठिनाई होती थी ? क्या उसका अब छूट गया है या अब भी की वजह से उसे परेशानी होती है ('इ'

अध्याय-4

कार्य और विश्राम की आवश्यकता

इसमे कोई सन्देह नहीं कि बच्चे मे अपने आप कुछ-न-कुछ काम करने की जो प्रवृत्ति पैदा होती है वह उसकी किसी-न-किसी विशेष आवश्यकता की पूर्ति करती हे। इसका बेच्चे के विकास में अत्यन्त महत्त्व है। यही नहीं, यदि बच्चे को आत्म-प्रेरित कार्य करने से रोका जाये तो बहुत सम्भव है कि उसके विकासशील अवयवो को क्षति पहुचे। यह क्षति शारीरिक ही नही अपितु मानसिक और आध्यात्मिक भी हो सकती है। यदि एक क्षण के लिये हम सोचे तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि कुछ-न-कुछ कार्य करते रहने की प्रवृत्ति हर स्वस्थ बालक मे होती है। बच्चे की कुछ-न-कुछ करते रहने की यह इच्छा अक्सर बडों की परेशानी की वजह बन जाती है लेकिन यदि एक बार भी वे यह मान ले कि ऐसी इच्छा होना अनिवार्य है और वह बच्चे के विकास के लिए बहुत जरूरी है तो फिर वे बच्चे को किसी कार्य मे लगा देख नकारात्मक ढग (रीति) से अपना सिर नही हिलायेंगे और न उसे किसी पाप का लक्षण ही समझेगे बल्कि उसकी इस इच्छा को कार्यान्वित करने में इस प्रकार सहायता करेंगे जिससे बच्चे के विकास मे अधिक-से-अधिक मदद मिल सके।

बालक के विश्राम की आवश्यकता भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कार्य की और जो भी बच्चे की देखभाल करता हो उसका यह कर्तव्य है कि वह जल्दी ही बच्चे को सुला दे और उसके शैशवकाल मे उसके दिन मे भी आराम से सोने की व्यवस्था कर दे। कुछ माताओ को अपने बच्चो को जल्दी सुलाने मे खासतौर से दिक्कत होती है। कभी-कभी तो इसलिए कठिनाई उपस्थित होती है कि पहले बच्चे को जल्द सुला देने का महत्त्व नही जानती है और बच्चे की देर तक जागने की खराब आदत पड जाती है। कुछ मामलों मे ऐसा होता है कि बच्चे को जीवन इतना आकर्षक लगता है कि वह कहीं कुछ खो न दे, इसलिए सोना नही चाहता। ऐसे बच्चे को सुलाने का तरीका यह है कि उसे जागने की अवस्था के अपेक्षा सोने के समय अधिक आराम और सुविधाएं दी जाये।

कुछ बच्चो को सुबह के वक्त नीद आती है और वे पूरी तरह शाम को ही जागते है लेकिन ———— ऐसे बच्चे बहुत अधिक स्वस्थ नहीं होते ऐसे बच्चो को

शाम को जल्दी सुलाने की कोशिश करनी चाहिए। इससे उन्हें अधिक जीवनी शक्ति मिलेगी। ऐसे बच्चो को खूब ताजे फल और ताजी हरी तरकारिया और कच्चा सलाद भोजन के साथ देना चाहिए। इससे उनका रक्त शुद्ध होगा, जीवनी शक्ति बढ़ेगी और चेहरे पर तेज आयेगा। उन्हें दिन में तीन बार भोजन कराना चाहिए और एक बार भोजन कराने के बाद बीच में खाने के लिये कुछ भी नही देना चाहिए।

बच्चे के देर से सोने की आदत पड गयी हो तो एक बाल कल्याण केन्द्र के डॉक्टर की नीचे लिखी सलाह से अच्छी अन्य कोई सलाह नहीं दी जा सकती। इस डॉक्टर से दो वर्ष के बच्चे की एक मा ने शिकायत की कि उसका बच्चा शाम को जल्दी नही सोता। इस पर डॉक्टर ने कहा आप प्रतिदिन अपने बच्चे को पहले दिन से पाच मिनट पहले सुला देने की कोशिश करें और ऐसा तब तक करती चली जाये जब तक वह शाम के 6 बजे से सो जाने की आदत न डाल ले और यदि आप ऐसा क्रमशः करेंगी तो आपका बच्चा शाम को जल्दी सोने में कोई आपत्ति न करेगा।

इस सलाह को कार्यान्वित करने के लिये प्रत्येक मा के लिये यह जरूरी है कि वह यह काम बड़ी एकाग्रता से करे। इसमे परिश्रम अवश्य पड़ेगा—लेकिन यह ऐसा श्रम है जिसे करना हर तरह से लाभदायी होगा।

कुछ बच्चो को सोने में बड़ी देर लगती है और उनके लिये चुपचाप लेटना बडा कठिन होता है। यह बात दिन में सोते वक्त भी होती है और रात को भी हो सकती है।

बच्चे संकेत बहुत जल्दी समझते है। इसलिये यदि मा के दिमाग में ही यह बात हो कि उन्हें जल्दी सुलाना बडा कठिन है और वे शान्तिपूर्वक लेटेंगे नही, किसी-न-किसी तरह का ऊधम अवश्य करेंगे तो निश्चित समझिये कि एक-न-एक मौके पर वे ऐसा जरूर कर बैठेंगे। जो लोग ऐसे मौको पर धीरतापूर्ण विश्वास से काम लेते है और बच्चे के शातिपूर्वक न लेटने का भी जिन पर कोई असर नहीं होता और वे बराबर यही विश्वास बनाये रखते है कि बच्चा थोडी ही देर मे चुपचाप लेटकर सो जायेगा, वे अपने कार्य मे सफल होते हैं और बच्चे को विश्राम की मुद्रा और निद्रा के अक मे जाने मे सक्रिय सहायता देने में समर्थ सिद्ध होतेहैं।

जो मा अपने बच्चे को इस प्रकार सोने मे सहायता करना चाहती हो उसे दिन मे या रात मे सोने के समय के कुछ पहले बच्चे से कोई ऐसा खेल खेलने या काम करने के लिये कहना चाहिए जिसके बाद वह आसानी से सो जाता हो। कुछ माताओ को शायद यह अनुभव हो कि उनका बच्चा कोई शान्त खेल खेलता हुआ सो जाता है तो कुछ माताओं को ऐसा लगता है कि उनका बच्चा थोडी देर कोई उछल-कूद का खेल खेलने के बाद सो जाता है।

बच्चे को शांतिपूर्वक साने के कुछ मिनट पहले यह बतला देने से कि सोने का

समय हो गया है बच्चा नीद की गोद मे जाने के लिये अपने आपको तैयार कर लेगा। यदि बच्चा कोई आपत्ति करे तो उसकी वह आपत्ति ढग से दूर कर देनी चाहिए लेकिन बच्चे को ऐसा नही लगना चाहिए कि उसे कोई घूस या रिश्वत दी जा रही है। बच्चे को सोने की तैयारी के रूप मे कोई खेल खेलाना अच्छा होता है और जैसे ही उसकी सारी आवश्यकताए पूरी हो जाये। बच्चे को सोने के लिये एकान्त मे छोड देना चाहिए। कुछ बच्चो की आदत पड़ जाती है कि वे तरह-तरह की चीजे शाम को सोते वक्त मांगते है और ऊपर-नीचे दौडकर चीजे चुटाने मे मा की कमर दुख जाती है। यह सच है कि बच्चे की पुकार पर बिल्कुल ही ध्यान न देना बड़ा कठिन है या जब वह रोता हो तो उसके पास जाने से अपने आपको रोकना भी असंभव है लेकिन यह भी सच है कि जब तक बडे बच्चे को एकान्त में सोने की आदत नहीं डालेगे तब तक वह बराबर इसी प्रकार तग करता रहेगा। एक बार जब आपको बच्चे को अकेले मे छोडने मे सफलता मिल जायेगी तो आपका विश्वास जाग उठेगा और बच्चे का यह सोचना कि वह मा को हर वक्त अपनी सेवा के लिये बुला सकता है दूर हो जायेगा लेकिन ऐसा करने के लिये सुनियोजित योजना के अलावा अपने ऊपर पूर्ण विश्वास की जरूरत है। यदि एक बार भी ढील डाल दी गयी तो सम्भव है कि अंतिम सफलता प्राप्त करने मे काफी समय लग जाये।

मान लीजिए आपने बच्चे की सोने की समस्या को सफलतापूर्वक सुलझा लिया लेकिन बहुत सम्भव है कि इतने पर भी बच्चे की विश्राम की समस्या पूरी तरह न सुलझी हो। बच्चे को ऐसा समय भी मिलना चाहिए जिसमे वह शांतिपूर्वक मनचाहे विश्रामदायी काम में अपने आपको लगा सके। यह सोचना गलत है कि बच्चे के काम में लगे रहने का अर्थ हमेशा उछलना-कूदना, शोर मचाना या सोचना ही होता है। यह भी बडा अबुद्धिमत्तापूर्ण होता है कि मां उसके हर काम पर बहुत अधिक ध्यान रखे और बात-बात में बच्चे को टोके। बहुत अधिक सुझाव देना भी ठीक नहीं होता। कभी-कभी लम्बे समय तक उसे एकान्त मे बराबर खेलते रहने देना चाहिए।

इस प्रकार के एकान्त मे खेले जाने वाले विश्रामदायी खेलो की आवश्यकता के महत्त्व को भली-भांति समझने की जरूरत है क्योकि आजकल के गुलगपाडे के युग मे अक्सर लोग इसके महत्त्व को समझते नहीं है। लेकिन बच्चे के हर कार्य का अपना एक विशेष मूल्य होता है और किसी भी अवस्था मे उसकी उपेक्षा नही की जानी चाहिए। बच्चे को ऐसा समय भी मिलना चाहिए जिसमे वह भागे, दौडे, कूदे और फादे जिससे उसके अवयव पुष्ट हो सके और :र अपने शरीर को संतुलित करने का अभ्यास बना रहे। इसके साथ ही उसे कुछ ऐसा भी समय मिलना चाहिए जिसमें वह बहस कर सके, अभिनय कर सके, सगीत सुन सके, गा सके, पढ़ सके और चित्रकारी कर सके ऐसा करने से धीरे-धीरे वह आत्म-निर्भर हो जायेगा और

अपने कामो के लिए बडों की सहायता का मुह नही ताकेगा। वह अपने आप अपने कपडे पहन लेगा, अपने कपडे तथा हाथ-मुह धोना सीख लेगा, अपने हाथ से भोजन कर लेगा और खेलने के बाद अपने खिलौने भी सभालकर रख लेगा। बच्चे के आत्मनिर्भर बनने मे बडो का भी कुछ कम हाथ नहीं रहता। मा को यह बराबर ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे को अपनी आवश्यकतानुरूप हर काम करने का मौका मिल रहा है या नही—इन कामों मे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार का कार्य आ जाता है। ऐसे मौके मिलने से ही उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सकेगा। इसके अलावा मां को बच्चे के विकास की गति समझने की क्षमता भी होनी चाहिए और उसे मालूम होना चाहिए कि किस अवस्था मे बच्चा किस प्रकार की सफलता प्राप्त कर सकता है। यही नही, बच्चे से कुछ सोद्देश्य काम भी कराना चाहिए जिससे बच्चे को अपनी छोटी-सी दुनिया में रहने का अनुभव होता रहे। उससे मेजो के लगाने मे मदद ली जा सकती है। तश्तरियां उठवाने का काम लिया जा सकता है। तश्तरियो के धोने के काम मे भी बच्चे से मदद ली जा सकती है। बच्चे से सदेश भी भिजवाये या मगवाये जा सकते है।

यह सब सुनने में जितना कठिन लगता है—वस्तुतः व्यवहार मे उतना कठिन नही है क्योकि किसी एक दिन बच्चे से ये सारे काम करा लेने जरूरी नही हैं। दूसरे बच्चे की रुचियों और प्रवृत्तियों से अपने आप पता चल जाता है कि उससे किस प्रकार का काम लिया जाना चाहिए।

बच्चों के खेलों, खिलौनों तथा कार्य आदि के बारे में कुछ उपयोगी सुझाव

1. बच्चा यदि चुपचाप काफी देर तक खेल लिया हो तो यह अच्छा है कि उसके बाद उसे दौड़-धूप और उछल-कूद का कोई खेल खेलाया जाये।

2 यदि किसी कार्य में बच्चे को बहुत दौड़ना-भागना पडा हो तो उसके बाद उससे कोई ऐसा काम लेना चाहिए जिसमें कम चलना-फिरना पड़े या हाथ-पैरो का किसी भिन्न तरीके से प्रयोग करना पड़े।

3. एक काम या खेल के बाद दूसरा काम या खेल बतलाने के बीच बच्चे को थोडा-सा विश्राम का समय देना चाहिए।

4 बच्चे के खिलौनो में कुछ ऐसा भी सामान होना चाहिए जिससे वह कुछ अपना काम भी कर सके।

अगले अध्याय में हम लोग बच्चे के विभिन्न खेल-खिलौनो और कार्यो के महत्त्व और उपयोग पर विस्तारपूर्वक विचार करेंगे।

बच्चे की गतिविधि से संबंधित एक और भी प्रश्न है और वह है बच्चे की अन्य बालको के साथ दोस्ती कुछ माता पिता के लिये बच्चे को अकेले खेलने देने की

अपेक्षा उसे सामूहिक रूप से खेलने देने की व्यवस्था करने मे कठिनाई होती है, लेकिन जो भी हो, बालकों की पारस्परिक मैत्री का महत्त्व भली-भाति समझ लेने की आवश्यकता है जिससे जब बच्चा अन्य बच्चो के साथ खेलने जाये तो उस अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सके।

सामूहिक खेलो द्वारा बच्चा हिस्सेदारी की भावना सीखता है। उसे अपने दाव लेने की शिक्षा मिलती है। वह समूह मे अपने आपको विलयित करना सीखता है। वह सयुक्त प्रयत्नो का महत्त्व भी समझने लगता है। और इसमे भी सभवतः सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि दूसरो के साथ खेल और भी अधिक जीवनदायी, उत्तेजनाकारी और अधिक प्रसन्न करने वाला हो जाता है।

बच्चो की गतिविधि और विश्राम की समस्या के सबध मे मुझे जो अनुभव हुए है उन्हें मै नीचे दे रही हू। इनसे एक-दूसरे का पारस्परिक सबध जानने में सुविधा होगी।

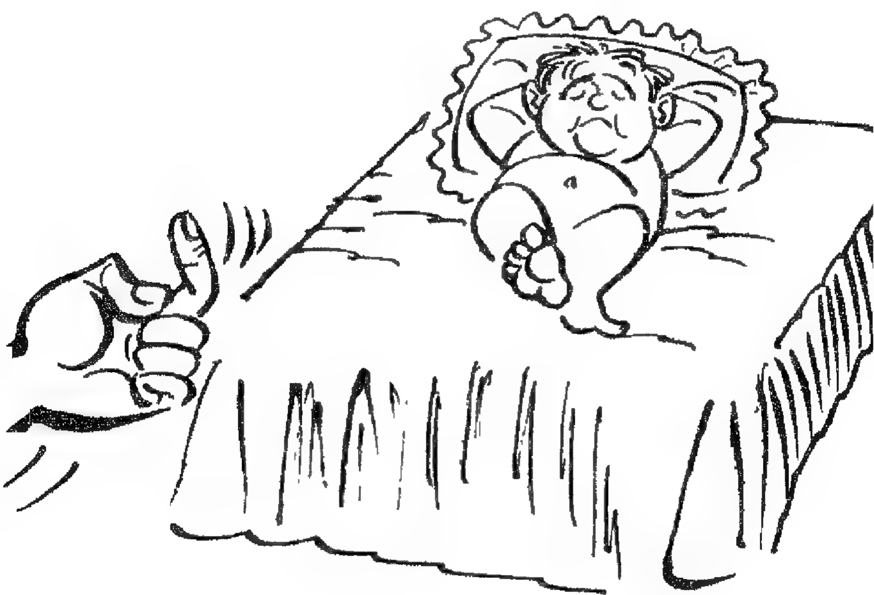
(अ) अस्पताल में अठारह महीने का बच्चा

इस अध्याय का यह पहला दृष्टान्त है। इसमे यह बतलाया गया है कि बच्चे के थक जाने पर उसकी क्लान्ति के लक्षणों को तत्काल समझ लेने की आवश्यकता हे और यह जरूरी है कि उसके बाद बच्चे को बहुत अधिक उत्तेजित न किया जाये—खासतौर से नाजुक स्वास्थ्य वाले बच्चे को या ऐसे बच्चे को जो हाल ही मे बीमारी से उठा हो।

भारत के एक बडे नगर की बात है। वहा एक अस्पताल के बच्चो के विभाग मे 18 मास के रवि नाम के बच्चे को भर्ती किया गया। वह अस्वास्थ्यकारी भोजन के कारण उत्पन्न रोगों से पीडित था और क्लान्ति का मरीज था। कई सप्ताह तक उसकी हालत बहुत खराब रही। उसे हर तरह का भोजन अदल-बदल कर दिया गया लेकिन कोई लाभ नही हुआ। वह चुपचाप पडा रहता। न हिलता, न डुलता। ऐसा लगता जैसे वह बड़ा दुखी है। वह न किसी चीज की ओर देखता न किसी व्यक्ति को ही पहचानता।

आखिरकार, उसकी दशा मे कुछ सुधार हुआ। वह धीरे-धीरे खाट पर उठकर बैठने लगा और अस्पताल की तरफ से जो खिलौने उसे दिये गये थे—उनसे खेलने भी लगा। यदि उसके पास से कोई नर्स निकलती तो उसे देखकर किलकारी भी मारता। जैसे-जैसे उसकी शक्ति बढती गयी वैसे-वैसे वह अपने खटोले की बाढ को पकडकर उठने भी लगा। उठने के बाद धीरे से वह बाढ के सहारे एक कोने से दूसरे कोने तक चलने भी लगा। अस्पताल के सभी लोगो ने बच्चे के स्वास्थ्य मे होने वाली प्रगति को अत्यन्त रुचिपूर्वक देखा। आखिरकार वह दिन भी आया जब उसे वार्ड

भर मे घूमने की इजाजत दे दी गयी। वह कभी इस मेज को पकड़ता तो कभी उस कुर्सी को पकडता, तो कभी नर्स का सहारा लेता हुआ पूरे वार्ड मे घूमता। सबके लिये यह बडी खुशी की बात थी लेकिन उस समय किसी ने यह नही समझा कि रवि के लिये यह श्रम कैसा होगा। बीच-बीच मे वह रुक जाता, जैसे उसे अपने आप पर बडा आश्चर्य हो रहा हो और फिर बडे जोरो से किलकारी मारकर हसता। बहुत-सी नर्से उसके पास इधर-उधर खडी हो जाती तथा उसे उत्साहित करती और उसकी खुशी का आनन्द लेती। सब लोग उसके पिछले रोग के सारे लक्षण को भूल गये। अब उन लोगो की निराशा की कल्पना कीजिए जब उसी दिन बच्चे के बहुत अधिक खुश हो जाने के परिणामस्वरूप तथा अनभ्यस्त काम करने की वजह से बालक पुनः बीमार पड गया। उसे बिल्कुल नीद नही आयी और सहसा तेज ज्वर चढ आया। सौभाग्यवश, बच्चे की यह बीमारी अल्पकालीन ही सिद्ध हुई। लेकिन इसके बाद



उसके चलने की कला सीखने के प्रयत्नों को अत्यन्त सावधानी से सीमित रखा गया। इस घटना के बाद उसे पहली बार चलने दिया गया तो चलने का समय बहुत थोडा रखा गया।

ज्यो-ज्यो रवि बलवान होता गया त्यो-त्यो उसकी गतिविधि का क्षेत्र भी विस्तृत होता गया। उसने धीरे-धीरे अपने खिलौनो को खटोले पर से जमीन की ओर फेकने की आदत डाल ली। वह अपनी जगह से जितनी जोर से हो सकता जमीन पर दूर तक अपना खिलौना फेंक देता और इसके बाद खटोले पर से तब तक चिल्लाता और इशारे करता जब तक कोई उसका खिलौना उठाकर न दे देता। पहले तो इस तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया लेकिन बाद मे देखा गया कि जब वह प्रतीक्षा करते-करते थक जाता तो अपना बिस्तर उलट देता और तकिये के गिलाफ को उतार देने की चेष्टा करता। अपने कार्य में वह इतना सफल पहले कभी नहीं हुआ जितना उस दिन जिस दिन अस्पताल के संचालको का मडल व्यवस्था निरीक्षण करने के लिये आया। सचालक तीसरे पहर तीन बजे आने वाले थे और तीन बजने के एक मिनट पहले सब बच्चो को सबसे अच्छे कपडे पहनाकर तैयार कर दिया गया। चारो तरफ वार्ड मे खूब सफाई कर दी गयी थी और नर्सो ने अपनी सफलता पर चैन की सांस ली थी। दरवाजा खुला और आगन्तुकों के स्वागत के लिये आगे बढ़कर जाने वाली नर्सो मे से एक ने भयमिश्रित आश्चर्य से देखा कि रवि एकदम नगा खड़ा है, उसके कपडे चारों तरफ बिखरे पडे है और तकिये का गिलाफ लगभग अलग पडा हुआ है। हुआ यह था कि जल्दी-जल्दी मे नर्सो को उसे उसके खिलौने देने का ध्यान ही नही रहा था और उसके नये कपड़े बड़े ढीले-ढाले और बहुत कसकर नही बधे थे—इसलिये वह किसी प्रकार उन्हे उतार फेंकने मे सफल हो गया। अपने प्रयोग की सफलता से उसे एक प्रकार की नयी शक्ति मिल गयी थी और यदि नर्स ठीक समय पर उसे न देख लेती तो शायद वह अपने सारे बिस्तर ही उलट देता।

(आ) घर में चार वर्ष का बच्चा

नीचे लिखे दृष्टान्त से हम यह जान सकेगे कि बच्चे को कब और कितनी सहायता करनी चाहिए।

राहुल की आयु 4 वर्ष की थी। वह दिन-भर घर मे अकेला ही खेला करता था क्योकि उसकी 6 वर्ष की बहन दिन में पढने स्कूल चली जाती थी। वह कभी ईटो और पत्थरों से खेला करता था तो कभी अपनी ट्रेन से। कभी अपनी चित्र पुस्तक खोल लेता था तो कभी रेत मे गड्ढे खोद लेता था। कभी-कभी छोटे-छोटे थैलो में वह तौल-तौलकर पत्थर भरता था तो कभी उसे बुलबुले बनाकर उडाने ही में मजा आता था। लेकिन जब वह कोई ऐसा काम करने लगता जिसमे उसका बालसुलभ

कौशल सफल न होता और मनोवांछित सफलता न मिलती तो वह जोर-जोर से रोता। इस रोने से उसकी अधीरता और रुष्टता दोनो प्रकट होती थी। ऐसा अक्सर उस समय होता जब वह कागज की चेन बनाने की कोशिश करता या लकडी के दो टुकडो को जोडने की कोशिश करता। उसमे इतना धैर्य नही था कि यदि कोई कठिनाई काम के बीच मे आ जाये तो वह दृढ-उद्योग की भावना से उस काम को करता चले और उसे पूरा कर ले। कागज की चेन बनाने मे वह कभी तो हाथ और कागज मे आवश्यकता से अधिक लेई पोत लेता, तो कभी कागज के टुकड़ो को बहुत छोटा काटता या कागज इतना मोटा काट लेता कि वह आखिरी छेद से गुजरता ही नही था; लेकिन इन सारे दोषो के होते हुए भी वह उनका प्रयोग ऐसे करता था जैसे सामग्री मे कोई दोष ही न हो। यदि अन्त मे आखिरी छेद से गोलाकार कागज की पट्टी न गुजर पाती तो वह अपनी असफलता पर जोर-जोर से रोता और फिर झुझलाकर जो कुछ बना होता उसे फाड डालता।

यदि इस बीच उसकी मा वहा होती तो वह उसके हाथ और कागज की अतिरिक्त लेई पोंछ देती, कागज की पट्टी यदि चौडी होती तो उसे पतली कर देती और चेन बना देने मे मदद कर देती तो राहुल खुश हो जाता। मां यह जानती थी कि राहुल के लिये यह किसी भी प्रकार उचित नहीं है कि वह इतनी बुरी तरह से नाराज तथा अनुत्साहित हो जाये कि अपना किया सारा काम नष्ट कर दे, विशेषकर, उस समय जब कि इस प्रकार के क्रोध का परिणाम यह होता हो कि वह कुछ समय के लिए वह काम ही करना छोड़ देता हो, लेकिन उसकी मां शायद यह नहीं जानती थी कि 4 वर्ष की अवस्था के बालक की भी अपनी कुछ सीमायें होती है। वह हर बात मे सफल नही हो सकता। जैसी निराशाए और परेशानिया राहुल को होती थी वैसी चीजें अक्सर उस आयु के बालकों को स्वभावतः होती हैं।

यदि उसकी मां ने 4 वर्ष के बहुत-से बच्चो के विकास का अध्ययन भी किया होता तो भी शायद वह राहुल को कितनी सफलता मिलनी चाहिए—इसका अन्दाज नही लगा सकती थी क्योकि किसी अवस्था मे कोई बालक कितनी सफलता प्राप्त करेगा—यह इस बात पर निर्भर करता है कि उस बालक की अपनी क्षमता क्या है और उसकी अपनी निजी और विशेष कठिनाइया क्या हैं। मा उसकी सफलता को उस समय बडी अच्छी तरह आंक सकती थी जब वह अपने बच्चे की वर्तमान सफलता की तुलना उसकी पिछली सफलताओं से करती और इससे बालक के सम्बन्ध में उसकी अपनी निजी धारणा भी बहुत अच्छी बन सकती थी। लेकिन उसका यह सोचना भी ठीक था कि बालक का बहुत ज्यादा नाराज होना और अनुत्साहित होना उसके लिये लाभप्रद नहीं है। उसने उस समय वह मौलिक सत्य भी स्पर्श कर लिया था जब यह सोचा था कि 4 वर्ष के बालक को हर बात मे

सफलता नही मिल सकती और एक हद तक बच्चे को निराश होने की आदत भी डालनी होगी।

यह अनिवार्य है और इसलिए बहुत महत्त्वपूर्ण भी है कि बच्चे को कुछ ऐसे विशेष अवसर दिये जायें जिनमे वह पूर्ण सफलता प्राप्त करने के आनन्द को अनुभव कर सके। यदि बालक हर चीज या हर काम ऐसा उठाता है जो बहुत ही कठिन है तो उसकी आदत या तो हर बात मे बडा की सहायता प्राप्त करने की पड जाती है या यह पड जाती है कि वह उस चीज या कार्य को अत्यन्त निराश होने के बाद छोड दे। इसके दो परिणाम हो सकते है। पहला तो यह कि वह बडों की सहायता का आदी हो जाये और दूसरा यह है कि वह निराश होने के बाद फिर उस काम को कभी करे ही नहीं। इन दोनो बातो का अत में जाकर यह फल होगा कि बच्चा आलसी हो जायेगा और उसमें किसी काम के करने का उत्साह शेष नही रह जायेगा।

किसी कठिनाई मे बच्चे की मदद करने में यह ध्यान रखना चाहिए कि बडा अपने कार्य से बच्चे को कम-से-कम सहायता दे और उसे यह बतला दे कि पिछली बार की अपेक्षा इस बार बच्चे को कम सहायता की आवश्यकता पड़ी है क्योकि अब वह क्रमशः अधिक होशियार होता जा रहा है। मां को बच्चे के प्रयत्न के लिए हमेशा प्रशसा करनी चाहिए जिससे बच्चा अत तक उस काम को निभा ले जाये। बच्चे के लिए सबसे कठिन बात यह होती है कि वह एक काम को पूरा करने के लिए जितना चाहिए उतना श्रम और प्रयास नही कर पाता है। उसे यह सिखाना चाहिए कि कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिए परिश्रम की कितनी आवश्यकता है जिससे वह जो काम शुरू करे उसे पूरा कर सके। कभी-कभी बच्चे अपना छुटपना दिखलाकर बडो का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने का प्रयत्न करते हैं और तत्काल सहायता मागते हैं या रोने लगते हैं लेकिन स्पष्ट है कि बड़ों को ऐसी बातों मे उनकी मदद नही करनी चाहिए। बल्कि जब भी सभव हो सहायता तभी की जाये जब बच्चा अपनी ओर से सारे प्रयत्न कर ले और विवेक सम्मत व्यवहार करे।

राहुल एक दिन 'नेता के पीछे चलो' खेल खेल रहा था। उसके साथ अन्य बहुत-से बच्चे भी थे और उनकी चाची भी थी। पहले तो राहुल बहुत अच्छी तरह खेलता रहा लेकिन ज्यो-ज्यो समय बीतता गया राहुल ने देखा कि उसकी तरफ कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है। नतीजा यह हुआ कि वह थोडी ही देर मे खेल से यह कहता हुआ अलग हो गया, 'मै नही खेल सकता। यह खेल मेरे लिए बडा कठिन है। मै और नहीं खेलना चाहता। अब हम लोग कोई दूसरा खेल खेलें।' चाची ने समझ लिया कि बच्चे के दिमाग में क्या है। इसलिए उन्होंने कह दिया, 'क्यों, हम सबको तो यह खेल खूब पसन्द आ रहा है और हम लोग तो इसे खेलेगे। लेकिन हा, तुम यदि न चाहो तो मत खेलो।' थोडी देर तो राहुल यो ही घूमता रहा लेकिन जब

उसने देखा कि उसकी तरफ कोई ध्यान ही नही दे रहा है तो वह फिर आकर खेलने लगा।

(इ) 6 वर्ष की बच्ची का खेल

अब हम एक बिल्कुल भिन्न प्रकार के बच्चे के सम्बन्ध मे विचार करेगे। आभा की आयु 6 वर्ष की थी। वह स्वभाव से ही बडी चतुर, कल्पनाशील और बहुत अधिक खुश हो जाने वाली लडकी थी लेकिन दस्तकारी के काम मे वह बहुत अधिक सफल नही हो पाती थी। यदि हाथ के काम में उसे किसी कठिनाई का सामना करना पडता तो या तो वह अपनी योजना ही बदल देती या किसी तरह काम पूरा भी कर लेती तो यह स्वीकार नहीं करती कि उसमे कोई त्रुटि रह गयी हे। एक दिन वह तीन भालुओं के तसले और चम्मचे क्रमश' छोटे होते जाने वाले आकारो में बना रही थी जिससे वे प्रत्येक भालू को उपयुक्त लगे। सबसे पहले उसने सबसे बड़े भालू की चम्मच बनायी। लेकिन बीच मे ही उसका प्लेस्टीसाइन (Plasticine) (यह ऐसा पदार्थ है जो प्लास्टिक का होता है और आजकल स्कूलो मे 'मॉडल' बनाने के लिए मिट्टी की जगह इसका प्रयोग किया जाता है।—अनु.) कम रह गया और उसे ऐसा लगा कि शेष तसलो और चम्मचो के लिए कम पड जायेगा। लेकिन उसने पुन' चम्मच बनाने के बजाय तीनो तसले और शेष दोनो चम्मच शेष सामग्री से ही बनायी। इनका अनुपात ठीक न था लेकिन वह फिर भी सबको बड़े गर्व से दिखलाती फिरी। उसने मां को भी अपनी बनायी चीजे इस तरह दिखलायी जैसे वह अपने काम से पूरी तरह सन्तुष्ट है। मा ने तुरन्त ही देख लिया कि एक चम्मच बहुत बड़ी हो गयी है, इसलिए उसने कहा भी, 'क्या सबसे बडे भालू के लिए तसले मे इतना बडा चम्मच डालना कठिन नही होगा ?' आभा ने तुरन्त ही इसका उत्तर दिया, 'मैंने जान-बूझकर इसे बडा बनाया है क्योंकि वह तसले से शीरे को चम्मच मे कर लेता हे। वह चम्मच का प्रयोग इस तरह नही करता जिस प्रकार हम करते है।' मा इस उत्तर से कुछ अचभे मे पड गयी और बोली, 'मैं इसकी जगह सामान्य ढग की चम्मच बनाना ही पसन्द करती।' इस पर जरा लापरवाही से आभा ने उत्तर दिया, 'ओह ! मेरा भालू इसी तरह का चम्मच अधिक पसन्द करता है। वह हमेशा अपने पास इसी तरह का चम्मच रखता है।'

आभा इस प्रकार से अपनी गलतियो की भी सफाई हमेशा तैयार रखती। इसके पहले कि वह अपनी गलती मंजूर करे उसे काफी सहायता की आवश्यकता पडती और यह भी ठीक है कि इस प्रकार के बच्चो के साथ व्यवहार करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि बडे यह बतला दे कि बच्चे के उस स्पष्टीकरण मे उनकी अपनी राय जरा भी नही बदली है। बच्चो को स्वयं इस बात से कभी-कभी बडी परेशानी


मम्मी जी

होने लगती है यदि उनकी गप्प वाली सफाई मान ली जाती है और वे अपना रास्ता नही तय कर पाते है। आभा की मा नीचे लिखी बातो में से कोई एक बात कहकर इस प्रकार अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकती थी, 'मान लो कि एक दिन मै तुम्हारे लिए कोट बनाने का कपडा खरीद लाऊ और फिर गलती से कोट इतना बडा बना दू कि वह पीछे तो जमीन से लगता हो और फिर मेरे पास केवल बाहे बनाने के लिए कपडा रह जाये और मै केवल बाहे ही बनाकर छोड दू। आगे का हिस्सा न बनाऊ। तुम उस समय क्या सोचोगी यदि जब मैं मित्रों से यह कहना शुरू करू कि 'मैने आभा के लिए इतना बडा कोट इसलिए बनाया है कि वह हमेशा इसी तरह का कोट पहनती है। वह इसी तरह का कोट पहनना ही पसन्द करती है ?' आभा जैसा चालाक बच्चा इस कहानी से मा का मतलब बहुत अच्छी तरह समझ जायेगा और वह जान जायेगा कि इस मामले में मां के दृष्टिकोण को वह अपनी चतुराई-भरी सफाई से भी बदल नही पायी है।

कभी-कभी अभिभावक इसी तरह की अतिशयोक्तिपूर्ण कहानिया सुनाकर बच्चे को यह बतला सकते हैं कि वे उसके स्पष्टीकरण से सन्तुष्ट नहीं हुए है।

(ई) निद्रावस्था में चलना और दुःस्वप्न

बहुत अधिक उत्तेजना से या स्नायुओ पर अन्य किसी प्रकार का भार पडने से नीद मे बाधा पडती है और बच्चा दुःस्वप्न भी देखने लगता है।

मेरी परिचित एक अध्यापिका ने मुझे अपना एक अनुभव बतलाया। मेरी इन मित्र के भी दो बच्चे है। वे अक्सर कक्षा में बड़ी सनसनीपूर्ण कहानियां सुनाया करती थी। वे इन कहानियों की प्रतिक्रियाओं को उस समय तक नहीं समझ पायीं जब तक स्वयं उनके बालको में से एक उनकी कक्षा मे नहीं आ गया और वे स्वय उन कहानियों के असर को उन पर न देख पायी। उन्होने देखा कि उनका बच्चा अक्सर सोते-सोते डरकर जाग उठता है और उसकी बातो से पता चला कि उसने दिन मे जो कहानी सुनी थी उसका कोई अश उसके मस्तिष्क मे उस समय भी चक्कर काट रहा है। जैसे ही अध्यापिका ने अपनी कहानियो की यह प्रतिक्रिया देखी वैसे ही उन्होंने कहानियों को इस ढंग से सुनाना बन्द कर दिया और कहानियो का प्रकार भी बदल दिया। इससे कहानियो द्वारा पैदा होने वाली बुराई दूर हो गयी।

कुछ माताएं सोने के समय भी बच्चो को कहानिया सुनाना पसन्द नही करती क्योंकि वे कहानियो से उत्पन्न होने वाली निद्राकालीन प्रतिक्रियाओ से डरती है, हालाकि उन्हें स्वयं इस बात से खेद होता है। बात यह है कि वे रात मे सोते वक्त आसानी से अपना कुछ समय इस काम के लिए दे सकती है। इसके विपरीत कुछ माताओं का यह भी अनुभव है कि रात को सोने के वक्त बच्चो को कहानिया सुनाने

से कोई नुकसान नही होता।

राखी 7 वर्ष की आयु तक यदि सोते वक्त कोई उत्तेजनात्मक कहानी सुन लेती या खेल खेल लेती या वैसी ही किसी घटना का विवरण सुन लेती तो रात को सोते-सोते उठकर चलने लगती थी। कई बार वह सोते-सोते चारपाई से उतरकर नीचे चली गयी और उसने देखा कि वह बैठक मे आ गयी है। कभी-कभी तो वह बिना जगे ही बैठक से थोडा-सा सहारा पाने के बाद अपने सोने के कमरे मे चली आती तो कभी ऐसा भी होता कि वह स्वय बैठक में पहुचने पर जाग जाती या कभी वह लौटते हुए जाग पड़ती। इसके दूसरे दिन वह कुछ थकी और चिन्तित-सी प्रतीत होती और इस बात का प्रयत्न किया जाता कि वह बहुत अधिक उत्तेजित न हो पाये। उसे एक बार को छोडकर सोते हुए चलने मे कभी कोई नुकसान नही हुआ। एक बार ऐसा अवश्य हुआ था कि वह जीने के ऊपर से एकदम नीचे आ गिरी। उसके शरीर में इधर-उधर बहुत-सी खरोचे आ गयी थी लेकिन सौभाग्यवश बहुत अधिक चोट नही आयी।

देवकी 14 वर्ष की आयु तक कभी सोते मे नहीं चली थी। लेकिन इसके बाद अकस्मात् उसने सोते-सोते चलना शुरू कर दिया और कुछ ही समय मे यह रोग बडे खतरनाक ढंग से बढ गया। 13 वर्ष की अवस्था मे उसे सीनियर सेकेण्डरी स्कूल मे पढने के लिए भेज दिया गया। इसके पहले उसकी देखभाल और शिक्षा-दीक्षा के लिए घर पर ही एक अध्यापिका रहती थी। इसके पहले भी वह कुछ दिनों तक एक बोर्डिंग में रह चुकी थी। देवकी ने अपने आपको कुछ विषयो मे बहुत अधिक पिछड़ा पाया। लेकिन वह बहुत अधिक होशियार थी, इसलिए उसने उन विषयों मे बड़ा परिश्रम किया जिनमे वह बहुत अधिक पिछड़ी हुई थी और कक्षा की अन्य बालिकाओ के समकक्ष आ जाने का बड़ा प्रयत्न उसने किया। वह बहुधा आधी-आधी रात पढती। नतीजा यह हुआ कि उसके स्नायु बहुत निर्बल हो गये। पहले वह कुछ अस्वस्थ-सी रही और निद्रावस्था में चलने लगी। वह अक्सर सोते-सोते नीचे चली जाती और रोशनी जलाने के बाद सवेरे के लिए सभालकर अपनी पुस्तके रख देती और फिर कोई-सी एक पुस्तक खोलकर बैठ जाती और फ्रेंच की क्रियाओं को स्फुट स्वर मे दोहराती। उसके माता-पिता बालिका की इस अवस्था से बहुत अधिक घबडा गये और उन्होने निश्चय कर लिया कि वे देवकी को रात मे बहुत अधिक देर तक नही पढने देगे और इसी निश्चय के अनुसार देवकी से कह दिया गया कि वह रात 9 30 बजे के बाद न पढे। इधर स्कूल में अध्यापिकाए उसे बराबर पहले की तरह ही घर पर करने के लिए काफी काम देती रही। ऐसा इसलिए हुआ कि घर और स्कूल के बीच कोई सहयोग नहीं था। अध्यापिकाओ को अपने अधिक काम देने का नतीजा मालूम ही नहीं हो सका। देवकी स्वय तब तक प्रसन्न नहीं हो सकती थी जब

ह पिछली कमी को पूरा न कर लेती और कई महीनो तक न पूरे हो सकने वाले लिए दिये काम के बोझ से बराबर दबी रही। उसे इससे छुटकारा तभी मिल जब उसने अन्य सहपाठिनों की भाति योग्यता प्राप्त कर ली।

प्रश्नावली

आप विभिन्न आयु के ऐसे बच्चो के लिए कौन-से कार्य तजवीज करेगे जो बिस्तर छोड न सकते हो लेकिन उठकर बैठ सकते हो ?

यह क्यो महत्त्वपूर्ण है कि बच्चा अपने ही प्रयत्नों की असफलताओ से अनुत्साहित न होने पाये ? आप इस खतरे से कि बच्चे को बिना अपनी गलतियां झूठे बहानो से छिपाने का मौका न मिले किस प्रकार बचेंगे ? ('आ' और 'ई')

क्या आपका यह विश्वास है कि यदि कोई बच्चा एक बार कोई काम कर लेता है तो वह दुबारा भी उसे कर सकता है ? ('अ' और 'आ')

किसी दिन तीसरे पहर पानी बरस रहा हो और आपको लगभग 4 वर्ष की आयु के बच्चे सभालने पड़ जाये तो आप उन्हें तीन घण्टे तक किस प्रकार प्रसन्न रखेगे ? यदि उन बच्चो की अवस्था 7 वर्ष की होगी तो आप अपनी योजना मे क्या-क्या परिवर्तन करेगे ?

क्या आपने किसी बालक या बालिका को दुःस्वप्न देखते हुए या सोते-सोते चलते देखा है ? यदि हा तो अपना वह अनुभव बतलाइये। यह भी बतलाइये कि आपकी समझ से उसका क्या कारण था और बच्चे को वह रोग किस प्रकार हुआ ? ('ई')

आप किसी स्कूल मे पढने वाले बालक या बालिका को उसकी छुट्टी का समय या दिन बिताने के लिए क्या सलाह देगे ? हर एक बच्चे को छुट्टी मिलनी क्यो आवश्यक है और बच्चे की छुट्टी की गतिविधिया उसके स्वस्थ विकास की दृष्टि से क्यो महत्त्वपूर्ण हैं ? ('इ' और 'ई')

आपकी समझ से आपकी जानकारी मे आया कोई बच्चा शोर क्यो मचाता है ? आप ऐसे बच्चे को शोर मचाने, खेलने या चुपचाप विश्राम करने मे किस प्रकार सहायता देगे ? इस प्रकार के बच्चे मे चुपचाप विश्राम करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना क्यो लाभदायी होगा ? फिर भी जिन खेलो में शोर होत है उनका बच्चों के जीवन मे क्या स्थान है ? ('अ' और 'आ')

अध्याय-5

खिलौने, कार्य और खेल

इसमे कोई सन्देह नही कि बच्चे के विकास मे खिलौनों, खेलों तथा विभिन्न प्रकार के कार्यो से बड़ी मदद मिलती है, लेकिन यदि बच्चे को उनसे पूरा-पूरा लाभ उठाना है तो ये तीनो ही चीजों का किसी भी बच्चे के लिए अत्यंत सावधानी से चयन किया जाना चाहिए जिससे वे उसके तत्कालीन विकास-कार्य मे सहायता भी कर सके और बच्चे के सारे अंगों का व्यायाम भी हो सके।

आजकल बाजार में हर आयु के बच्चो के लिए हर तरह के खिलौने मिलते है लेकिन जब तक बडे लोग उन खिलौनों की शैक्षणिक उपयोगिता से परिचित नही होगे तब तक वे उपयुक्त खिलौनो को भली-भाति नही चुन सकते।

इसलिए नीचे विभिन्न प्रकार के खेल-खिलौनों, कि शिक्षात्मक और शारीरिक उपयोगिताओ पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला जा रहा है। आशा की जाती है कि अभिभावकों को इससे अपने बच्चो की आवश्यकता के अनुरूप खिलौनों के चुनने मे सहायता मिलेगी।

सबसे पहली बात तो यह है कि अभिभावको को कभी बच्चे को बहुत ज्यादा खिलौने नहीं देने चाहिए क्योकि अधिक खिलौने देना खतरे से खाली नहीं है। यदि बच्चे के पास बहुत अधिक खिलौने हो जाते है तो वह एकाग्रता या आनंद के साथ उस खिलौनो से नहीं खेल पाता जितना काम खिलौने होने पर, क्योकि वह हर समय यही सोचता रहता है कि शायद दूसरा खिलौना उसे उस खिलौने से भी अधिक आनद दे सके जिससे वह उस समय नही खेल रहा है और इस प्रकार वह अपने खिलौने लगातार बदलता रहता है।

बच्चो के खेल मे बडो को प्राविधिक पूर्णता (Technical perfection) की आशा नहीं करनी चाहिए। यदि वह प्राविधिक दृष्टि से कोई दोषहीन काम कर लेता है तो इसका कारण है कि उसकी सामग्री ही वैसी है और उस सामग्री का वह अन्य किसी तरह प्रयोग नही कर सकता।

जहां बच्चे को प्रयोग की रहती है वहां वह प्राविधिक दृष्टि से त्रुटिहीन कार्य कभी नहीं करता

घर से बाहर खेलने के खिलौने

जो खिलौने बच्चो के लिए घर से बाहर खेलने के लिए बनाये जाते है उनका उद्देश्य शरीर के बडे अवयवो का व्यायाम करा देना होता है और इन खिलौनो से बच्चा अपने शरीर को सन्तुलित करना सीखता है। ये खिलौने बच्चे के स्वस्थ विकास मे अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

ऐसे बहुत-से खिलौने बच्चे को दौडाते है, कुछ दौड़ाने के अतिरिक्त बच्चे को विभिन्न दिशाओ मे अपना शरीर झुकाने की शिक्षा देते हैं तो कुछ खिलौने बच्चे को कुदाते है। ये सभी कार्य करने से बच्चे के रक्त का दौरा बढता है, बच्चा गहरी सासे लेता है और बच्चे के विभिन्न अगो के स्वाभाविक प्रयोग में सहायता मिलती है।

इस सम्बन्ध मे नीचे लिखे खिलौने अधिक उपयोगी प्रतीत होगे हुप्स (Hoops) (इससे बालकों को दौडने के लिए और झुकने के लिए प्रोत्साहन मिलता है और शरीर का सन्तुलन करने का उनका अभ्यास बढता है।) कूदने की रस्सी (इससे बच्चे का दौडने और कूदने का अभ्यास बढता है), गेदे, गेंदों से बच्चे दौडते, कूदते और झुकते हैं तथा साथ ही फेकने, ठोकर मारने और शरीर को सन्तुलित करने का भी उनका अभ्यास बढता है।

कुछ खिलौने बच्चो को दौडने के बजाय टहलने का अभ्यास कराते है। इन खिलौनों में लड़के, लड़कियो मे से सबसे लोकप्रिय खिलौने व्हीलबैरो (Wheelbarrow), गाडी, मोटर ट्रक या पहियेदार बक्स होता है। इनका उपयोग विभिन्न आयु के बच्चे करते है। गुड़िया की पहियेदार गाड़ी भी कुछ बच्चियों के लिए बड़ी आकर्षक सिद्ध होती है। किसी भी बच्चे को एक चीज को किसी एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाकर ले जाने में बड़ा आनन्द आता है। इसलिए यदि किसी खिलौने मे उसे ऐसा करना पडता है तो बच्चे को वह खिलौना बहुत पसन्द आता है।

कुछ बच्चो को बाल्टी और फावडा बडा पसन्द आता है, विशेषकर उन स्थानो मे जहा रेतीले गड्ढे होते है। इन खिलौनो से बच्चों की स्वस्थ गतिविधि को बडा प्रोत्साहन मिलता है। वे खेल के सिलसिले में झुकते हैं, बाल्टी भरते है, उसे उठाते है और एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते है। जल के खेल और खिलौनो से भी बच्चो को इसी प्रकार का प्रोत्साहन मिलता है।

जहां कही बाग हो वहां बच्चों के लिए कूदने का तख्ता बना देना चाहिए। (यह तख्ता लकड़ी के दो पटरो को जोडकर आसानी से बनाया जा सकता है।) इसके अलावा सन्तुलन का अभ्यास करने के लिए भी एक तख्ता बना दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार के और भी खिलौने बनाये जा सकते हैं।

रेतीला गड्ढा भी बडी बहुमूल्य चीज है और जहा जगह हो वहा यह जरूर

बनाना चाहिए इस गड्ढे का जिस ऋतु में उपयोग न हो उन दिनों या भरा-ढका भी जा सकता है

पैडिलो या लीवरों से चलने वाले खिलौनों को भी बच्चे बहुत ज्यादा पसन्द करते है। पैडिल के खिलौनो मे सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसमें बच्चे के शरीर का सारा बोझ पैरो पर पडता है जिससे पैरो के मजबूत होने मे बडी सहायता मिलती है। पैडिल वाले खिलौनो को खरीदते समय सबसे अधिक ध्यान रखने की बात यह है कि वह जिस बच्चे के लिये लिया जाये खिलौने का साइज उसके उपयुक्त हो। यदि खिलौना बडा या छोटा हुआ तो बच्चे को उसकी वजह से शारीरिक कष्ट हो सकता है। तीन पहिए की साइकिल का पैडिलाकार छोटे बच्चो के लिए सबसे अधिक उपयुक्त खिलौने होते है।

छोटी मोटरे तथा काठ के घोडे, जिनमें बच्चा सीधा बैठकर पैरों द्वारा खिलोने को आगे बढाता है उसके लिए बड़े लाभदायक खिलौने होते है, खासतौर से उस बच्चे के लिये जो बहुत मोटा होता है और आसानी से चलने-फिरने के लिए अपने पैरो का उपयोग नही कर पाता।

स्कूटर (यह एक ऐसा खिलौना होता है जिसमे एक तख्ते के नीचे दो पहिए लगे होते है। एक पैर तो तख्ते पर रख लिया जाता है। दूसरे पैर से इसे चलाया जाता है।—अनु.) बच्चो के लिए अच्छे नहीं होते क्योकि उनसे उसके शरीर का केवल एकागीय विकास ही हो पाता है। इसलिए उनका प्रयोग जहा तक हो सके न करना ही अच्छा होता है।

घर में खेले जाने वाले खेल

(क) निर्माण—बच्चो को निर्माण का काम करने मे बड़ा आनंद आता है। निर्माण कार्य में बहुत प्रारंभ से ही उनमें रुचि पैदा हो जाती है और फिर आगे कई वर्षो तक यही रुचि बनी भी रहती है। निर्माण सम्बन्धी उनकी खिल्लौट में आधे इच से लेकर छ इच तक की लकडी की ईटे (टुकडे), तागे की खाली रीले, खाली डिब्बे, चौडे और गोल तथा लम्बे लकड़ी के विभिन्न लम्बाइयो और आकार के टुकड़े होने चाहिए।

लकडी के टुकडों के ऐसे छोटे-छोटे बक्सो से भी मदद मिल सकती है जिनमे गोल और पोले टुकडे हो साथ ही तिकोने और अर्ध वृत्ताकार टुकडे भी हो। लेकिन यदि इस प्रकार का बक्स नही मिले तो भी कोई हर्ज नही है।

जब भी संभव हो बच्चों को बनाने का काम जमीन पर ही करने दिया जाये। बच्चे को जितनी ही अधिक जगह दी जायेगी उतना ही अच्छा रहेगा। इस प्रकार का कार्य करने से बच्चे के अनुपात का विवेक विकसित होता है उसकी निपुणता बढ़ती

है और वह आकार-प्रकार का अनुमान करने का अभ्यस्त होता जाता है। साथ ही यह भी भय नहीं रहता कि उसकी आखो या किन्ही अगो पर विशेष जोर पड़ेगा।

(ख) खिलौने बनाना—मिट्टी या प्लेस्टीसाइन से खिलौने बनाने में तीन वर्ष की उम्र से ही बच्चों को बडा मजा आने लगता है और उसकी यह रुचि काफी समय तक बनी रहती है। बच्चे के लिये यह बडा उपयोगी कार्य है। वह जो कुछ देखता है इसके जरिए उसे ठोस रूप दे सकता है। किसी बच्चे के हाथ से बनाये गये खिलौनो को देखकर यह बतलाया जा सकता है कि वह जो कुछ चीजे देखता है उनमे से किनका और किस प्रकार का उस पर सबसे ज्यादा असर पडता है। जिन बातो की तरफ उसका ध्यान नहीं गया होगा—वे उसके बनाये खिलौने मे नही होगी।

अधिक उम्र के बच्चों के लिए प्लेस्टीसाइन के बजाय मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है क्योकि मिट्टी से बनाये गये खिलोनो को सुखाया, पकाया और रगा जा सकता है। प्लेस्टीसाइन छोटी उम्र के बच्चो के लिये अधिक उपयोगी होती है क्योकि इसका उपयोग हर वक्त किया जा सकता है और ज्यो-ज्यो बच्चा इसका प्रयोग करता जाता है त्यो-त्यों वह मुलायम (मिट्टी की तरह सख्त नहीं) होती जाती है।

बच्चो को रोटी या केक बनाने मे मदद करने में भी बडा आनन्द आता है। इसके लिये गुधा हुआ आटा बडा अच्छा साधन है। वह गुधे आटे से मनचाही शक्ल की रोटी या केक बना सकता है और इनको अपनी मा द्वारा चूल्हे पर सेंकवा भी सकता है। इस खेल में बच्चे को हाथो और बर्तनो की सफाई की आवश्यकता की शिक्षा बडी आसानी से दी जा सकती है।

(ग) काठ का काम—कुछ बच्चो को काठ के टुकडो को जोडने में बडा मजा आता है। बड़े बच्चों को लकड़ी छीलकर उनके खिलौने बनाने मे ही बड़ा सुख मिलता है। किसी भी प्रकार के काठ के काम मे ठीक-ठीक सोचने की शक्ति, कठोर परिश्रम, चतुरता, सावधानी और कौशल की अनिवार्यता की आवश्यकता पड़ती है। इसलिये इस प्रकार के काम से बच्चो को अमूल्य शिक्षा मिलती है। जब भी बच्चे को लकडी का काम करने का अवसर मिले उसे इस अवसर से लाभ उठाने के लिये खूब प्रोत्साहित करना चाहिए। यह भी अच्छा होगा कि बच्चे को काठ का काम करने के लिये सामान ही खरीद दिया जाये। लेकिन यह सारी सामग्री बहुत अच्छी किस्म की होनी चाहिए क्योकि निम्नकोटि के औजारो से काम लेना कठिन होता है और उनका फल हर तरह से असन्तोषकजनक होता है।

(घ) कागज काटने, रंग भरने और चित्रकारिता के खेल—बच्चो को बडी आरभिक अवस्था से ही पेंसिल, खडिया और रंगों का प्रयोग करने मे विशेष आनन्द आता है। उनके प्रारभिक प्रयत्नों मे किसी भी वस्तु को चित्रित करने का प्रयास नही होता बल्कि पहले वे इन चीजो का प्रयाग केवल रग का आनन्द प्राप्त करने के लिए

करते है। आगे चलकर भले ही बच्चे से कोई खास चीज दिखलाकर उसकी शक्ल बनाने के लिये कहा जा सकता है। देर या सवेर, हर हालत में बच्चा अन्त मे इस परिणाम पर अवश्य पहुचता है कि वह कोई-न-कोई शक्ल जरूर बना सकता है। इस कल्पना मात्र से उसे नवीन और विस्मयकारी अनुभव होता है। कुछ समय तक बच्चे के चित्र वस्तुत चित्र न होकर प्रतीकमात्र होते हैं और केवल बच्चो की उस वस्तु की जानकारी का ही प्रतिनिधित्व करते है। पहले बच्चा एक प्रतीक का प्रयोग आदमियों के लिए करता है और दूसरे का जानवरो के लिए, लेकिन इसके बाद शीघ्र ही दोनों का अन्तर स्पष्ट हो जाता है। लड़कियों के बाल भी वह दिखलाने लगता है और लडको के बालो को दिखलाना जरूरी नहीसमझता। स्त्रियो को वस्त्र पहने दिखलाता है जब कि पुरुषो को हैट लगाये दिखला देता है।

धीरे-धीरे बच्चे मे दृश्यात्मक अनुपात का विवेक विकसित होता है और वह फिर ऐसे चित्र नहीं बनाता जिनमें केवल असबद्ध वस्तुओ का ही चित्रण किया गया हो। हो सकता है—बच्चे मे यह विवेक उत्पन्न होते-होते उसकी आयु आठ-नौ वर्ष की हो जाये। कुछ बच्चे शायद और बडे हो जाने पर यह विवेक उत्पन्न करने मे सफल हो सके।

पानी के रंगों का प्रयोग बच्चो के लिये बड़ा आकर्षक होता है लेकिन बिना बडो की उचित देखभाल के उनके प्रयोग मे बच्चो को बडी कठिनाई का सामना करना पड सकता है। बहुत-से बच्चे चित्र रगने का अनुभव उन चित्रो को रंगकर प्राप्त करते है जो चित्र पुस्तको मे दिये रहते हैं। वे इन खाली चित्रो को पुस्तक मे दिये हुए रंग को देख-देखकर रगते है। यह अनुभव बच्चे के लिए बडा मनोरंजक होता है। लेकिन बच्चे को आगे चलकर बिना पेसिल से चित्र बनाये केवल रग द्वारा चित्र बनाने के लिए उत्साहित करना चाहिए। आरभ मे भी बच्चे को अच्छे किस्म के रग दिये जाने चाहिए। क्योंकि खराब किस्म के रग उपयोग में आने पर अच्छे नहीं सिद्ध होते और उनके परिणाम भी असन्तोषजनक सिद्ध होते है। इस संबध मे रीव्स के रगो का नाम लिया जा सकता है। ये सस्ते भी होते है और डिब्बे का कोई रंग खत्म हो जाने पर उसे सस्ते दामो में खरीदा भी जा सकता है। लाल, नीले, पीले, काले, भूरे और सफेद जैसे आवश्यक रंगों के बक्स खरीद लेना चाहिए। इनके मेल से अन्य रग आसानी से बनाये जा सकते है। बच्चे को अपने हाथ से कई रग मिलाकर एक रग बनाने मे भी आनन्द आयेगा। दो प्रकार के लाल और नीले रंग भी मिलते हैं। इनकी विभिन्न रंगों को बनाने के लिये बच्चे को आवश्यकता पडती है। बच्चे को रगो का मिलाना अच्छी तरह बता देना चाहिए। ऊंट के बालो के ब्रुश बहुधा कीमती पडते है लेकिन वे अपेक्षाकृत अधिक संतोषजनक होते है तथा सस्ते ब्रुशो की अपेक्षा अधिक समय तक चलते भी हैं

बच्चो के हाथ मे पोस्टरो के लिये काम मे लाये जाने वाले रग को देना तुलनात्मक दृष्टि से अधिक अच्छा होता है क्योकि इन रगो का प्रयोग आसानी से किया जा सकता है और वे चौडी सतहो के स्पष्ट और गहरे होने के कारण अधिक उपयुक्त होते हैं।

कागज काटकर खिलौने बनाना ऐसा दूसरा काम है जिससे बहुत छोटा बच्चा नही कर सकता लेकिन चार-पाच वर्ष की अवस्था के बालक को इस कार्य मे बड़ा ही आनन्द आयेगा। पाच वर्ष के बालक को तेज कैंची देने से वह अधिक सफलतापूर्वक कागज काटने का काम करेगा और उसके बनाये काम मे सफाई भी हो सकती है। ऐसा बच्चा ज्यादातर कैंची से काम लेना चित्रो को काटकर शुरू करता है लेकिन बच्चे को इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वह पहले बिना पेंसिल से बनाये ही केवल कैंची की सहायता से कागज की कोई शक्ल काटे। बच्चो को अपने चित्रो को चिपकाने मे भी मजा आता है, इसलिये उनको भूरा कागज और लई (जो आटे और पानी से घर में उबालकर बना ली गयी हो) दी जा सकती है।

(ङ) कागज और फट्टे के खिलौने बनाना—कागज या फट्टे के खिलौने बनाने का काम बच्चो के लिए बड़ा दिलचस्प होगा। कागज के खिलौने बनाना अपेक्षाकृत आसान होता है लेकिन जरा मजबूत खिलौने फट्टे की सहायता से ही बनाये जा सकते है। थोडे-से ही परिश्रम से बच्चा कागज की झालरे, पखे, लिफाफे आदि बनाना सीख जाता है। इसी प्रकार वह फट्टे के मकान, बक्स, मेज-कुर्सी आदि बनाना भी सीख लेता है। कागज या फट्टे किसी भी प्रकार के खिलौनों को पानी के रगों से रगा भी जा सकता है।

(च) सुई का काम, बुनना, काढ़ना आदि—आरम्भ मे छोटी बच्चियो को सीने का काम सिखाने के लिए ऐसी सुई दी जानी चाहिए जिसकी आंख बडी हो और किसी भड़कीले रग की मोटी-सी ऐसी रुई देनी चाहिए जिसे वह मनचाहे ढंग से आसानी के साथ काट सके। पहले तो लडकी थोडा-सा सामान बरबाद भी करेगी लेकिन शीघ्र ही उसका अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये प्रयोग करना शुरू कर देगी। वह इसी सामान से गुडियो का घर बना लेगी, बडे दिन के अवसर पर उपहार देने की सामग्री तैयार कर लेगी और इसी प्रकार के और भी बहुत-से काम करने लगेगी। शुरू से ही सिलाई का कडा काम देने के बजाय आरम्भ मे यह हल्का काम देना अच्छा होगा। इसमे सन्देह नहीं कि बच्ची को आवश्यकतानुसार अपनी मा के निर्देश समय-समय पर मिलते रहने चाहिए।

6 वर्ष से ऊपर की आयु वाली बालिकाओ के लिये फ्रेम में बुनाई का काम आकर्षक लगेगा। फट्टे का फ्रेम बनाने में मा की सहायता की आवश्यकता आरम्भ मे अवश्य पडेगी लेकिन बच्ची को रग चुनने और डिजाइन की पूरी छूट मिलनी

चाहिए। काम समाप्त हो जाने पर भी मा की सहायता की जरूरत उसे अंतिम स्वरूप देने के लिये पड सकती है।

टोकरी बनाने के काम में भी 6 वर्ष और इससे अधिक आयु वाले बच्चो को आनन्द आता है। यह काम वेंत, सन या सुतली से आरम्भ किया जा सकता है। बाद मे बडी चटाइयां तथा टोकरियां बनाना भी बतलाया जा सकता है। बच्चे जैसे ही साधारण ढग से बुनना सीख लेते है इसके बाद वैसे ही उन्हें कुछ कठिन ढंग की बुनाई भी आ जाती है।

बेत की बुनाई के लिये पर्याप्त कुशलता और मजबूत अगुलियों तथा हाथो की जरूरत पडती है—इसलिए बेंत का काम 8 साल से नीचे के बच्चों के लिए उपयुक्त नही होता। लेकिन वैसे यह काम बडा अच्छा होता है। इसमे बच्चा बडी जल्दी गति प्राप्त करता है और परिणाम भी काफी सफलतापूर्ण होते हैं। आजकल बाजारो मे लकडी के ऐसे साचे मिल जाते हैं जिन पर बेत का काम आसानी से किया जा सकता है। ये ढाचे ट्रे, टोकरियो आदि बनाने के लिये जरूरी होते है लेकिन कुछ ऐसी भी टोकरिया बनायी जा सकती है जिनमे ऐसे ढांचो की कोई जरूरत ही नही पडती।

बुनाई (Knitting) का काम भी कुछ बच्चों को बड़ा दिलचस्प लगता हे। लेकिन इस काम मे आरम्भ मे उनको बडी सहायता की जरूरत पडती है क्योकि बुनाई का काम काफी झझटी होता है। इसमें कोई भी नौसिखिया तब तक कोई प्रयोग नहीं कर सकता जब तक कि वह बुनाई की कला को पूरी तरह सीख न ले।

कल्पित खेलों के लिये खिलौने

किसी भी बच्चे के लिये कल्पित खेल उसके विकास मे बड़े सहायक होते है क्योकि उनसे बच्चे की कल्पना को बल मिलता है और ऐसे खेल बच्चे को अपना ऐसा कल्पना जगत् बनाने में मदद करते है जहां वह अपनी इच्छानुसार जो चाहता है करता है और नित्य के जीवन की कठिनाइयो से परेशान नही होता। बच्चे अक्सर ऐसे खेल बिना किसी सामग्री के ही खेल लेते है और न केवल विभिन्न प्रकार की सामग्रियों की कल्पना ही नही कर लेते हैं बल्कि अभिनेताओ की कल्पना भी कर लेते है। फिर भी खिलौनो से तो उन्हे प्रेम होता ही है जिनसे उनका कार्य अपेक्षाकृत आसान हो जाता है।

ऐसी गुडिया जिनको कपडे पहनाये और उतारे जा सकें, बालोदार जानवर, गुडियो के घर, गुडियो के चाय के बर्तनो के सेट, भोजन बनाने के बर्तन, फर्नीचर, खिलौनो की दुकान, तराजू, इजन, ट्रेन, स्टेशन, पोर्टर, खेतो के लिये छोटे-छोटे जानवर आदि इस सम्बन्ध में उपयोगी होते है।

नर्से, पोस्टमैन, स्टेशन मास्टर, स्काउट आदि को पहनाने के लिये यदि वर्दिया

मिल जायें तो बच्चो की खुशी का क्या पूछना है ।

नगाडे, ढोल, सीटियां, अण्डे आदि भी बच्चो को खुश कर देते है। फिर भी कल्पना के खेलो में बच्चों को खिलौनों की बहुत जरूरत नही पडती और यदि वे उन्हे न भी मिले तो भी बच्चे उनकी अधिक परवाह नहीं करते और इससे बच्चो को कोई खास नुकसान भी नहीं होता। ऐसे खेलों मे बच्चो को बहुत ज्यादा खिलौने देने भी नही चाहिए क्योकि ऐसा करने से उनकी कल्पनाशीलता के पनपने में बडी बाधा पडती है।

नाटक

बच्चे अपने जीवन के आरम्भिक काल मे 'माइम' (एक प्रकार का कठपुतली का तमाशा) से गुडियो तथा अन्य खिलौनो की सहायता से अभिनय करना सीख लेते है। इसके बाद वे बाल-पाठशालाओ मे सक्षिप्त नाटिकाओ द्वारा, जो प्रायः कविताओ और प्रहसन के रूप मे होती है, अभिनय का अत्यन्त उत्साहपूर्वक अनुभव प्राप्त करले हैं। कभी-कभी वे अति साधारण वेशभूषा तथा नाटकीय सामग्री का भी प्रयोग करते है, कभी इन चीजों को बिल्कुल ही प्रयोग नही किया जाता। ऐसे खेलो मे बच्चो को अधिक-से-अधिक भाग लेने देना बुद्धिमत्तापूर्ण होता है। उनको वेशभूषा, परिधान आदि की व्यवस्था और उसके प्रयोग की भी यथाशक्ति अधिक-से-अधिक छूट होनी चाहिए। ऐसा करने से बच्चो पर अधिक शिक्षात्मक प्रभाव पडेगा। घर और स्कूल दोनो स्थानों में बच्चो के नाटक एव अभिनय सम्बन्धी कार्यो को सहानुभूतिपूर्ण दिलचस्पी से देखा जाना चाहिए।

बच्चों की इन्द्रियों को प्रशिक्षित करने वाले खिलौने और यंत्र

ऐसे भी बहुत-से खिलौने आजकल मिलने लगे हैं जिनका केवल एक विशेष और निर्दिष्ट पद्धति द्वारा ही उपयोग किया जा सकता है और जिनका उद्देश्य बच्चे की किसी विशेष इन्द्रिय को प्रशिक्षित करना होता है। ये खिलौने बच्चे की कल्पना-शक्ति को उर्वर बनाने के लिये नही होते है बल्कि इनका उद्देश्य बच्चे को शान्त करना होता है जिससे उसमे एकाग्रता की शक्ति बढ़े। लेकिन अभिभावको को यह ध्यान रखना चाहिए कि एक बार मे केवल एक ही यन्त्र का प्रयोग किया जाये जिससे बालक की केवल किसी एक इन्द्रिय का ही व्यायाम हो।

इस प्रकार की यन्त्र सामग्री का मॉण्टेसरी शिक्षा पद्धति मे अत्यन्त सावधानी से वर्गीकरण किया जा चुका है। इसकी सहायता से बच्चा अपनी गति के अनुसार आगे बढता चलता है। इनमे ऐसे यन्त्र हैं जिनकी सहायता से बच्चे को साइज, 'आकार शक्ल रग वजन स्वर और सुगन्धों तक को समझने की शिक्षा दी जा

सकती है लेसों को बाधने तथा बटनो का लगाने का अभ्यास कराने के लिए वहा फ्रेम भी होते है। इस बात की सम्भावना से तो इन्कार ही नहीं किया जा सकता कि बच्चा एकान्त और विश्राम के क्षणो मे कुछ बहुमूल्य खोजे भी कर सकता है और वह इस प्रकार के यन्त्रो के प्रयोग से काफी प्राविधिक कौशल प्राप्त कर सकता है। लेकिन इस प्रकार की यन्त्र सामग्री अत्यन्त व्ययसाध्य होती है और थोड़े ही दिनो मे बेकार भी हो जाती है, इसलिये यह घरो के बजाय स्कूलो के लिए ही अधिक उपयोगी होती है। इसी से सबंधित कुछ सस्ती सामग्री भी बाजारो में मिलती है लेकिन इसके खरीदने मे बहुत सावधानी रखने की आवश्यकता है। काठ या धातु के फ्रेम के वजाय वही सामग्री फट्टो पर भी मिलती है लेकिन उपयोग मे वह सन्तोषजनक सिद्ध नही होती, हालाकि सस्तेपन की वजह से उसकी तरफ स्वभावत ध्यान जाता है।

जिगसॉ पजिज्ल्स (Jigsaw Puzzles) और इसी प्रकार के और भी बहुत-से खिलौने बच्चो को आकार और शक्लो की शिक्षा देने के काम में बडे उपयोगी सिद्ध होते है और बच्चो द्वारा पसन्द भी किये जाते है।

डोमीनोज (Dominoes) द्वारा बच्चों को अको के पहचानने में सुविधा होती है और बच्चों की सामग्री मे यह बहुमूल्य चीज सिद्ध होती है।

चित्र-पुस्तकें—चित्र-पुस्तको का चयन बडी सावधानी से किये जाने की आवश्यकता है। इनमे केवल अच्छी चित्र-पुस्तके ही होनी चाहिए। इन चित्र-पुस्तको मे ऐसे चित्र होने चाहिए जो एक विशेष अवस्था वाले बालक के विकास मे सहायता कर सके। आजकल बच्चों के लिये बहुत-सी ऐसी पुस्तकें मिलने लगी हैं जिनको निश्चिन्तता से बच्चो के हाथ मे दिया जा सकता है लेकिन पहले स्वय इन पुस्तको को पढ लेना अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण होगा जिससे बच्चे के हाथ मे उसके विकास मे बाधा डालने वाली या किसी भी वजह से उसे दुखी कर देने वाली कोई पुस्तक न जा सके।

विविध खिलौने

(क) बुलबुले उड़ाने के लिए पाइप—बुलबुले उड़ाने के लिए मिट्टी के पाइपो के बजाय काठ के सीधे और मजबूत पाइप अच्छे होते हैं। इनकी शक्ल भी अच्छी होती है और ये ज्यादा दिन चलते भी है।

(ख) कौशल के खेल—अनेक प्रकार के कौशल के खेल भी आजकल बाजारो मे मिलते है। चौखडे, गेंद फेंकने के खेल, पासो के खेल, फूंक से खेले जाने वाले खेल, स्किटिल्स वगैरह का नाम लिया जा सकता है। इनमें से कुछ खेल बहुत सामान्य ढग से बने होते है और उन्हे अच्छा नही कहा जा सकता और उनका शिक्षात्मक उपयोग

भी कुछ नही होता लेकिन कुछ अन्य खेलो मे सचमुच कौशल की आवश्यकता होती है और उनसे पर्याप्त मनोरंजन भी होता है। लेकिन इस तरह के खेल बच्चो को बहुत कम दिये जाने चाहिए और इनको देने के पहले बडी सावधानी से चुना जाना चाहिए।

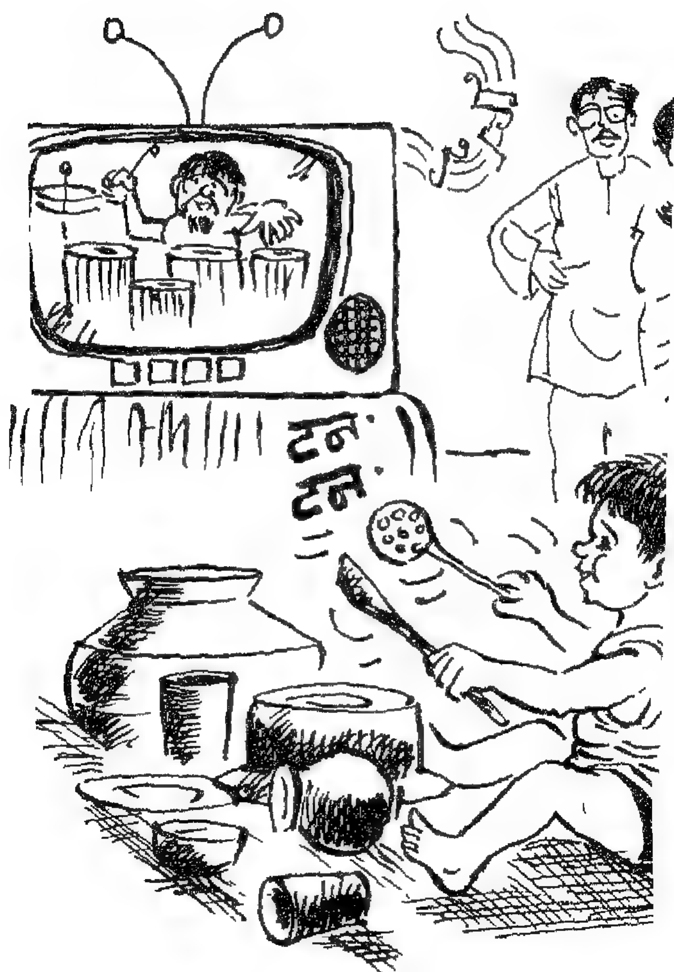
(ग) **निर्माण कार्य की सामग्रिया**—ऐसी सामग्री जिनसे विभिन्न प्रकार के मॉडल बनाये जा सके वच्चे की निर्माण की शक्ति और कौशल को बहुत बढा सकते है। मेकानो सेट्स (Meccano Sets) जेसी चीजे बच्चे के लिये बहुमूल्य सिद्ध होगी।

आजकल लकडी के कुछ ऐसे टुकडे भी बाजारों मे आने लगे है जिनको मकान, पुल, गुडियो, गुड्डों के फर्नीचर आदि बनाने के लिये जोडा भी जा सकता है। प्रारम्भ मे तो बच्चे इनसे बहुत अधिक आकृष्ट होते है लेकिन यदि इनकी कारीगरी अच्छी न हुई तो इनसे जो चीजे बनायी जाती है वे सन्तोषजनक रीति से टिक नही पाती।

(घ) **तैयार चित्र**—आजकल ऐसी भी बहुत-सी चीजे मिलने लगी है जिनकी सहायता से बच्चे बहुत जल्दी चित्र बना सकते है। तैय्यार चित्रो से पहले-पहल तो बच्चे बहुत जल्दी आकृष्ट होते हैं लेकिन उनका यह आकर्षण बहुत जल्दी ही समाप्त हो जाता है। इन चित्रो को दूसरे कागज पर उतारना कुछ बच्चो के लिये वडा आनन्ददायी कार्य होता है और इसमें काफी निपुणता की भी आवश्यकता पड़ती है।

संगीत

(क) **गाना और तालयुक्त क्रियाएं आदि**—प्रत्येक बच्चे को सगीत सुनने का पर्याप्त अवसर मिलना चाहिए जिससे वह गाने और ताल का अभ्यास कर सके। यदि घर में पियानो हो तो कोई भी बडा आदमी बच्चो के लिये उसे बजाकर अभ्यास करा सकता है। स्कूल में जो यह कार्य और भी सुविधापूर्वक हो सकता है। यदि स्कूल मे सगीत शिक्षा की व्यवस्था हो तो घर मे सगीत श्रवण की कोई व्यवस्था न हो तो भी कोई हर्ज नही। वैसे घर मे सगीत की व्यवस्था होने से बच्चे का बड़ा मनोरजन हो जाता है—इसमे कोई शक नही। बच्चे नाचना और उसकी धुनो को बहुत जल्दी सीखते है—शर्त यही है कि उन्हें इसके लिये प्रोत्साहित किया जाये। बच्चों की राग मे गाने की योग्यता मे बडा अन्तर होता है। कुछ बच्चे तो छोटी-सी ही अवस्था मे बिना किसी अधिक सहायता के राग के अनुसार गा लेते हैं जब कि कुछ बच्चों को नौ-दस वर्ष की अवस्था मे भी रागयुक्त गाना गाने मे कठिनाई होती है। कुछ अभिभावको की यह धारणा होती है कि यदि कोई बालक पाच-छः वर्ष की अवस्था मे राग सहित नही गा सकता तो वह आगे कभी न गा सकेगा। यह बहुत बडी भूल है। यदि बच्चा आरंभिक अवस्था मे ही गा न सके तो उससे निराश होने की कोई बात नही है क्योकि जिस प्रकार बच्चा शुरू-शुरू मे एकदम शुद्ध नही बोल सकता उसी प्रकार यह भी सभव है कि वह आरम्भ मे ही राग सहित गा न सके।


टन
टन

(ख) सामूहिक वाद्य संगीत (आर्केस्ट्रा)—बच्चो को सामूहिक वाद्य संगीत मे भाग लेना बडा अच्छा लगता है। यदि उन्हे उचित ढग के बाजे मिल जायें तो वे सामूहिक वाद्य संगीत (आर्केस्ट्रा) मे बडी छोटी आयु से ही भाग लेना शुरू कर देते है। बाद मे वायु और तन्तु वाद्यो का भी प्रयोग सीख सकते है। अधिकाश बच्चे ताल को बडी जल्दी समझ लेते हैं और यह अनुभव बडा उपयोगी होता है। सामूहिक बाल-वाद्य सगीत में भाग लेने से प्रत्येक बालक को समूह के साथ काम करने की शिक्षा मिलती है। वह संयुक्त प्रयत्नों का महत्त्व समझता है और अपने आपको समूह में विलयित कर देने का आनन्द अनुभव करता है।

(ग) ग्रामोफोन—ग्रामोफोन बढिया सगीत सुनने का बड़ा अच्छा साधन है। साथ ही बच्चे इसका आनन्द भी खूब लेते है। छोटे बच्चों को बालशालाओ की तुकबंदीयुक्त कविताए सुनना बड़ा अच्छा लगता है। उन्हे प्रादेशिक सामान्य प्रचलित लोकप्रिय धुनें भी अच्छी लगती है। लेकिन बडी आयु के बच्चो को प्रसिद्ध सगीतज्ञो की बालोपयोगी चीजे सुनवानी चाहिए।

(घ) वायरलेस—आजकल देश के प्राय. अधिकाश घरों मे वायरलेस सेट्स स्थान पा गये है। इनके जरिये बच्चो को सगीत की अच्छी शिक्षा दी जा सकती है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि रेडियो तभी बजाया जाये जब घर के प्रत्येक आदमी को उसे सुनने की सुविधा हो। बातचीत इस प्रकार न की जाये कि उससे रेडियो सुनने मे बाधा पड़े। यदि ऐसी बाधा पडी तो बच्चे की यह आदत पड़ जायेगी कि वह आधी बात मनेगा और समझेगा कुछ भी नही।

लिखना-पढ़ना, और गिनती

इसमे कोई सन्देह नही कि औसत वयस्क व्यक्ति के जीवन में लिखने-पढने और गिनती जानने का बडा महत्त्व होता है। लिपिबद्ध शब्दों द्वारा ही ज्ञान सचित किया जाता है और वर्तमान अतीत तथा भविष्य से सम्बद्ध रहता है। पढकर ही मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अंकों की गणना से ही हम अपने दैनिक जीवन मे होने वाले लेन-देनो की छोटाई-बडाई समझते हैं। इन लेन-देनों को हम अको द्वारा ही प्रकट कर सकते है। यद्यपि कुछ लेन-देन बिना इनकी सहायता के भी बतलाये जा सकते है।

यद्यपि ये तीनो ही चीजे किसी भी वयस्क व्यक्ति के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है लेकिन बच्चा इनका महत्त्व धीरे-धीरे करके ही समझता है। वह अको मे बहुत जल्दी दिलचस्पी लेने लगता है किन्तु वह काफी समय तक कोई भी कल्पनात्मक गणना नही कर पाता। हालांकि कठिन अक प्रक्रियाए भी यदि वे भौतिक रूप मे है तो वह उन्हें कर डालता है लिखित प्रतीकों की से बच्चे को कठिन गणना

कार्यो के लिए आकिक साधनो की शिक्षा नहीं देनी चाहिए। ऐसा तब तक नही करना चाहिए जब तक बच्चा सामान्य अको के क्रम को न समझ ले और वह कठिनतर गणना कार्यो के लिये अंको के अतिरिक्त प्रतीकों की सहायता आवश्यक न समझे। उदाहरण के लिये यदि बच्चा यह समझता है कि 29 और 8 का जोड़ 37 होता है तो उसे यह समझने मे अधिक कठिनाई नही होनी चाहिए कि बहुत-सी अकराशियो को इकाई, दहाई और सैकडे आदि के हिसाब से एक के नीचे एक रखकर जोड़ा जा सकता है। लेकिन उसे दहाई को हासिल लगाने की विधि बिना यह समझाये बतायी जाती है कि दहाई क्या है। इससे बच्चा चकरा जाता है और उसे सिवाय हानि के कोई भी लाभ नहीं होगा।

इसी प्रकार एक अकराशि मे दूसरी अकराशि को उस समय घटाने की प्रक्रिया बच्चे को कभी नहीं बतलानी चाहिए जब तक ऋण करने का सिद्धान्त न समझ ले। बच्चे के लिये सिद्धान्त का ही समझ लेना आवश्यक नही है बल्कि यह भी आवश्यक है कि वह दहाई की अकराशियों तक के घटाने के सवाल आसानी से कर ले। उदाहरण के लिये उसका यह जानना आवश्यक है कि 36 में से 9 को या 27 मे से 8 को घटाया जाये तो क्या बचेगा। बिना इतना जाने वह 'ऋण लेने या ऋण चुकाने' की पद्धति को भली-भाति कभी नही समझ सकता। यही बात गुणा और भाग की सक्षिप्त पद्धतिया सिखलाते समय भी ध्यान में रखनी चाहिए। बच्चे को यह अवश्य ज्ञात होना चाहिए आठ तिया (या तीन अट्ठे) 8 और 8 और 8 का योग होता है। तभी वह पहाड़ों की उपयोगिता भली-भाति समझ सकता है और यह भी जान सकता है कि पहाडों की जानकारी से कितना समय बच सकता है। बच्चे को यह भी समझना चाहिए कि गुणा का अर्थ किसी वस्तु का बढता जाना है और भाग का अर्थ किसी चीज का कम होते जाना है। उदाहरण के लिये भाग द्वारा आप जान सकते हैं कि 24 को यदि 8 आदमियो के बीच बराबर-बराबर बाटा जाये तो प्रत्येक को कितना मिलेगा या 24 में से 8 को कितनी बार निकला जा सकता है।

पहली बार 24 मे से 8 निकालकर आप हर व्यक्ति को एक-एक दे सकते है। इसी प्रकार दूसरी बार भी शेष 16 मे से 8 निकालकर एक-एक दूसरी बार भी हर व्यक्ति को दे सकते है और अन्त मे बचे हुए 8 मे से एक-एक अंतिम बार भी हर आदमी को दे सकते है।

बच्चे के लिये यह समझ लेना बडा जरूरी है कि सामान्य अक गणनाओं की वास्तविक पद्धति क्या है बजाय इसके कि वह कठिन गणनाएं तो करने लगे लेकिन जिस पद्धति का व्यवहार करे उसे भली-भाति न समझे। यह आवश्यक है कि बच्चा सामान्य गणनाएं मुह जबानी ही करने लग जाये। उदाहरण के लिये 20 तक जोडने या घटाने के लिये उसे कागज कलम की जरूरत नही पडनी चाहिए इस चीज को

उसे अपने आप जबानी ही कर लेना चाहिए। इसके बाद आगे की गणानाएं वह कभी मुह जबानी और कागज पर अपने आप करने लगेगा।

अभिभावक इस मामले मे अपने बच्चो की दृढ आधारशिला रखने मे सहायता कर सकते हैं। जब भी मौका हो उन्हे अपने बच्चो को नापने, तोलने और गिनने के लिये उत्साहित करना चाहिए। अक्सर माता-पिता के लिए यह बडा कठिन होता है कि वे आगे चलकर अपने बच्चो की मदद करे। यह कार्य उस समय और भी जटिल हो जाता है जब उनकी पद्धति स्कूल की शिक्षण पद्धति से भिन्न हो जाती है। इसलिए सामान्यत: बच्चे को तभी सहायता करनी चाहिए जब वह अपने अभिभावकों मे से किसी से मदद मागे। ऐसी अवस्था मे उन्हे यह भी जान लेने का प्रयत्न करना चाहिए कि स्कूल मे किस पद्धति से पढ़ाया जा रहा है। यदि ऐसा करना कठिन हो तो बालक को गणना विशेष का मूल सिद्धान्त समझा देना चाहिए और यह सिद्धान्त समझाते हुए यह बात भी जानने का प्रयत्न करते रहना चाहिए कि बच्चे की उलझन वस्तुत क्या है ?

पढ़ने-लिखने मे बालक की रुचि अंकों में रुचि उत्पन्न होने के बाद होती है। बच्चा लिखित शब्दो की प्रकृति के सम्वन्ध मे अपनी चित्र-पुस्तक के ज्ञान से सबसे पहले जानकारी प्राप्त करता है, जिन्हे वह कई-कई बार पढता है और उसकी यह जानकारी बालशालाओं की सुपरिचित तुकबदियो से भी बढती है जिनके शब्दो से बार-बार दोहराने के कारण वह परिचित हो जाता है। इसी प्रकार पोस्टरो को देखने से भी उसका ज्ञान बढता है। उसके मित्र जो पत्र उसे लिखते है उनसे भी उसकी जानकारी बढती है।

पढना सिखाने का यह शायद सबसे आदर्श तरीका है क्योकि इसमें बच्चा ऊब नही पाता क्योकि उसे सहायता तभी मिलती है जब वह सहायता प्राप्त करने के लिये इच्छुक होता है। बच्चों को पढने की जो शिक्षा आजकल दी जाती है—यदि वह शिक्षा न दी जाये और पढ़ना सीखने का भार बच्चे की इच्छा पर ही छोड दिया जाये तो भी बच्चा उतना ही पढना सीख लेगा जितना आजकल की शिक्षा के बाद सीखता है। आजकल अभिभावक अपने बच्चे को पढ़ने मे इसलिए भी मदद नहीं करते कि वे डरते हैं कहीं उनका और स्कूल का पढ़ाने का तरीका बिल्कुल अलग-अलग न हो। परन्तु बच्चा यदि कोई बात पूछे तो उसे बतलाने मे सकोच नही करना चाहिए। इसमे बच्चे के चकरा जाने की समस्या पैदा नहीं होगी। खासतौर से उस समय जब वे बच्चे को वह बतला दे कि बडो के पढ़ने का यही तरीका है। बहुत-से स्कूलो मे अक्षरो का 'स्वर' बतलाया जाता है, उनका 'नाम' नहीं बतलाया जाता। और इन अक्षरो को पहले स्वरात्मक शब्दो मे पढाया जाता है। कुछ स्थानों मे पूरे-पूरे वाक्य पहले बतलाये जाते हैं इसके बाद बच्चा क्रमश: अलग-अलग शब्दों और फिर अलग-अलग स्वरों

को अपने आप समझने लगताहै।

चाहे किसी भी पद्धति से बच्चे को पढाया जाये—आवश्यकता इस बात की है कि वह पूरे शब्दों को समझने लगे अलग-अलग अक्षरो को नहीं। उसे अक्षर का नाम जानने की भी जरूरत पडती है क्योकि इसके बिना किसी शब्द के हिज्जे नही बतलाये जा सकते। उसे यह भी बतलाने की जरूरत है कि प्रत्येक अक्षर कौन-से स्वर का प्रतिनिधित्व करता है, इसी प्रकार वह अपरिचित शब्दो के अर्थो का भी अन्दाज लगा सकता है। यह भी सच है कि जब तक बच्चा पूरे-पूरे वाक्यों को पढकर उनका आशय भली-भांति समझ नही लेता तब तक यह कहना ही बेकार होगा कि वह पढना जानता है।

जैसा कि मैंने कहा है शायद सबसे अच्छा तरीका यही है कि बच्चे को पूरे-पूरे वाक्य स्वाभाविक रूप से पढ़ाये जाये। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होगी कि बच्चे को पढ़ने मे आनन्द आयेगा और वह वाक्य के विचार को समझने के लिए आसानी और जल्दी से पढ़ेगा।

लिखना, निस्सन्देह, पढने का उलटा है। लिखने का काम प्राय: पढने के बाद शुरू होता है। लेकिन कुछ बच्चे पूरे शब्द पढने के पहले ही एक-एक अक्षर लिखना शुरू कर देते है। इस बात पर काफी बहस हो चुकी है कि बच्चो को प्रारम्भिक लिखना सिखाने के लिए सबसे पहले किस प्रकार के अक्षर सिखाने चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि बच्चों को पहले ऐसे अक्षरो में लिखना सिखाना चाहिए जो पढे जाते हैं, जिनमें प्रत्येक अक्षर अलग-अलग स्पष्ट रूप से लिखा रहता है। इस प्रकार के अक्षर बच्चा चित्र-पुस्तको और पोस्टरों आदि मे देखता भी रहता है। इसकी जगह जो लिपि के अक्षर होते हैं उनसे बालक पहले से परिचित नहीं होता। लेकिन यह भी ठीक है कि लिपि के अक्षरों के लिखने से लिखाई में प्रवाह आता है, वे अक्षर जल्दी लिखे भी जाते है और कुछ लोगों का ख्याल है कि वे अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर भी होते है और बड़ो के अधिक उपयुक्त होतं है। इन अक्षरो के लिखने से विचार और भावनाए धारावाहिक रूप से अभिव्यक्त करने में आसानी होती है। इससे एक और लाभ भी है। अध्यापन, पाठन और लेखन की दृष्टि से जिन अक्षरों से पूरा एक शब्द बन जाता है वे जोड दिये जाते है, जबकि लिपि में यदि दो अक्षरों के बीच बहुत अधिक जगह छोड दी जायेगी तो कभी-कभी यह पता लगाना मुश्किल हो जायेगा कि कौन-सा शब्द कहा से शुरू होता है और कहां खत्म होता है। (यह अंश अंग्रेजी भाषा और उसकी लिपियो को दृष्टि में रखते हुए लिखा गया है। देवनागरी लिपि मे यह समस्या नहीं है।—अनु.)

फिर भी स्कूलों में यह परिपाटी चल निकली है कि सबसे पहले वे अक्षर सिखा दिये जाते हैं जिनका लिखने में प्रयोग होता है और इसके बाद लिखाई में बच्चों को

उन अक्षरो को सयुक्त करना सिखा दिया जाता है। व्यवहार में बहुत-से लोग कुछ अक्षरों को जोडते हैं और कुछ को नही जिससे वह हस्तलिपि देखने मे बुरी मालूम होती है और साथ ही इससे लिपि की स्वच्छता और गति मे भी बाधा पड सकती है।

इस प्रकार की लिखाई सिखाने मे एक-एक करके दो पद्धतिया बिल्कुल अलग-अलग बतलायी जानी चाहिए। बच्चा आरम्भ मे जो लिखना सीखता है वह ज्ञान लिखने के अक्षरो को सीखने मे बहुत कम सहायक होता है। इसलिए समय और शक्ति के मितव्यय की दृष्टि से बच्चे को लिखने के अक्षर पहले सिखाने चाहिए और इसके बाद पढ़ने के, जिससे वह मुद्रित पृष्ठ पढ सके। इस पद्धति से बालक की हस्तलिपि स्थिर हो जाती है और चूकि उसकी पढ़ने की सामग्री भी वैसे ही रूप मे होती है इसलिए उसे बडा लाभ होता है। उसे यह लाभ उस समय नही मिल पाता जब उसे लिखना तो हस्तलिपि के अक्षरो में सीखना पड़ता है और पढना साधारण मुद्रित अक्षरों में। इससे यह भी निश्चित हो जाता है कि प्रारम्भ से ही उसे अच्छी तौर पर साफ हस्तलिपि सिखायी जाये जिसे उसे किसी भी समय पर बदलना नही पडे। यह पद्धति निश्चित मानसिक विकास की दृष्टि से भी उत्तम है। आजकल इसी आधार पर लिखना और पढना सिखाने का एक आन्दोलन चल पड़ा है। (See my 'Reading by Rhythm' Series, Nelson, first steps 1\-, Poetry Book I 1\-, Poetry Book II 1\4, Poetry Book III 1\- In this material reading and writing are taught in cursive handwriting, done freely by an artist and not in copybook style The last two books introduce ordinary printing and relate it to cursive handwriting)

एक बार बच्चे ने पढना सीख लिया कि वह अपनी तरह के अन्य ऐसे बच्चो की कहानियां पढ़ने मे रुचि पैदा कर लेता है जो उसकी भांति ही साधारण परिचित काम करते हैं और वह 'स्टोरीज ऑफ पीटर एण्ड पेट (Stories of Peter and Pat) जैसी कहानियों की पुस्तकें भी पसन्द करने लगता है। ये कहानिया मेरी लिखी हुई है और चार भागो में प्रकाशित हुई है। (Macmillan 6d. and 8d.)

निम्नलिखित ('अ'), ('आ') और ('इ') दृष्टान्त बच्चो के ड्राइग सम्बन्धी अनुभव पर प्रकाश डालते है और ('ई') दृष्टान्त खिलौनो के चयन सम्बन्धी कठिनाइयो को स्पष्ट करता है।

(अ) हरा रंग बन जाने पर 4 वर्ष के बच्चे की प्रसन्नता

पहली कथा रगों के काम में प्रयोग के सफल हो जाने पर एक बच्चे की असीम प्रकट करती है

बालशाला (Nursery) के बच्चो का समूह एक दिन रग भरने की कला के पहले प्रयोग कर रहा था। सब बच्चो को एक ट्यूब से थोडा-थोडा नीला और पीला रग दिया जा चुका था। कागज पर वह रग जिस तरह से फैल रहा था वह उन्हें बड़ा मनोरंजक प्रतीत हो रहा था। पहले हर एक बच्चे ने इस बात का प्रयत्न किया कि दोनो रग कागज पर एक-दूसरे से बिल्कुल अलग रहे, लेकिन थोड़ी ही देर मे सीमा दौडती हुई अपनी अध्यापिका के पास आयी। उसकी आंखें खुशी से चमक रही थी, 'देखिए, जरा इसे देखिए। यहा हरा रंग अपने आप बन गया है।'

(आ) 5 वर्ष के बच्चे को पारदर्शी पहाड़ बना लेने पर खुशी

राजू 5 वर्ष का था। एक दिन उसने एक पहाड बनाया लेकिन उस पहाड के पीछे का मकान पहाड़ बन जाने पर भी साफ-साफ दिखलायी पड रहा था। पहले तो मै समझी कि वह मकान पहाड़ के सामने वाले हिस्से की तरफ है लेकिन राजू ने कहा, 'क्या आपको वह मकान दिखलायी पड रहा है जो मैने पहाड के पीछे बनाया है ?' यह एक ऐसी चित्रकारिता का उदाहरण है जो बच्चे ने अपनी कल्पना के अनुसार की थी। उसने इस बात से सहायता नही ली थी कि दूसरे लोग उसे किस प्रकार देखते है। इसी प्रकार एक बच्चा ऐसी रेलगाडी भी बना सकता है जिसे पहाडो और पेडो के पीछे जाते हुए भी देखा जा सकता है। वह एक ऐसे मकान का चित्र भी खीच सकता है जिसमें पूरा परिवार बैठा दिखलायी पड सकता है।

(इ) 6 वर्ष की बच्ची का बिना पैर का चूहा बनाना

बच्चे अपनी कल्पना के अनुसार ही चित्र बनाते है, इसका दूसरा उदाहरण 6 वर्षीया सीमा के कार्य से मिलता है। सीमा ने एक चूहे का चित्र बनाया। इस चूहे के पैर उसने नहीं बनाये थे। उसकी मां ने इस पर बालिका से पूछा, 'क्यो, सीमा ! तुमने अपने चूहे के पैर नही बनाये ?' सीमा ने आश्चर्य से अपना सिर उठाकर देखा और बोली, 'ओह, क्या चूहों के पैर भी होते है ? मै तो समझती थी कि उनके पैर नही होते। यदि ऐसा है तो मै उसके पैर अभी बना दूगी।' और यह कहकर उसने तत्काल चार पैर चित्र मे बना दिये। स्पष्ट है कि चूहो से सीमा का परिचय अधिक नहीं था। शायद उसने चूहो को केवल दौड़ता हुआ ही देखा था और इतने से पर्यवेक्षण से उसका ध्यान चूहे के पैरों की तरफ गया ही न होगा

दिये गये खिलौनों से चोट न लग जाये। वास्तविकता यह है कि बिस्तर पर पडे रहने वाले बच्चों के लिये खिलौनों का चयन करते समय सामान्य से अधिक सावधानी रखने की आवश्यकता पडती है लेकिन जब समय और पैसे दोनो का अभाव होता है उस समय अक्सर गलत ढग से खिलौने खरीद लिये जाते है।

बच्चों के एक अस्पताल मे मैं भी आती-जाती हूं। मैंने वहां एक दिन देखा कि दो वर्ष के एक बच्चे को उसकी मा ने एक ऐसी गुडिया दी जिसके कपडे पिन से बिधे हुए थे। जब तक नर्स का ध्यान इस ओर गया तब तक बच्चे ने गुडिया के कपड़ो से बहुत-सी पिनें निकाल ली थी और शेष पिनो को भी वह बच्चा निकाल रहा था। इसमें कोई शक ही नहीं कि वह खिलौना बडा ही खतरनाक था। हो सकता था बच्चा पिनों को मुह मे रख लेता या पिनो से यदि कही उसके खरोंच भी आ जाती तो खराब स्वास्थ्य के बच्चे के लिये वह खिलौना सचमुच एक बडी मुसीबत की वजह बन जाता।

उसी दिन दो वर्ष की छोटी बच्ची को उसकी एक रिश्तेदार महिला अदृश्य रग वाले कुछ चित्र दे गयी। इन चित्रों को गीले ब्रुश से रगडने पर उनका रंग उभर आता था। बच्ची ने चित्र मुह में लगा लिया था जिसकी वजह से उसका मुह और पूरा चेहरा रग गया। उसके हाथ में भी रग लग गया। उसके कपडे, उसके तकिये का गिलाफ, चादर, कम्बल आदि सभी चीजे रंग गयीं क्योकि मिलने वालों की आने की खुशी में बच्चों ने अपने बिस्तर पर ही पेशाब कर दी थी जिसकी वजह से रग चारो ओर फैल गया था।

प्रश्नावली

1 अपने मित्रो और रिश्तेदारो को माता-पिता बच्चो को अनुपयुक्त खिलौनो को देने से किस प्रकार और कहा तक रोक सकते हैं ? यदि बच्चों को ऐसे खिलौने दे दिये जायें तो माता को क्या करना चाहिए ?

2. बच्चो की दस्तकारी का उपयोग करना बडों के लिये कहा तक बुद्धिसगत है ?

3. सगीत, नृत्य, चित्रकारिता, चित्रों में रग भरना, पढना-लिखना या गिनती गिनने के वक्त छोटे बच्चे पर क्या प्रतिक्रिया होती है—यह जितने विस्तृत ढंग से हो सके बतलाइए। क्या उक्त विषयों में से किसी विषय में बच्चे को बड़ो द्वारा पहले से ही कुछ शिक्षा या सहायता दी जा चुकी है ? बच्चे की आयु क्या है, क्या वह अन्य बच्चों के साथ रहने का आदी है या वह अपना अधिकाश समय बडों के साथ बिताता है ?

किसी बच्चे को नया खिलौना मिल जाने के बाद उसे क्या असर हुआ इसका प्रत्यक्षदर्शी विवरण दीजिए। खिलौना कैसा था और बच्चे की आयु क्या थी यह भी बतलाइए ?

आपको एक ऐसे बच्चे को उसकी वर्षगाठ के उपलक्ष मे उपहार देना है जिसे आपने अभी हाल ही में नही देखा है। बतलाइए, उसके लिए उपहार आप कैसे चुनेगे ? आप कौन-सी गलतिया करने से बचना चाहेगी ? बच्चे की आयु तथा उसकी रुचियों के बारे मे कुछ-न-कुछ जानना क्यो महत्त्वपूर्ण है ?

घर, स्कूल, बाग और पार्क आदि मे ऐसी कौन-सी बातें होती हैं जिनकी वजह से बच्चे मे अको को जानने की रुचि पैदा होती है ? क्या आप बच्चो का ध्यान इन बातो की ओर आकृष्ट करेंगे या बच्चो के समझने के लिए उन्हे यो ही छोड देंगे ?

किसी बच्चे (या बच्चों) के ऐसे कल्पित खेल का अनुभव बतलाइए जिसे आपने देखा हो या जिसमे आपने भाग लिया हो। उस बच्चे की आयु भी बतलाइए जिसके साथ आप खेले हों। क्या वह खेल उसी प्रकार लगातार कई दिनो तक चलता रहा था या केवल एक ही दिन वह खेल हुआ था ? इस खेल मे क्या भिन्न-भिन्न ढंग की वेशभूषा भी धारण की गयी थी ? यह भी बतलाइए उस खेल में किन-किन चीजो का प्रयोग किया गया था ?



अध्याय-6

बच्चे की शारीरिक देखभाल

बच्चे का स्वास्थ्य, हम देख चुके हैं, बहुत सी बातो पर निर्भर करता है। उसे कार्य और विश्राम का कितना अवसर मिलता है, उसके माता-पिता में कितनी समझदारी है और वे उसे कितना स्नेह स्थायी रूप से दे पाते हैं। इसमे सन्देह नही कि बच्चे का स्वास्थ्य उपयुक्त भोजन, शुद्ध वायु और प्रकाश पर भी निर्भर करता है लेकिन इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि स्वास्थ्य के सबध में बच्चे का दृष्टिकोण ठीक हो। बच्चे का स्वास्थ्य के सवध में ठीक दृष्टिकोण नही हो सकता—यदि बडे बराबर उससे यह आशा करते रहे कि वह बीमार रहेगा या उससे बराबर कुछ लक्षणो को प्रकट करते रहने की उम्मीद करे।

बड़ों को भूलकर भी ऐसा संकेत नही देना चाहिए जिससे बच्चा यह कहने के लिए उत्साहित हो कि वह बीमार है। मा को यह भी बतलाने की आदत डालनी चाहिए कि बच्चा निरन्तर स्वस्थ होता जा रहा है। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो कई प्रकार के दोषो के उत्पन्न हो जाने की आशंका उत्पन्न हो जाती है। इसलिए मा को इन दोषों के प्रति न केवल सतर्क हो जाने की आवश्यकता हैं वरन् उनके विरुद्ध निश्चित कार्य करते रहने की भी आवश्यकता है। मा को बच्चे को यह बतलाते रहना चाहिए कि बच्चा क्रमश: अपनी कठिनाइयो पर विजय प्राप्त करता जा रहा है। उसे स्वय भी बच्चे से संबधित कठिनाइयो को साहसपूर्वक दूर करने का अभ्यास डालना चाहिए। मां को उन कठिनाइयों की चर्चा इस प्रकार नही करनी चाहिए कि वह उनसे जीत ही नहीं पा रही है। यदि मां यह कहती है कि बच्चे से संबंधित कठिनाइयों का भार उस पर बहुत अधिक है तो इसका अर्थ यह है कि कठिनाइयों का कुछ बोझ बच्चे पर भी बिना पडे नहीं रहेगा।

स्वास्थ्य के विषय मे आधुनिक दृष्टिकोण की मान्यता यह है कि बच्चा अविभाज्य इकाई है। यदि बच्चे के किसी एक पक्ष मे कोई भी गडबडी है तो उसकी प्रतिक्रिया बच्चे के जीवन के अन्य पक्षो पर भी पड़े बिना नहीं रहेगी। उदाहरण के लिये यदि कोई बालक अपने नये भाई या बहन को प्यार नही करता तो बहुत सम्भव है कि वह बिस्तर में पेशाब करने लगे या नाखूनों को मुह से काटने लगे या बचपन



बीत जाने पर भी अगूठा चूसने की आदत न छोड़े। यदि उसे पता चल जाये कि माता-पिता मे पटती नहीं तो उसकी चोरी करने की आदत पड सकती है। ऐसा भी हो सकता है कि वह रात को सोते-सोते डरकर चीख उठे और जाग जाये। यह भी सम्भव है कि उसके स्नायु नितान्त दुर्बल हो जायें या ऐसी ही अन्य कोई बात हो जाये। जब बच्चा स्वस्थ और प्रसन्न होता है तभी उसका सर्वतोमुखी विकास हो पाता है। इसी प्रकार जब बच्चे का सर्वतोमुखी विकास होता है तभी वह स्वस्थ और प्रसन्न रह पाता है। इसलिये बच्चे के विकास मे बाधा डालने वाले के हर लक्षण पर बराबर ध्यान रखने की आवश्यकता है और जहा भी जरूरत हो वहा माता-पिता को बच्चे के विकास में उसकी मदद करने के लिये तैयार रहना चाहिए। विकास कार्य को सरल बनाने की एक विधि यह भी है कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने के लिए बच्चा जितने लम्बे कदम उठा रहा हो उन कदमों को अपेक्षाकृत छोटा कर दिया जाये। कदमो के छोटे हो जाने से वह जल्दी आगे बढ सकेगा और इस प्रगति से बालक के आत्म-बल मे वृद्धि होगी। हो सकता है कि किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने मे बच्चे को कठिनाई अनुभव होती हो। ऐसी अवस्था में बच्चे से वह कार्य नही कराना चाहिए जिसमे वह असफल हो रहा हो। उसे कोई ऐसा काम सौंपना चाहिए जिसमे उसे अपेक्षाकृत अधिक सरलता से सफलता मिल सके। सरल कामो में मिलने वाली सफलता से बालक को उस निराशा पर विजय प्राप्त करने में मदद मिलेगी जो कठिन कार्य मे असफलता मिलने के कारण पैदा हुई थी।

बच्चों को कभी धमकाना या डराना नही चाहिए। यदि उन्हे डराया या धमकाया गया तो वे स्वस्थ और प्रसन्न न रह सकेंगे। इसका असर उनकी सफलता प्राप्त करने की क्षमता पर भी पडेगा। भय से बच्चे की जीवनीशक्ति का ह्रास होता है और बच्चा मानसिक और शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ होता चला जाता है। बच्चे को यह भी पता नही चलना चाहिए कि उसके माता-पिता उसके मंगल या कल्याण की चिन्ता में घुले जा रहे हैं क्योकि इसका भी ठीक वैसा ही असर बच्चे पर पडता है जैसा डराने या धमकाने का। यह बात प्रारम्भ में आश्चर्यजनक अवश्य प्रतीत होती है लेकिन है बिल्कुल सच।

निस्सन्देह, इस सबका यह आशय नही है कि बच्चे की शारीरिक देखभाल व्यर्थ की वस्तु है। इसके विपरीत बच्चे की शारीरिक देखभाल की भी बडी आवश्यकता है और यह जरूरी है कि इस काम को बहुत समझदारी के साथ किया जाये। लेकिन वास्तविकता यह है कि बच्चे की शारीरिक देखभाल की भी उतनी ही उपेक्षा आजकल के जमाने मे की जाती है जितनी हमारे बाबा या दादी के जमाने मे की जाती थी हालांकि अब बच्चो को पानी बरसते मे बर्फ मे या कुहासे मे जाने से रोका नही जाता और न इन चीजों का कोई भय ही दिलाया जाता है

हम अब यह मानने लगे है कि सामान्य बच्चे मे ठडक और गर्मी, सीड़क और कुहासा आदि सहने की पर्याप्त क्षमता होती है और यह बात वस्तुत ठीक है कि यदि बच्चे को सभी मौसमो में बाहर जाने दिया जाये तो वह अपेक्षाकृत अधिक अच्छी तरह पनपता है।

आजकल सामान्य माता-पिता और अध्यापको के स्वास्थ्य और रोगो सम्बन्धी विचार कुछ ऐसे क्रान्तिकारी होते जा रहे है जो हमारे बाबा-दादियो के रोगटे खडे कर देते है। रोगो को काबू मे करने के आधुनिक साधन आजकल मानव शरीर की स्वास्थ्य लाभ कर लेने की क्षमता पर निर्भर करने लगे है। इन साधनो की सहायता भोजन, गर्म और ठंडा पानी, व्यायाम, विश्राम आदि करते हैं। 'नेचर क्योर रेजीम' (Nature Cure Regime) नाम की एक पुस्तक मे स्वास्थ्य लाभ और प्राकृतिक चिकित्सा की पद्धतिया विस्तृत रूप से दी गयी है। जो व्यक्ति प्राकृतिक विधियो से रोगों का इलाज करता है वह आजकल प्राकृतिक चिकित्सक (Naturopaths) कहलाता है। अब हम लोग यह देखने लगे हैं कि पहले जिन बातों से हम विशेष प्रेम करते थे—वह हमे अब छोड़नी होंगी और उन बातो का स्थान अधिक सुधरे और विकसित ढग लेगे।

यह बात तो शायद हम पहले भी जानते थे कि हमारे शरीर मे अपने आपको अच्छा करने की शक्ति विद्यमान है और हम लोग इस बात के लिए भी तैयार रहते थे कि शरीर की उन शक्तियो को मदद करने की चेष्टा की जाये जो उसे स्वस्थ बनाने के लिए सचेष्ट रहती हैं। हम यह भी जानते थे कि शरीर अपने अन्दर का मल विभिन्न प्रकार से बाहर फेकता रहता है और हम यह मानते थे कि हमे इस कार्य मे कब्ज न रहने देकर, शरीर की चमड़ी को साफ रखकर, नाक को साफ रखकर, मल बाहर करने के काम मे शरीर की यथाशक्ति सहायता करनी चाहिए। हम यह भी समझते थे कि यदि कोई ग्रंथि फूल जाती है, टौसिल सूज जाते है, गले में दर्द हो जाता है, बदन के जोडो मे दर्द होता है तो ये सब इस बात के लक्षण हैं कि शरीर अपने अन्दर के सारे मल और विषैली चीजो को बाहर नही फेक पा रहा है।

आजकल क्रमश हम लोग यह भी अनुभव करने लगे है कि किसी रोग के लक्षण को प्रकट होने देने की प्रतीक्षा करना निपट मूर्खता के अतिरिक्त कुछ भी नही है। हमे स्वस्थ और प्रसन्न रहकर रोगों को आने से रोकना चाहिए। हमें यह नही समझना चाहिए कि खांसी और जुकाम, ब्राण्काइटिस और न्यूमोनिया, खसरा और चेचक आदि मानवजाति की सामान्य बीमारिया हैं और हम सबको बीमार पड़कर उनका कोटा पूरा करना ही है। हम यह भी क्रमशः समझने लगे हैं कि हम सब किस प्रकार इनसे बिल्कुल बच सकते है या इनको कम-से-कम हानिकारी बना सकते है जिससे इनक बाद भी हमारा शरीर पहले से अधिक स्वस्थ और सबल होकर निकले

रोगों से वेक्सीनो तथा इन्जेक्शनो द्वारा नही बचा जा सकता क्योकि ये औषधियां शरीर के विष को अस्थायी रूप से दबा देने का कार्य ही करती है या इनसे शरीर का विष और बढ जाता है जिसका नतीजा यह होता है कि वह विष किसी अन्य नये रास्ते से निकलता है।

रोगो से तब तक नहीं बचा जा सकता जब तक कोई उचित भोजन न करे, सभी अगो के लिये समुचित व्यायाम न करे, पर्याप्त विश्राम न करे, स्वस्थ मनोरजन मे भाग न लें और प्रकृति का आनन्द न ले। प्रकृति के फल, फूल, वृक्ष, पशु, पक्षी, रेत, मिट्टी, जल, बादल और पवन का भी खूब आनन्द लेना चाहिए।

जैसा कि हम जानते है, हमारे बच्चे प्रकृति की गोद मे रहना अधिक पसन्द करते है और वे यह अनुभव करते है कि वे स्वयं भी प्रकृति के ही अग है। इसलिये, इस मामले मे हमे बच्चों के स्वभाव का ही अनुकरण करना चाहिए। पशुओ की तरह बच्चों में भी अस्वस्थ रहने की अवस्था में भोजन न करने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति को हमे प्रोत्साहित करना चाहिए। बढ़िया खाने का लोभ दिलाकर बच्चो को तबीयत ठीक न रहने पर भी भोजन न कराना चाहिए। ऐसा करने से बच्चो की पाचनशक्ति पर पडने वाला भार अपेक्षाकृत हलका हो जायेगा।

खाना बरबाद करना बडी भूल है लेकिन उससे भी बड़ी भूल उसे बच्चे के भाराक्रान्त उदर मे भर देना है क्योकि ऐसा भोजन शरीर के लिये विष तुल्य है। जिस वस्तु को शरीर स्वेच्छा से ग्रहण न करे उसके खाने से स्वास्थ्य या प्रसन्नता कभी नही मिल सकती—चाहे वह वस्तु कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो। अक्सर बच्चों को बहुत अधिक भोजन परोस दिया जाता है। शायद यही कारण है कि कभी-कभी भोजन के सम्बन्ध में बच्चों को बडी कठिनाइयों का सामना करना पड जाता है।

जब भी बच्चे की तबीयत ठीक न हो, उसे भोजन करने के लिए अनुत्साहित करना चाहिए जिससे बच्चे की क्लान्त पाचनशक्ति को विश्राम और नयी शक्ति प्राप्त करने का पर्याप्त अवसर मिल जाये। ऐसी अवस्था मे बच्चे को बिना मीठा मिलाए फलो का रस देना चाहिए। फलों के रस में सन्तरे, सेब, अंगूर आदि के रसो का नाम लिया जा सकता है। गाजर जैसी तरकारियो का रस भी दिया जा सकता है। कच्ची गाजर को पीसकर साफ और पतले कपड़े रखकर दबाने से उसका रस निकल आता है। फलो और तरकारियो के रस से शरीर की सफाई मे मदद मिलती है और जुकाम या गले के दर्द का विष बाहर निकल जाता है।

जब भोजन नहीं किया जाता तो विष उन भोजन की नलियों से होता हुआ बाहर निकलने की कोशिश करता है जो इस कार्य के लिए तैयार रहती है और चूकि उदर या अतडियों मे एक दिन पूर्व से भोजन न करने के कारण कोई भी खाद्य सामग्री नहीं होती इसलिए विष के उदर और आतों में पहुच जाने के बाद यह   है

कि एनिमा के जरिए शरीर के उस विष को बाहर निकाल फेकने मे मदद की जाये।

इसलिये जिन दिनो बच्चा भोजन न करे उन दिनो रोज शाम को उसे एक हलका-सा एनिमा देना चाहिए। यह बहुत ही सरल, सुरक्षित और सर्वथा वेदना-रहित कार्य है जिसे बडे बच्चे बिना किसी मदद के भी कर सकते है। यह कार्य डूश द्वारा भी किया जा सकता है। डूश की विशेषता यह हे कि उसमे पानी अपने आप अन्दर चला जाता है। पम्प करने की कोई आवश्यकता नही पड़ती। बच्चा चाहे खडा रहे या लेटा—हर दशा मे पानी भरा एनिमा का बर्तन एनिमा लिये जाने के स्थान से चार या छह फीट ऊपर होना चाहिए। बर्तन जितना ऊचा रहेगा पानी उतनी ही तेजी से उदर के भीतर पहुचेगा। ग्रेविटी डूश की नली मे एक ऐसी चाबी भी लगी रहती है जिसे घुमाकर बंद कर देने से जब डूश की नली गुदा द्वार पर लगायी जाती हे उस समय पानी नही निकलता।

गुदा द्वार पर डूश (एनिमा) की नली लगाने से पूर्व एक बार उसे खोलकर देख लेना चाहिए कि पानी ठीक से निकल रहा है या नही। नली को गुदा के अन्दर करने के पूर्व उस पर वैसलीन या उसी तरह की कोई अन्य चिकनी चीज लेनी चाहिए जिससे नली के यथास्थान पहुंच जाने मे कोई कठिनाई न हो।

जब बच्चा बहुत अधिक अस्वस्थ न हो और उसकी तबीयत सामान्य ढग से ही खराब हो उस समय उसे सीमित भोजन देना चाहिए। सीमित भोजन का अर्थ है, फल, कच्चा सलाद या आलू को छोडकर किसी भी प्रकार की भाप से पकी हुई तरकारिया। ऐसा भी हो सकता है कि आप केवल बच्चे को फलो पर ही रखे, या उसे उबली तरकारिया अथवा कच्चा सलाद ही खाने को दे। यह बच्चे की अपनी रुचि तथा आपकी सुविधा पर निर्भर करता है। तरकारियों को आप सामान्य ढग से भाप द्वारा भी पका सकती हैं या दो या तीन बडी चम्मचो भर पानी मे जल्दी से उबाल भी सकती है। इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि तरकारी किसी भी दिशा मे जलने न पाये। इस तरह तरकारी बनाते वक्त यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके बनने में पन्द्रह मिनट या उससे कम ही समय लगे और बीच-बीच मे उस तरकारी को चम्मच से चलाते भी रहना चाहिए जिससे वह जलने न पाये।

फलों, कच्ची और पक्की तरकारियो का यह भोजन शरीर का विष बाहर निकाल फेंकने मे बडी मदद करता है और चूकि उस समय पेट में भोजन पहले से ही होता है—इसलिए नित्य एनिमा देने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस हलके भोजन से पाखाना साफ ढग से हो जाता है और काई दिक्कत नही होती। जब तक तबीयत बिल्कुल ठीक न हो जाये तब तक ऐसा कई दिनो तक किया जा सकता है।

यह ठीक है कि इस भोजन पर कुछ समय तक रहने के बाद बच्चे को बहुत जल्दी भूख लगने लगती है और शायद वह कुछ दुबला भी प्रतीत होने लगे लेकिन

जैसे ही रोग के लक्षण दूर हो जाते है—वह शीघ्र ही अपना सामान्य भोजन करने लगता है। अपना खोया वजन भी पुनः प्राप्त कर लेता है और पहले से अधिक तन्दुरुस्त दिखलायी पडने लगता है।

जिन दिनो बच्चो को यह सीमित भोजन दिया जा रहा हो उन दिनो यह जरूरी है कि अन्य किसी भी प्रकार के खाद्य पदार्थ—विशेषकर रोटी या दूध आदि बिल्कुल न दिये जाये क्योकि कोई भी खाद्य पदार्थ—माडीदार खाद्य सीमित भोजन की क्षार प्रधानता को नष्ट कर देता है।

भोजन की विशेषताओ के सबध मे क्रमश· नयी-नयी बाते सामने आ रही है। हम लोग अब क्रमश यह अनुभव करने लगे है कि रोटी और केक आदि और वस्तुत दो दालो वाला प्रत्येक अन्न उदर तथा आतो में एक प्रकार का एसिड पैदा कर देता है। यही चीज चीनी से भी पैदा होती है। इसीलिये अन्न और चीनी को हम लोग कार्बोहाइड्रेट कहते है। मास, मछली, अण्डे और पनीर आदि प्रोटीन युक्त खाद्य है लेकिन इनसे भी एसिड पैदा होती है। हालांकि कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन तथा चर्बीयुक्त खाद्य शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है लेकिन शरीर इनकी वजह से तभी स्वस्थ रह सकता है जब इनको एक निश्चित अनुपात मे लिया जाये। कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन तथा चर्बी से जो एसिड उत्पन्न होता है उसके असर की बुराइयों के उन्मूलन के लिए फल, तरकारिया तथा सलाद पर्याप्त मात्रा में खाये जाने चाहिए। अन्न, चीनी, गोश्त, मछली आदि ये सब चीजे एसिड पैदा करती है।

यदि कार्बोहाईड्रेट (यथा रोटी और चीनी) तथा प्रोटीन (जैसे गोश्त और मछली) को छोड़कर अन्य कोई चीज नही खायी जाती तो उदर और आतों में हमेशा एसिड रहता है। कुछ समय बाद यह एसिड उन कोपों को नुकसान पहुचाना और विषाक्त कर देना शुरू कर देता है जिनके सम्पर्क मे वह आता है और जुकाम, सर्दी, गठिया, फोडो आदि के रूप में यह विष शरीर से निकलने का प्रयास करता है।

यदि भोजन का पचहत्तर प्रतिशत भाग ऐसा हो जिसमे फल, कच्ची तथा पकी तरकारियां हो तो एसिड को पैदा होने से रोका जा सकता है क्योकि शेष पचीस प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन तथा चर्बी से जो एसिड पैदा होगा उसको शरीर अपने साधारण ढग से बाहर निकाल सकता है। फल के अलावा तरकारिया जहा तक हो सके कच्ची ही ली जानी चाहिए। ऐसा करने से खाद्य पदार्थो के विटामिन—वे तत्त्व जिनसे शरीर को जीवनीशक्ति मिलती है नष्ट नही होने पाते। बहुत-सी ऐसी तरकारियां कच्ची भी खायी जा सकती है जिनको पहले पका के खाये जाने का रिवाज-सा हो गया है। ऐसी तरकारियों मे गाजर, चुकदर, शलजम मूली आदि का नाम लिया जा सकता है। इसी प्रकार गोभी, हरी मटर, पालक और हाथीचख आदि को भी खाना चाहिए इनसे सरसो टमाटर ककडी आदि से बनाये जाने वाले

सामान्य सलाद का स्वाद भी बढ जाता है।

ऐसे भोजनो की बहुत-सी तालिकाए तैयार हो गयी है जिनके अनुसार बच्चो की भोजन-व्यवस्था करने से यह विश्वास हो सकता है कि बच्चे को 75 प्रतिशत ऐसा भोजन मिल रहा है जिसमे क्षार तत्त्व अधिक है। भोजन योजना की ये तालिकाए अपनी सामग्री मे मुख्यतः फल और तरकारियां ही रखती हैं। आलू को इनमें कोई स्थान नही दिया जाता है। इस प्रकार की समस्त योजनाए यह मानकर चलती है कि बच्चे को दिन-भर मे तीन बार से अधिक भोजन नहीं दिया जाना चाहिए और हर भोजन के बीच कम-से-कम पांच घण्टे का अन्तर रखना चाहिए। भोजन के बीच के समय में जहां तक हो सके बच्चे को कुछ भी खाने के लिये नही देना चाहिए।

इन भोजन योजनाओ मे यह भी व्यवस्था दी गयी है कि भोजन के साथ बच्चो को कोई पेय पदार्थ भी नहीं देना चाहिए। सर्वोत्तम विधि यह है कि मुख्य भोजन के तीन घण्टे बाद या अगले भोजन के आधे घण्टे पहले ही कोई पेय दिया जाये। पहले लोगो को यह व्यवस्था कुछ कठिन अवश्य लगती है लेकिन इससे घबड़ाने की जरूरत नही है। प्रारभ मे खाने के बाद या पहले ही पेय पदार्थ देने की आदत डालनी चाहिए। एक बार पेयो को भोजन के साथ न लेने की आदत यदि पड गयी तो फिर आगे दिक्कत नही होगी। सर्वाधिक स्वाभाविक और स्वास्थ्यवर्धक पेय शुद्ध जल, फल और तरकारियो के रस ही होते है। चाय और कॉफी आदि जैसे पेय जिनमे मद्यसार होता है, बच्चो को हरगिज नही दिये जाने चाहिए।

पेयों को भोजन के साथ देना इसलिये न उचित होगा क्योंकि उनमे शरीर के वे रस घुल जाते है जिनसे पाचन होता है। पाचन रसो के पेय पदार्थ मे घुल जाने से भोजन ठीक-ठीक नही पच पाता। इसलिये, पेय पदार्थ जब भोजन के काफी देर बाद दिये जाते है तो उस समय तक पाचन क्रिया समाप्त हो चुकी होती है और पेयो की वजह से उनमे कोई बाधा नहीं पड पाती। वास्तविकता यह है कि फलो और तरकारियो मे पहले से ही काफी जल होता है, इसलिए, रोटी दाल-भात के भोजन की अपेक्षा ऐसे भोजन मे पानी की खाने के समय वैसे भी कम जरूरत पडती है।

बच्चा जितना भोजन करता है उसमे कार्बोहाईड्रेट और प्रोटीन वाले पदार्थ कुल भोजन के एक चौथाई ही हो। ऐसा करने का एक तरीका यह भी है कि पहले भोजन मे केवल फल-ही-फल बच्चे को दिये जाये, दूसरे भोजन मे सलाद-ही-सलाद दिया जाये और तीसरे में उबली और पकी तरकारियां मात्र ही दी जाये। इनके साथ कार्बोहाईड्रेट और प्रोटीन वाले पदार्थ एक-चौथाई ही होने चाहिए।

एक दूसरा तरीका भी है। वह यह कि सवेरे के नाश्ते मे बच्चे को केवल फल-ही-फल दिये जाये। और दोपहर के भोजन के वक्त कच्चा सलाद और कार्बोहाईड्रेट दिये जायें प्रोटीनयुक्त कोई भी सामग्री न दी जाये और शाम के भोजन

मे उबली या भाप में सिजी तरकारिया तथा प्रोटीन दी जाये, कार्बोहाईड्रेट वाली कोई खाद्य सामग्री न दी जाये। सच तो यह है कि ऐसे बहुत-से खाद्य पदार्थ होते है जिनमे कार्बोहाईड्रेट और प्रोटीन दोनो के तत्त्व होते है। यह दूसरी बात है कि किसी खाद्य-पदार्थ में कार्बोहाईड्रेट के तत्त्व अधिक हों तो दूसरे मे प्रोटीन के। इसलिए किसी हद तक तो दोनों को अलग कर सकना एकदम असभव है। फिर भी यह भी तो सभव ही है कि एक भोजन के साथ रोटी, आलू आदि दिया जाये और दूसरे भोजन के साथ पनीर, अण्डा, गोश्त या मछली दी जाये।

हर दशा में बच्चे को फल, कच्चा सलाद और तरकारिया अधिक-से-अधिक मात्रा में दी जानी चाहिए। कच्चे सलाद के साथ बच्चे को थोडी-सी रोटी, एक भुना हुआ आलू और थोड़ा-सा मक्खन दिया जा सकता है। उबली तरकारियो के साथ एक अण्डा या थोडा-सा पनीर भी दिया जा सकता है। कभी सलाद के साथ भी अण्डा और पनीर आदि दिया जा सकता है। ऐसी दशा में रोटी, मक्खन या आलू देना आवश्यक न होगा। जब फल न मिलते हो अथवा बहुत तेज (महगे) हो तो फलो के बजाय कच्ची गाजर देनी चाहिए। भोजन की व्यवस्था का क्रम पहले से ही निर्धारित कर लेना अच्छा होता है।

भोजन की व्यवस्था

नाश्ता सुबह 7.30 या 8 बजे—फल ताजे बढ़िया फल या मन्दी (मद्धिम) आच मे पके कुछ फल या कटे और रात-भर भीगे सूखे फल जैसे—अजीर, खजूर. सूखे बेर, जामुन आदि। या सूखे मेवे बिना भीगी किशमिश, खजूद आदि, या कच्ची कटी गाजर। सूखे मेवे, कटे और भीगे हुए, किशमिश का उपयोग कच्चे सलाद मे या फलो के सलाद में भी उन्हे मीठा करने के लिए किया जा सकता है।

दोपहर का भोजन दिन में 12.30 या 1 बजे—उबली हुई तरकारिया, अण्डा, गोश्त या मछली अथवा प्रोटीनयुक्त कोई चीज जिसके बाद कच्चे या मन्दी (मद्धिम) आच में पके कुछ फल या सूखे मेवे या पहले से भीगे मेवे दिये जा सकते है लेकिन माडीदार या स्टार्च वाली कोई चीज न दी जाये।

शाम का भोजन संध्या 5.30 या 6 बजे—कच्चा सलाद पर्याप्त मात्रा मे और रोटी तथा मक्खन या आलू बाद मे दिया जा सकता है। ताजे या पके फल दिये जा सकते है लेकिन हलुआ या स्टार्च वाली कोई चीज नहीं दी जानी चाहिए।

इन तीन प्रकार के भोजनो के क्रम मे सुविधा और इच्छानुसार कोई भी परिवर्तन किया जा सकता है। शर्त यही है कि हर दो भोजन के बीच मे पाच घण्टो का अन्तर होना चाहिए। पकाने से हमेशा भोज्य-पदार्थो के जीवनदायी तत्त्व नष्ट हो जाते हैं इसलिए कच्ची तरकारियों या ताजे फलों का सलाद देना हमेशा

लाभदायी होता है। जब दिन में दो बार सलाद दिया जा रहा हो तो एक सलाद के साथ थोडी-सी रोटी और मक्खन दिया जा सकता है तथा दूसरे सलाद के साथ एक अडा, थोडा-सा गोश्त या पनीर का टुकडा दिया जा सकता है। स्टार्चयुक्त हलुआ या केला जब भी दिये जाये तो उनकी जगह फिर रोटी या आलू उतना ही कम कर दिया जाना चाहिए।

कुछ बच्चो को नाश्ते के वक्त यदि केवल फल ही दिए जाते हैं तो वे बड़ी जल्दी भूख लगने की वजह से कुछ और खाने के लिए मागने लगते है। ऐसी अवस्था मे उन्हे कुछ सूखे मेवे दे देना उपयुक्त होगा क्योंकि इनमे मिठाई होती है जो इस खाद्य को गरिष्ठ बना देती है। यदि इससे भी उनकी भूख न मिटे तो फलो का हलुआ (एक प्रकार की मिसल) बच्चो को दिया जा सकता है। इसमें कार्बोहाईड्रेट और प्रोटीन पचीस प्रतिशत होनी चाहिए तथा शेष पचहत्तर प्रतिशत फल होने चाहिए।

फलो का हलुआ बनाने के लिए एक बड़ी चम्मच साफ जई या जई का आटा रात को भिगो दे। सुबह एक बडा या दो-तीन छोटे सेब कुचलकर जई में मिला दे। सेब का छिलका भी रहना चाहिए। फलों के हलुए मे सेब का छिलका या उसका ऊपरी भाग मालूम नहीं पडेगा। भिगोया हुआ जई का आटा या जई को सेब में अच्छी तरह मिला दे। इसमें कुछ किशमिश या छुहारे डाल दे या एक-दो सूखे भीगे बेर मिला दे। इस सामग्री मे फलो का रस मिला दे। थोडा शहद या किसी किस्म का शर्बत स्वाद बदलने के लिए मिलाया जा सकता है। इससे थोड़ी मिठास और बढ जायेगी। इसको तश्तरी मे रखने के बाद ऊपर से कतरे हुए मेवे बुरक दे और बीच मे छोटा गड्ढा करके उसमें थोडा गाढा दूध या क्रीम भर दे। यह बड़ा ही स्वादिष्ट हलुआ है और बच्चे इसे बहुत पसन्द करेगे। बच्चे इसे दोपहर या शाम के भोजन के वक्त भी खा सकते है।

सेब की जगह नाशपाती अथवा नारगी या अंगूरों का भी प्रयोग फलो का हलुआ बनाने मे किया जा सकता है। सतरे की कुछ फांके, नींबू या अगूर का गूदा भी इस हलुए का स्वाद बढ़ाने के लिए मिलाया जा सकता है। जिन दिनो फल बहुत तेज (महगे) हो उन दिनों कच्ची गाजर से भी यह हलुआ बनाया जा सकता है।

यह स्वाभाविक है कि अन्य लोगों की अपेक्षा बच्चे इस हलुए को अधिक जल्दी पसन्द करने लगते है। मा को भी बच्चे को इसे खिलाने का अभ्यास डाल देना चाहिए, क्योकि अन्त में उसे फल और तरकारियो के आधार पर ही बच्चे को रखना है—यह बात वह नहीं भूल सकती। यह बात दूसरी है कि वह बच्चे की रुचि के अनुसार कभी फल अधिक खिलाये या तरकारिया। यदि सारा परिवार ही इस प्रकार का भोजन करने लगे तो इसमे कोई शक नहीं कि बच्चे इस प्रकार का भोजन करने का अभ्यास और भी जल्दी कर लेते हैं ये चीजें बड़ों और बच्चों दोनो के लिए समान रूप से

लाभदायी होती है इसमे कोई शक नही।

साधारण बीमारी के दिनों में या गम्भीर बीमारी के बाद स्वास्थ्य-लाभ के दिनो मे जब बच्चे को केवल फलो पर ही रखने का समय समाप्त हो जाये तब मा को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि बच्चा केवल ऊपर बताये गये भोजन पर ही रहे।

ऐसे दिनों मे बच्चे को गोश्त, मछली या अण्डा देने के बजाय हमेशा सूखे फल ही देने चाहिए। गोश्त और मछलिया एक प्रकार से जीवो के ही मृत शरीर होते है, इसलिये ये अण्डे और पनीर से भी अधिक विषैले होते हैं और इन्हें हजम करना अपेक्षाकृत और भी अधिक कठिन होता है। अण्डा और पनीर—ये दोनो भी जानवरो से ही उत्पन्न पदार्थ हैं लेकिन ये मृत जीवों के शेव नहीं है। यही कारण है कि आजकल बहुत-से लोग अपने बच्चो को शाकाहारी बनाना पसन्द करते है।

आजकल ऐसे शाकाहारियों की कमी नहीं है जो पूर्णत शाक-भाजी के आहार पर ही निर्भर करते हैं। वे अण्डा, पनीर, दूध या शहद भी नहीं लेते। इसमे कोई शक नहीं कि पशुओ से बनाये जाने वाले हर पदार्थ में अस्वास्थ्यकारी तत्त्वों के होने की संभावना बनी रहती है या उसमे बीमारियो के कीटाणु भी छिपे रह सकते हैं—खासतौर से उस समय जब कि जिस पशु या पक्षी से वे पदार्थ बनाये गये हों—वे स्वयं अस्वस्थ रहे हों।

दूध बडी जल्दी खराब होता है और गाय के शरीर से बाहर आने के बाद उसमे किसी भी किस्म की बीमारी के कीटाणु बहुत जल्दी पनपते हैं। प्रकृति ने गाय का दूध उसके बछडे के लिए बनाया है—शिशुओ और बडे बच्चो के लिए नहीं। शिशुओ और बड़े बच्चों के लिए गाय के दूध में शारीरिक पोषक तत्त्व अवश्य अधिक होते है लेकिन उनमे मस्तिष्क को विकसित करने वाले तत्त्व बिल्कुल नहीं होते है। इसलिए बच्चो के लिए दूध का प्रयोग बड़ी सावधानी से करना चाहिए। बच्चे को जहां तक हो सके पहले मां के दूध पर ही रखना चाहिए और उसे यदि मां का दूध किसी कारणवश न मिल सके तो भी पूरी तरह गाय के दूध पर तो कदापि नही रखना चाहिए। फलों और तरकारियों के रस भी ऐसे बच्चो को देने चाहिए।

मां का दूध बन्द कर दिए जाने पर बच्चो को गाय के दूध के बिना भी वे सारे पदार्थ मिल जाते हैं जो उनके स्वास्थ्य विकास के लिए आवश्यक होते हैं। लेकिन यदि बच्चे को दूध दिया भी जाये तो वह खाद्य मानना चाहिए, पेय नहीं। कहने का आशय यह है कि दूध भोजन का एक अंश समझा जाना चाहिए। उसे दो भोजनों के बीच में नहीं देना चाहिए। यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योकि आजकल स्कूलो मे मध्यान्तर काल मे बच्चो को दूध देने का रिवाज काफी चल पडा है। दूध की वजह से सुबह के नाश्ते के पाचन कार्य मे बाधा पडती है और बच्चा दोपहर के भोजन के लिए समुचित ढंग से तैयार नहीं हो पाता। मतलब यह है कि उसे एक बजे तक अच्छी तरह भूख नहीं लग पाती

जो भी खाद्य-पदार्थ बच्चे को दिए जाये वे अपनी स्वाभाविक अवस्था मे होने चाहिए। अभिप्राय यह है कि गेहूं के आटे का चोकर न निकाला जाये, पॉलिश किया हुआ चावल भी बच्चे को न खिलाया जाये, सफेद चीनी के बजाय कुटी हुई शक्कर दी जाये, फल के गूदा के साथ उसका छिलका भी दिया जाये, आलू भी छिलके सहित दिया जाये और पातगोभी के ऊपर के पत्ते भी खिलायें जायें।

तरकारी की ऊपर की पत्तियां भी बनायी जानी चाहिए और उनको गर्म-गर्म ही परोसना चाहिए। इन पत्तियों में भूख जाग्रत करने की बडी शक्ति होती है। यदि किसी शाक का जल उसके गल जाने के बाद भी सूख न पाये तो उसे निकाल लेना चाहिए और पेय के रूप मे उसका उपयोग करना चाहिए।

बच्चों को चॉकलेट तथा मिठाइया देने की आवश्यकता नही है क्योकि उन्हे सूखे मेवों और ताजे फलो से काफी चीनी मिल जाती है। कच्ची गाजर से भी चीनी की आवश्यकता की पूर्ति होती है। यदि बच्चो को मिठाई दी भी जाये तो वह भोजन के साथ ही दी जानी चाहिए। भोजन के पहले या बाद में मिठाई नहीं देनी चाहिए। इस प्रकार की मिठाइयां और चॉकलेटो में एक आपत्तिजनक बात यह होती है कि उनमे चीनी को इतना अधिक उबाला जाता है कि उस चीनी में खाद्य-तत्त्व रह ही नही जाता। लेकिन इससे भी वडी आपत्तिजनक बात यह है कि इन मिठाइयो से एसिड बहुत अधिक बनता है।

प्राकृतिक चिकित्सा की कुछ बातें

प्राकृतिक चिकित्सा मे कुछ और भी ऐसी बाते हैं जो बडी सहायक सिद्ध हो सकती हैं लेकिन इस जगह हम उन पर विस्तारपूर्वक विचार नही कर सकेंगे। फिर भी नीचे लिखी बाते महत्त्वपूर्ण हैं—

1 बच्चे को प्रतिदिन सुबह या तो ठंडे पानी से स्नान कराना चाहिए या स्पज कराना चाहिए। स्नान या स्पंज के बाद मोटे तौलिये या मुलायम ब्रश से बदन अच्छी तरह रगड़ना चाहिए।

2. प्रतिदिन निश्चित समय पर बच्चे को सूर्य का वायु स्नान कराना चाहिए। व्यायाम भी कराना चाहिए। हो सके तो यह कार्य घर से बाहर और नंगे बदन कराना चाहिए।

3 बाहर टहलने और खेलने का भी प्रतिदिन एक निश्चित समय होना चाहिए।

4. बच्चे को पहनाये जाने वाले कपडे ढीले होने चाहिए। अन्दर का सूती कपडा तो ढीला होना ही चाहिए, साथ ही जाडों में भी बहुत भारी कपडे बच्चे पर न लादे जाये। भीतर और बाहर दोनों ओर पहने जाने वाले कपडे हलके और ढीले-ढाले होने चाहिए।

5. बच्चे को गहरी और लम्बी सांसें लेने की आदत डालनी चाहिए। दौड़ने कूदने के खेलों और व्यायाम आदि से इसमे मिलेगी

6 बच्चे को हमेशा सीधे बैठने और चलते रहने की आदत डलवानी चाहिए। बच्चे की कमर झुकी और कधे गोलाई लिये हुए न होने चाहिए। इसका एक उपाय यह है कि बच्चे को सीधा लेटा दिया जाये जिससे उसकी पीठ का सारा हिस्सा जमीन छूता रहे। इसके बाद उसे ठीक उसी मुद्रा मे उठा दिया जाये। उठाते वक्त यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी पीठ बराबर दरवाजे या दीवाल के किनारे छूती रहे। चलने और बैठने मे बच्चे की पीठ ठीक इसी तरह की रहनी चाहिए।

7 सिर और मुह धोते समय कानो मे बहुत अन्दर पानी नही डालना चाहिए। इससे कान के परदो के गीले हो जाने की सभावना रहती है और हो सकता है कि बच्चा इसकी वजह से कम सुनने लगे या बहरा हो जाये।

8. आखो मे शीतल जल के छीटे मारने से उनकी देखने की शक्ति बढती है। छीटे आंखें खोलकर और बन्द करके दोनों तरह से लेने चाहिए। एक और बात भी करनी चाहिए। किसी चौड़े मुह के बर्तन मे पानी भरकर उसमे सिर डुबाना चाहिए और अन्दर पानी मे कई बार आखें खोलनी चाहिए। यदि दोनों आंखो में से एक आख की ताकत ज्यादा हो तो अधिक शक्ति वाली आंख को पट्टी या किसी 'शेड' से ढक लेना चाहिए और सारा काम कमजोर आंख से ही कुछ समय के लिए लेना चाहिए। यदि एक आंख में कुछ भेडा या ऐचापन हो तो भी कुछ दिनो तक या कुछ मिनट रोज केवल उसी आंख से काम लेना चाहिए जिसमे वह खराबी हो।

9. सुबह और रात को दो बार बिना टूथपेस्ट या मंजन के केवल ब्रश से बच्चे के दांत साफ किये जायें। यदि मिल सके तो मंजन के बजाय नींबू के रस की कुछ बूदे काम मे लायी जानी चाहिए। ठंडे पानी या नींबू के रस में अंगुलियां डुबा-डुबाकर उनसे धीरे-धीरे मसूढ़ों पर अच्छी तरह मालिश करनी चाहिए।

10. खरोंचों, कटे हुए स्थानों या घावो को अच्छी तरह गर्म पानी से धोना चाहिए जिससे वे स्थान बिल्कुल साफ हो जाये। इसके बाद उन पर आयोडीन की बजाय नींबू की कुछ बूंदें निचोड देनी चाहिए। इससे चोटीले स्थान के जहरीले होने की कोई सम्भावना नहीं रह जायेगी। आयोडीन से जहर फैल सकता है।

11. नीबू के रस का फोड़े और फुन्सियों पर बडा अच्छा असर होता है। इससे अन्दर का विष बाहर आ जाता है और वह उस जगह की सफाई भी रखता है।

12. ठण्डे और गर्म पानी के उपचार से मोचो तथा घावों दोनों में आराम मिलता है। जिस स्थान पर तकलीफ हो उसे पहले सह लिये जा सकने वाले तापमान के गर्म पानी में डुबा दीजिए। इसके बाद ठण्डे पानी मे डुबाइए। यह क्रम बार-बार दोहराइए। पहले गर्म में और फिर ठण्डे पानी में और इसके बाद आखिर में ठण्डे पानी मे डुबाने के बाद छोड दीजिए।

13 ब्राकाइटिस आदि में या घावों और मोचों के ऐसे स्थान पर

होने मे जो पानी में डुबाये न जा सकें गर्म और ठण्डे पानी की पट्टियां काम मे लानी चाहिए। हर हालत मे पट्टी को पानी से निकालने के बाद अच्छी तरह निचोड ले और उसे सम्बन्धित स्थान पर रखने के बाद किसी गर्म वस्त्र से ढक दे। दो बार गर्म पानी की पट्टी से सेकने के बाद एक बार ठण्डे पानी की पट्टी रखे। जब समाप्त करे तो ठण्डे पानी की पट्टी से करे। ठण्डे पानी की पट्टी कुछ घंटे या आवश्यकता हो तो रात-भर भी रखी जा सकती है। गर्म पानी की पट्टी जैसे ही ठडी होने लगे उसे उठा लेना चाहिए। गर्म पट्टी को दो या तीन मिनट बाद उठाया जा सकता है। इस पर गर्म और ठंडे पानी की पट्टियो से की जाने वाली सेकाई कुछ मिनट या एक-दो घटे तक की जा सकती है। कितनी देर सेकाई हो—इसका फैसला जब जैसी जरूरत और सुविधा हो उसे देखकर किया जा सकता है। किसी भी दशा में थोडा-सा समय बीच-बीच में देकर सेकाई अनेक बार तो की ही जा सकती है।

14. इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पाखाना रोज साफ हो जाये। प्राकृतिक उपचार में तो एक पाखाने के बजाय दिन मे तीन-चार पाखाने कराने की भी व्यवस्था दी हुई है। यदि हर भोजन के बाद पाखाना करा दिया जाये तो इसमे कोई बुराई न होगी या सुबह उठने के बाद और सोते वक्त तो शौच कराया ही जा सकता है।

जिन बातो को ऊपर के कुछ अनुच्छेदो में मैने कहा है—वे वास्तवि जीवन से लिये गये नीचे लिखे गये कुछ दृष्टान्तो से और भी अधिक स्पष्ट हो जायेंगी।

(अ) बीमारी (खांसी और ब्रांकाइटिस) के बाद किशोर का स्वास्थ्य लाभ

जब किशोर 1 वर्ष का भी नहीं था—उसे कुकुरखांसी और ब्राकाइटिस हो गयी। डॉक्टर ने कहा कि बच्चे की हालत बहुत गंभीर है लेकिन यह नहीं बतलाया कि बच्चे से उपवास कराये जायें या नहीं और यदि उसे खाने को दिया जाये तो क्या दिया जाये। एक तरुणी नर्स भी बच्चे को देखने आयी। उसने उपवास कराने तथा भोजन देने के डॉक्टरी विधि के परिणामों को देखा था। उसने आशंका प्रकट की कि यदि कुछ जरूरी परिवर्तन इस सम्बन्ध में न किये गये तो बच्चा अवश्य मर जायेगा। उसने अत्यन्त साहसपूर्वक मां को यह सलाह दे ही डाली कि बच्चे को किसी प्रकार का कोई खाद्य या दूध न दिया जाये। इसके बजाय बच्चे को संतरे का रस और केवल साफ पानी दिया जाये। बच्चे की हालत दूसरे दिन ही बहुत कुछ सुधर गयी। मां की खुशी का तो कोई ठिकाना ही न रहा। वह बराबर बच्चे को सन्तरे का रस और साफ पानी ही देती चली गयी और यह क्रम मां ने तब तक जारी रखा जब तक बच्चे की बीमारी के सारे लक्षण लुप्त नहीं हो गये बाद में मा ने यह कहना शुरू

कर दिया कि सन्तरे के रस की वजह से ही किशोर की जान बच सकी।

(आ) लाल बुखार और 8 वर्ष का बच्चा

राजू की आयु 8 वर्ष की थी। उसका पूरा परिवार शाकाहारी था और स्वस्थावस्था में और रोगकाल में उसके घर मे सदा प्राकृतिक उपचार ही होता है। राजू को स्कूल के अन्य बच्चो के साथ लाल बुखार आ गया। उसके सारे बदन पर लाल-लाल चकत्ते पड गये। मा ने डॉक्टर के परामर्श के अनुसार बालक का सारा भोजन बन्द कर दिया और तब तक इसी प्रकार रखा जब तक उसका ज्वर नही उतर गया। इसके बाद उसे कई दिनो तक केवल फलो पर ही रखा गया। बच्चा बहुत जल्द ही एकदम स्वस्थ हो गया और पड़ोसी कहने लगे कि उनकी समझ से तो राजू को लाल बुखार आया ही नही था क्योकि यदि उसे सचमुच वैसा लाल बुखार आता जैसा अन्य लड़कों को आया था तो वह इतनी जल्दी स्वस्थ हो ही नहीं सकता था। पडोसियों के यह कहने की वजह अन्य बच्चों की वैसी ही बीमारी थी जो कई-कई हफ्तों तक चली थी।

(इ) तरुण बालिका और क्षय रोग

सरोजनी आरम्भ मे बडी स्वस्थ थी। सबसे पहली नौकरी में उसने सारे काम बडी अच्छी तरह किये लेकिन बाद में चलकर वह बहुत अधिक परिश्रम करने लगी। इसी बीच घर में भी उसके सम्बन्ध कुछ बिगड गये। कुछ दिनों में उसे फेफडो का क्षय (टी॰ बी॰) हो गया। वह एक साधारण डॉक्टर के पास चली गयी और उसी डॉक्टर से अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराने लगी। डॉक्टर समय-समय पर सरोजनी के स्वास्थ्य का परीक्षण करता रहता था। वह डॉक्टर यह जानता था कि सरोजनी एक निश्चित और व्यवस्थित क्रम का भोजन करती है लेकिन वह यह नही जानता था कि सरोजनी का इलाज कोई प्राकृतिक चिकित्सक भी कर रहा है। प्राकृतिक चिकित्सक ने सरोजनी से यह कह दिया था कि वह जैसा जीवन व्यतीत कर रही है वैसा ही करती जायें। केवल दो कार्य न करे—एक तो रात मे बहुत देर तक जगे नही और दूसरे बहुत अधिक घर से बाहर नही रहे।

जिस डॉक्टर को वह अपना शरीर दिखाती थी, उस डॉक्टर ने सरोजनी के शरीर का परीक्षण करने के बाद कहा कि उसके स्वास्थ्य मे बराबर सुधार होता जा रहा है। एक साल में सरोजनी ने ऐसी दूसरी नौकरी की तलाश कर ली जिसमे वह अपने नये आहार पर रह सकती थी और अधिकाश समय खुली हवा मे बिता सकती थी कुछ ही महीनों मे वह बिल्कुल स्वस्थ घोषित कर दी गयी और तब से उसे वह बीमारी फिर कभी नहीं हुई

(ई) बच्चे और फोड़े

एक लडकी की बाह और हाथ पर बहुत फोडे निकला करते थे। दो वर्ष तक उसने प्रचलित ढगो से बडा इलाज कराया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अस्थायी रूप से एकाध फोडा दब जाता तो वही फोड़ा दूसरी जगह से निकल आता। स्थायी रूप से लाभ नही हुआ। अन्त में परेशान होकर वह एक प्राकृतिक चिकित्सक के पास चली गयी। प्राकृतिक चिकित्सक ने उस लडकी को प्राकृतिक व्यवस्था द्वारा निर्धारित आहार लेने के लिए कहा और ठण्डे और गर्म पानी का इलाज बतलाया। प्राकृतिक चिकित्सक ने यह भी कहा कि फोड़ो को निकलने से रोकना नही चाहिए बल्कि उनका उपचार इस प्रकार करना चाहिए कि वे और निकल आयें जिससे शरीर का सारा विष बाहर आ जाये। चिकित्सक ने यह भी बतलाया कि हो सकता है इसमे काफी समय भी लग जाये। प्राकृतिक उपचार से उस लडकी के एक साथ बहुत-से फोडे निकल आये और तकलीफ की वजह से उसका कुछ समय के लिए बहुत बुरा हाल हो गया। फिर भी उसे प्राकृतिक चिकित्सक की बात याद थी, इसलिए वह पुनः उससे सलाह लेने गयी। चिकित्सक ने बतलाया कि उसे तकलीफ अवश्य हो रही होगी लेकिन घबड़ाने की कोई बात नहीं है। कुछ ही समय मे सारे फोड़े साफ हो जायेगे।

यही हुआ भी। धीरे-धीरे सारे फोड़े सूख गये। जो फोडे सूख गये उनकी जगह और कोई फोडा नहीं निकला। ऐसा पहले कभी नही हुआ था। कुछ ही महीनों में उस लडकी को सब प्रकार के फोडों से हमेशा के लिए छुट्टी मिल गयी। लेकिन इसके बाद भी लड़की ने प्राकृतिक आहार का वही क्रम जारी रखा। एक साल बाद पिछली तकलीफों का कोई चिह्न शेष नहीं रहा था और अन्त में लड़की को भी यह विश्वास हो गया कि जो तकलीफ उसने भुगत ली है वह उसे आगे नहीं भुगतनी पडेगी।

(उ) छोटे बच्चों को लकवे की बीमारी

गर्मियों की छुट्टियों में एक स्कूल के दो बच्चों को लकवे की बीमारी हो गयी। इस स्कूल में बच्चों को प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान द्वारा निर्दिष्ट भोजन दिया जाता था और प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा निश्चित क्रम से ही रखा भी जाता था। इनमे से एक बच्चा तो छुट्टियों मे ही पूर्ण स्वस्थ हो गया लेकिन दूसरे बच्चे का हाथ ठीक से काम नही करता था। इस बच्चे का विशेष उपचार किया गया। फलतः कुछ ही महीनों में उसका वह हाथ भी काम करने लगा।

प्रश्नावली

1 क्या पहले भी आपने प्राकृतिक चिकित्सा की विधियों का प्रयोग किया है ?

यदि हा, तो अपने अनुभव से बतलाइए कि इनका किस मामले या किन मामलों में प्रयोग हुआ और उन प्रयोगों का क्या परिणाम हुआ ?

क्या यह ठीक है कि भोजन के मामले मे बच्चों की भी रुचि या अरुचि का ख्याल रखा जाये ? आप अरुचि का कैसे उपचार करेगे ?

आप ऐसे बच्चे को किस प्रकार अच्छा करेंगे जो बिस्तर पर पेशाब कर लेता हो ? ऐसे मामलो मे डराना-धमकाना क्यो हानिकारक होता है ? कोई ऐसा उदाहरण अपने अनुभव से दीजिए जिसमें बच्चे की पेशाब करने की आदत पड गयी हो। यह खास तौर से बतलाइए कि वह आदत छूटी या नही, यदि छूटी तो कैसे ?

किसी बच्चे की अंगूठा चूसने या नाखून चबाने की आदत को छुडाने का एकाकी प्रयत्न करना क्यो बेकार है ? आपने जिस जगह बच्चे की ऐसी आदत देखी हो उस बच्चे की वह आदत उसके व्यवहार मे या घर के वातावरण के किस परिवर्तन से छूटी ?

नयी प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली के अनुसार किसी ऐसे बच्चे का सही उपचार करने का क्या तरीका होगा जिसे बहुत तेज ज्वर हो आया हो, या जिसका गला सूज गया हो अथवा जिसे डायरिया हो गया हो ? यदि संभव हो तो इस सम्बन्ध में अपना कुछ अनुभव भी बतलाइए।

किन-किन भोजनो से एसिड बनता है और किन-किन से शरीर की सफाई होती है और क्षार तत्त्व बढ़ते है ? आप इस सम्बन्ध में या तो अपना अनुभव बतलाइए या ऐसे किसी व्यक्ति का हाल बतलाइए जिसने एक प्रकार के भोजन से दूसरे प्रकार का भोजन बदला हो या उपवास किया हो। भोजन मे वस्तुतः क्या परिवर्तन किया गया, क्यों किया गया और उसका क्या परिणाम हुआ ?

प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार दो दिनो के लिए भोजन की एक तालिका बनाइए। यह तालिका बनाते समय मौसम का तथा उन चीजों का ध्यान रखिए जो उन दिनों मिल सकती हों। एक दिन की भोजन तालिका (Menu) गर्मी के मौसमं की हो और दूसरे दिन की सर्दी की। हर तालिका मे यह स्पष्ट रूप से बतलाइए कि कौन-कौन-से फल दिये जायें, सलाद में क्या-क्या मिलाया जाये और कौन-कौन-सी सब्जियां रहे। यह भी लिखिए कि आप कौन-कौन-सी कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन तथा चर्बी की समाग्रियां इस भोजन तालिका मे साथ रखेगे ?

अध्याय-7

भय

यह सर्वमान्य तथ्य है कि बडे लोग अपने विशेष भय को बच्चो के सामने प्रकट करते है और परिणामत. बच्चे भी बडो की ही भांति उन बातों से डरते रहते है जिनसे उनके बडे डरा करते है। इस तरह के बहुत-से उदाहरण दिये जा सकते हैं। यदि कोई बच्चा बिजली की कडक, तेज हवा या किसी रोग विशेष से भयभीत रहता है तो इसका साफ-साफ यह अर्थ है कि वह उक्त बातो से भयभीत रहने वाले लोगों के साथ रहा है।

फिर भी यह बात कम लोग जानते हैं कि बच्चे पर भय और बेचैनी के वातावरण का बड़ा असर पडता है। हो सकता है इस प्रकार के वातावरण से बच्चे कल्पित कारणों के आधार पर ही भयभीत रहने लगे या यह भी हो सकता है कि वे विशेष प्रकार के किन्हीं नये भयों की कल्पना कर बैठे। बच्चे इस मामले में बडे सचेत्य होते हैं। ऐसा भी सम्भव है कि मां किसी भय को प्रत्यक्षतः न देखती हो और न उस सम्बन्ध में कोई बात ही कहती हो लेकिन बच्चा मां की उस मानसिक हलचल को समझ जाये और जिससे वह कल्पना कर ले कि घर के बड़े लोग भयग्रस्त है। बच्चे को जैसे ही यह पता चला या उसे यह सन्देह हुआ कि कहीं कोई भय की बात है—उसका बच्चे की मानसिक स्थिति और भावनाओं पर असर होना आरम्भ हो जाता है। कोई अविचारपूर्ण बात कह देने से बच्चा भयभीत हो जाता है। अबुद्धिमत्तापूर्ण आलोचना करने का भी यही परिणाम हो सकता है। गलतफहमी अज्ञान, अप्रिय अनुभव, क्रोध, दण्ड और निर्दयता से भी बच्चे मे भय की भावना जाग्रत हो उठती है।

सामान्यत बच्चो के भय तर्क जगत् की सीमा से परे होते है। फिर भी किसी भय विशेष की पृष्ठभूमि समझ लेने के बाद आश्वासन से भय सम्बन्धी कठिनाई या तो दूर हो जाती है अथवा और अधिक बढ़ने नही पाती। बच्चा वस्तुतः किस बात से डरता है—शायद यह बात कोई भी नहीं जान पाता क्योंकि वह अपने भय का कारण किसी को बतला नहीं सकता है और इसी वजह से भय जड भी पकड लेते है। लेकिन जब भी किसी ऐसे कार्य को करने से बच्चे को रोका गया हो जिसे वह उस समय तक खुशी से करता रहा हो तो बडों को सावधानी से यह देख लेना चाहिए कि कहीं उस निषेध की वजह से बालक के मन में कोई भय तो पैदा नहीं हो गया

है या बच्चे के दिमाग मे कोई खास कठिनाई तो उत्पन्न नही हो गयी है। ऐसी अवस्था में बच्चे के भय या उसकी कठिनाई को जानने के लिये बड़ी चतुराई और धैर्य की आवश्यकता पडती है क्योकि बच्चा असल बात को छिपाने की कोशिश करता है।

नीचे लिखे कुछ अनुभव मुझे हुए हैं। इन दृष्टान्तो से बच्चो के कुछ भयों या उन भयों की शुरूआतों को समझा जा सकता है। बच्चो के भयभीत हो जाने के भिन्न-भिन्न कारण थे लेकिन मूल कारणों को काफी कठिनाई के बाद ही जाना जा सका।

(अ) 7 वर्ष की बच्ची का मूर्ख प्रतीत होने से घबड़ाना

मीरा की आयु तब 7 वर्ष की थी। कुछ ही दिनों पूर्व उसके बढ़े हुए टौंसिलो का ऑपरेशन हुआ था। इस ऑपरेशन के कुछ ही पहले बीमारी की वजह से वह कुछ बहरी-सी हो गयी थी और बराबर चुपचाप ही बैठी रहती थी। एक दिन वह अपनी किसी रिश्तेदार के साथ मन्दिर गयी और ऐसा हुआ कि उस दिन मन्दिर के पुजारी ने बच्चो के लिए ही एक भाषण दे डाला। मीरा उस दिन ध्यान से वह भाषण न सुन सकी। बाद मे जिन रिश्तेदार के साथ वह गयी थी—उन्होंने जब यह पूछा कि उसने पुजारी की कहानी ध्यान से क्यों नही सुनी और मन्दिर के पुजारी की तरफ एक बार भी देखा क्यो नही तो कुछ देर मीरा बिल्कुल चुपचाप रही लेकिन बाद मे अत्यन्त आत्मविश्वास के साथ बोली, 'बताती हूं, मै क्यो पुजारी की कहानी सुनते वक्त उनकी तरफ नही देख रही थी। कारण यह है कि जब मैं सिर उठाकर किसी की तरफ लगातार देखती रहती हूं तो मेरा मुंह खुल जाता है और लोग समझते है कि मै बिल्कुल मूर्ख हू। इसीलिये जहां तक हो सकता है मै लोगो की तरफ देखती नही हूं।'

सौभाग्यवश, बच्ची की मां को यह बात ज्ञात हो गयी। मां ने लडकी को समझा दिया कि ऑपरेशन के बाद से वह नाक से ही अच्छी तरह सांस ले सकती है—इसलिए उसे अब यह भय छोड देना चाहिए कि यदि वह किसी की तरफ देखेगी तो उसका मुंह खुल जायेगा जैसा कि कुछ दिन पहले होता था। मां को यह कभी भी पता न चल सका कि जब मीरा का मुह खुला रहता है तो वह मूर्ख-सी प्रतीत होती है, पता नहीं यह बात किसने कह दी थी। मां ने बाद मे यह अनुभव किया कि यदि भाग्यवश उसे अपनी पुत्री की इस कठिनाई का जल्दी ही पता न चल गया होता तो न जाने यह कितनी बढ़ जाती और बच्चों को न मालूम कितनी हानि होती।

यदि मीरा की मा प्राकृतिक चिकित्सा की विधि से परिचित होती तो शायद वह यह भी जान लेती कि ऑपरेशन से बच्ची को किस प्रकार बचाया जा सकता था

(आ) गलत काम करने का भय

मीरा से एक दिन शाम को कहा गया कि वह अपने खिलौने रख दे और सोने चले। वह जिस खिलौने से खेल रही थी उसके बहुत-से टुकड़े थे। इन टुकड़ो को बटोरने मे उसने बड़ा समय लगा दिया। उससे कई बार जल्दी करने के लिए कहना पड़ा। आखिरकार जो महिला उसे सुलाने वाली थी वे झुझला पड़ीं। उन्हे लडकी की दीर्घसूत्रता पर गुस्सा आ गया। उन्होंने समझा कि लडकी सोने के लिए जान-बूझकर देर कर रही है। उस महिला ने मीरा की मां से बच्ची की शरारत की शिकायत कर दी और उस समय मीरा के लिए कोई भी सन्तोषजनक उत्तर देना बड़ा कठिन हो गया। लेकिन इस बार भी पहले की भांति अत्यन्त आत्म-विश्वासपूर्वक मीरा ने उत्तर दिया, 'मा,' उसने कहा, 'मैने समझा था कि मिस रेखा (मीरा की एक स्कूल अध्यापिका) मेरे खिलौने के एक टुकड़े पर बैठी थी और मैंने यह पसन्द नहीं किया कि मै उनसे अपने खिलौने के टुकडे को ढूंढ लेने के लिए उठ जाने को कहू। मुझे यह भय था कि कही वे मेरे इस काम को नापसन्द न करे।'

मीरा के जीवन से दिये गये उक्त दो उदाहरण बच्चों के बहुत गहरे भयो के उदाहरण नही हैं लेकिन इनसे यह तो प्रकट ही है कि बहुत-से बच्चों और बडो के अन्दर भय किस स्थान से जड़ें जमाना शुरू करता है। भद्दा दिखलायी पडने का भय, गलत बातें करने का भय और लोगों से भिन्न दिखलायी पडने का भय आदि ये कुछ ऐसी बातें हैं जो बहुत आगे चलकर कभी-कभी बड़ा विकराल रूप धारण कर लेती है।

(इ) अशुद्ध बोलने से उत्पन्न कठिनाइयां

बच्चों को कभी-कभी अपने अशुद्ध बोलने से बडी परेशानी महसूस होने लगती है। एक मैं ऐसी छोटी लडकी को जानती हू जिसका नाम चन्द्रा था। पढने मे तेज होने के कारण उसे अपने गांव का वजीफा मिला था। वजीफा पाने के बाद वह गाव से पास के कसबे के स्कूल में पढने चली गयी। वहां उसने अनुभव किया कि वह उस प्रकार नही बोल पाती जिस प्रकार उसकी अन्य सहपाठिने बोलती है और अध्यापिका बराबर चन्द्रा की उच्चारण की गलतियां सुधारतीं। उसे 'ह' बोलने मे विशेष कठिनाई होती थी। वह इस बात की कोशिश करती थी कि उक्त स्वर युक्त कोई भी शब्द उसे न बोलना पडे और इसके लिये वह बड़ा प्रयत्न करती। एक बार उसने मुझे बतलाया कि वह ऐसा इसलिए करती है क्योंकि उसकी असफलताओं को बहुत बुरी दृष्टि से देखा जाता है।

एक बार उसने इतिहास की कक्षा मे एक प्रश्न का उत्तर देते हुए केवल इसलिए 'हेमा' का नाम नही लिया क्योंकि वह 'ह' से बचना चाहती थी। उत्तर के अन्त मे



चन्द्रा को जिस बात का डर था वही बात हुई अध्यापिका ने कर दिया कि 'हेमा का नाम न लेने की वजह से तुम्हारा एक नम्बर कट गया स्पष्ट है कि इस तरह के व्यवहार से बच्ची का भय दूर या कम नही हो सकता था।

(ई) माता-पिता के मर जाने का भय

माता-पिता यह अनुभव नही करते कि वे जो बाते बिना सोचे-विचारे कह देते है उनका बच्चो पर कितना गहरा असर पडता है। कभी-कभी उन बातो की ऐसी प्रतिक्रिया होती है कि वह जीवन-भर दूर नहीं हो पाती। सरस्वती की मा अपने तथा अपने पति के स्वास्थ्य के सबध में बहुत अधिक फिक्र किया करती थी। एक दिन सरस्वती से कोई ऐसी भूल हो गयी जिस पर उसके पिता नाराज हो गये। इस पर परेशान और अस्वस्थ मां ने सरस्वती से कहा, 'तुम्हारे पिता के अधिक समय जीवित रहने की सम्भावना नहीं है। तुम जानती ही हो कि उनका स्वास्थ्य कितना नाजुक है। तुम यह भी जानती हो कि मैं भी कितनी बीमार रहती हूं। ऐसी हालत मे उन्हे तुम्हारे साथ जितने दिन रहना है—उतने दिन ठीक से रहो और इस बीच हम लोगो को इस प्रकार की चिन्ताओ में न डाला करो।' सरस्वती के दिमाग मे यह बात घर कर गयी और जब भी वह कुछ सोचती उसके कानो मे अपनी मा की यह बात गूजा करती। उसकी मा यदि जरा भी बीमार पड़ती या पिता तनिक भी अस्वस्थ हो जाते तो वह यह भी समझती कि वे अब जरूर मर जायेगे। जब भी वह कभी छुट्टिया मनाने जाती तो उसे बाहर ऐसा लगता कि पता नहीं लौटकर जाने पर उसे अपने माता-पिता जिन्दा मिलेंगे या नहीं ? ऐसा बहुधा होता है कि बच्चे माता-पिता के शब्दो को अक्षरशः सत्य मान लेते हैं और कभी बडों द्वारा कही गयी बात पर स्वप्न में भी शका नही करते। अतएव इस प्रकार की बातों को कहने से जहा तक हो सके बचना चाहिए।

(8) सीमा का केमिस्ट की दुकान पर अकेले जाते हुए डरना

सीमा की आयु 10 वर्ष की थी। वह शुरू से ही बडी होशियार और समझदार लडकी मानी जाती थी और थी भी। वह कसबे से होती हुई बहुत दिनो से रोज अकेली स्कूल जाती थी। एक दिन उसे एक टूथब्रुश की जरूरत पडी। सीमा की चाची ने स्कूल जाते समय उसे ब्रुश खरीदने के लिए पैसे दे दिये और कह दिया कि लौटते समय वह ब्रुश खरीद ले। सीमा ने उस समय कोई आपत्ति नहीं की लेकिन कई दिन बीत गये, उसने अपने लिए ब्रुश नहीं खरीदा। अत. एक दिन उसकी चाची ने जिनके साथ वह रहती थी, सीमा से कहा कि वह नीचे जाकर पडोस के केमिस्ट की दुकान से ब्रुश खरीद लाये। सीमा को इस सलाह से बड़ी परेशानी हुई। सीमा की चाची की

समझ मे यह बिल्कुल ही नहीं आया कि बात क्या है। उसने अपनी चाची से कई बहाने किये और जब देखा कि वह उन्हे सन्तुष्ट ही नही कर पा रही है तो रोने लगी और बोली, 'मुझे केमिस्ट के यहां जाने में बडा डर लगता है।'

अब सीमा का डर मालूम हो गया था। इसलिए उसकी चाची के लिए यह आसान हो गया कि वह उसे समझा सके कि इसमे डरने की कोई बात नही है। बाद मे धीरे-धीरे यह डर दूर भी हो गया। कम-से-कम वह एक ऐसी 20 वर्ष की युवती की भाति होने से तो बच गयी जो इतनी बडी हो जाने पर भी खरीददारी करने से डरा करती थी और उसके जूते जब तक बिल्कुल ही न कट जाते थे तब तक वह उनका खरीदना टालती रहती थी।

(ऊ) आंधी और बिजली से भयभीत होना

कभी-कभी अभिभावको को इस बात मे बडी कठिनाई होती है कि जिन बातो से वे डरते है उनसे उसके बच्चे न डरने लगे। एक महिला ने मुझे बतलाया कि बचपन मे उन्होने आंधी और बिजली द्वारा एक मकान का भयानक विनाश होते देखा था और तब से वे बिजली की कडक और चमक से बहुत ज्यादा भयभीत हो जाती है। उनका कहना था कि वे अपने बच्चो को उस भय से बचाना चाहती है जिससे वे स्वय ग्रस्त हैं। लेकिन इस कार्य के करने में उन्हें बडी कठिनाई का अनुभव होता है। जब कभी बिजली कडकती है तो वे बच्चो को पिता के पास छोड़कर किसी अकेले कमरे मे चली जाती हैं। इसमे कोई शक नहीं कि उक्त महिला ने बच्चो को इस डर से बचाने का प्रयत्न करके बड़ी बुद्धिमानी का कार्य किया और इस बात की सभावना भी कम है कि मा का असर बच्चो पर भी पड़ सकेगा।

भय के यथार्थ कारण के चेतन मस्तिष्क मे रहने पर अकारण आतक पैदा नही होता और यदि कोई डरता भी है तो वह दूसरों को अपने भय का कारण बतला सकता है। ऐसी अवस्था मे अन्य लोग उस व्यक्ति के भयभीत होने से नही डरते क्योकि वे कारण जानते है। ऐसा बहुधा होता है कि जब किसी आतककारी अनुभूति से कोई भय जम जाता है तो वह वैसी अवस्थाए उत्पन्न हो जाने पर पुन जाग उठता है। ऐसी दशा मे पैदा होने वाला भय भावनात्मक या मानसिक न होकर बहुत कुछ भौतिक अवस्थाओं के कारण होता है।

(ए) तेज हवा का आतंक

मेरी मा ने अपने बचपन मे एक बार देखा था कि तेज हवा की मार से एक पवनचक्की का ऊपर का भाग उड गया और बहुत दूर जाकर गिरा। तब से जब भी तेज हवा चलती वे घबड़ा जाती थीं। जब हम लोग बच्चे थे तो मा के इस प्रकार डरने

पर अक्सर आश्चर्य प्रकट किया करते थे। लेकिन मा ने अपने भय का कारण बतला दिया था—इसलिए हम लोग अपनी मां के भय के कारण कभी भयभीत नहीं हुए। हम लोग समझ गये थे कि वे अपनी एक पूर्वानुभूति के कारण डरती है।

(ऐ) एक बालिका का छुटपन का भय

रुचिका मेरी एक परिचित कलात्मक स्वभाव की अत्यन्त संचेत्य बालिका है। अभी हाल ही में उसने मुझे अपने बचपन के एक भय का किस्सा बतलाया जिसकी वजह से वह कई वर्षो तक परेशान रही थी। बचपन में एक बार 8 वर्ष की अवस्था मे उसे ऐसा ज्वर आया था कि उसके बाद से उसका हृदय बड़ा कमजोर हो गया। उसके घर वालो ने इस आशंका से कि वह कही डर न जाये रुचिका को उसकी हृदय की कमजोरी के सम्बन्ध में कुछ नही बतलाया। उन लोगों ने रुचिका से यह भी नहीं कहा कि वह अधिक परिश्रम न करे। इसके बजाय रुचिका की बड़ी बहन आभा से उन लोगो ने कह दिया कि वह अपनी छोटी बहन का यह ध्यान रखे कि रुचिका बहुत अधिक चिन्ता न कर पाये और न अपनी शक्ति से अधिक परिश्रम ही कर पाये क्योंकि उसकी छोटी बहन का हृदय बडा दुर्बल है। आभा ने इन बातो का बड़ा ध्यान रखा। लेकिन उसे रुचिका के बारे मे जो गुप्त सूचना थी—वह उस सूचना को रुचिका को भी बताना चाहती थी लेकिन वह यह भी जानती थी कि उसे ऐसा कभी नहीं करना चाहिए। आभा से यह पहले भी कह दिया गया था कि रुचिका को उसके दिल की कमजोरी के बारे में कभी कोई बात न बतलायी जाये।

आभा ने रुचिका से इस तरफ अनेक बार संकेत किया और अन्त में एक बार यह कह भी दिया कि 'रुचिका। मैं तुम्हारे बारे में एक बड़ी ही गुप्त बात जानती हू।' रुचिका ने आभा से बार-बार वह बात बतला देने के लिए कहा लेकिन आभा ने हर बार कह दिया कि 'वह बात मैं तुम्हें हरगिज, हरगिज नहीं बतलाऊगी।' अब रुचिका को फिक्र हो गयी कि वह क्या बात हो सकती है। वह दिन-रात उसी बात को सोचती रहती। वह अपनी कल्पना से तरह-तरह के अन्दाज उस गुप्त रहस्य के बारे में करती। इन कल्पनाओं के फलस्वरूप उसने नतीजा निकाला कि वह अवश्य ही गोद ली हुई नाजायज बालिका है जिसे कोई भी नहीं चाहता है। यह बात आभा उसे बतलाना नही चाहती। यह विचार बराबर उसके दिमाग मे चक्कर काटता रहता। अपने इस विचार के बारे में रुचिका ने किसी से कुछ कहा भी नहीं। अन्त मे, जब वह काफी बडी हो गयी, तब उसने अनुभव किया कि उसकी शक्ल उसके माता-पिता से कितनी मिलती है, कि वह सचमुच उनकी ही पुत्री है, गोद ली हुई बालिका नहीं है। तब जाकर कहीं रुचिका का वह मर्मभेदी भय समाप्त हुआ।

यदि सीमा के माता-पिता बच्चों की मानसिक स्थिति जानते होते तो उन्हें

अपनी पुत्री को वास्तविकता बतला देने में कोई भी झिझक नहीं होती। एक बार रुचिका को यदि अपनी शारीरिक कमजोरी ज्ञात हो जाती तो वह भी अपने आप ही सभलने की कोशिश करती और आभा को किसी भी प्रकार के आदेशो को देने की आवश्यकता ही न रह जाती।

(ओ) यौन ज्ञान न होने का भय

मै एक ऐसी लडकी को भी जानती हू जिसे 15 वर्ष की आयु तक यौन सम्बन्धी बातो का कोई समुचित ज्ञान न था। उन्ही दिनों उसे मासिक धर्म होना शुरू हो गया था।

एक दिन स्कूल से आते हुए रेल के डिब्बे मे उसके एक बालक मित्र ने उसे पकडकर घसीट लिया और हाथ पकड़कर कुछ दूर तक ले गया। उसने कुछ नाराज होकर उस लडके से हाथ छुड़ा लिया और उसके पास से हट आयी। वह नाराज तो हुई ही साथ ही कुछ भयभीत भी हो गयी। उसे इस बात का भय था कि कही लडके के इतने पास आ जाने से वह गर्भवती न हो गयी हो। उसका यह भय उस समय और भी अधिक बढ गया जब इस घटना के कई महीने बाद तक उसे मासिक धर्म ही नहीं हुआ। (उस लडकी के कान में कही से यह भनक पड़ गयी थी कि गर्भावस्था मे मासिक धर्म नहीं होता।) उसका उक्त भय तभी दूर हुआ जब पुनः स्राव आरम्भ हो गया। लेकिन जब तक वह भयग्रस्त रही—उसकी परेशानी का कोई ठिकाना नहीं था। वह हर वक्त निराश रहती थी और कोई भी काम नहीं कर पाती थी। यदि उस बालिका को समुचित यौन सम्बन्धी ज्ञान होता तो वह शायद इस भयकर मानसिक सन्ताप से बच जाती लेकिन उसे ये बाते केवल परम्परागत यौन-दमन के विचारो और यौन भयों के कारण नही बतलायी गयी थी।

प्रश्नावली

1 यदि कोई बच्चा किसी कारणवश अंधेरे से डरने लगे तो आप उसे अंधेरे के भय से कैसे मुक्त करेगे ?

2 गोद लिये जाने या माता-पिता के मर जाने से उत्पन्न होने वाले भयों को आप कैसे दूर करेगे ?

3 आप किसी बच्चे को उसके जन्म के तथ्यों के बारे मे कब और कैसे बतलायेगे ? आप किसी ऐसे बच्चे का किस्सा बतलाइए जो अपने जन्म संबंधी तथ्यो को न जानने के कारण परेशान रहा हो। ('ओ')

क्या आप किसी ऐसे बालक को जानते है जिसमे भद्दा लगने. हास्यास्पद प्रतीत

होने, दूसरों का ध्यान खींचने या गलत काम करने के भयों में से किसी एक ने उग्र रूप धारण कर लिया हो ? क्या आप जानते हैं कि सबसे पहले यह कठिनाई कैसे शुरू हुई ? ('अ', 'आ' 'इ' और 'ई')

5 आप बच्चों को जानवरों से बहुत अधिक अबुद्धिमत्तापूर्ण परिचय के खतरों से सावधान रखते हुए उन्हें जानवरों के कारण उत्पन्न होने वाले भयों से किस प्रकार बचायेंगे ?

6 यदि किन्हीं बच्चों में कोई असाधारणता या कोई विशेष दोष हो तो उससे उत्पन्न होने वाले भय से आप उन्हें कैसे बचायेंगे ? ऐसे बच्चों को यह भय रहता है कि लोगों का ध्यान उनकी ओर उनकी गलती की वजह से अकारण आकृष्ट हो जाता है। ऐसे बच्चे का भय आप कैसे दूर करेंगे ?

7. आप अपनी या अपने किसी परिचित की बचपन की कोई गुप्त चिन्ता या कोई गुप्त भय बतलाइए। यह भी बतलाइए कि यह भय कैसे उत्पन्न हुआ और वह अन्त में कैसे दूर हुआ ?



अध्याय-8

तेरा-मेरा

बच्चे की यह अन्तर्प्रवृत्ति होती है कि वह अपने लिए ही सारी चीजें इकट्ठी करना चाहता है। वह अपने ओर पास की सारी वस्तुओ का अपने लिए प्रयोग करना चाहता है। उसकी यही सहज प्रवृत्तिया प्रत्येक घर और स्कूल के लिए समस्याए वन जाती है।

यह बहुत ही आवश्यक है कि बच्चे में दूसरे की चीजो के प्रति भी सम्मान की भावना जागे। मेरा विश्वास है कि इस भावना को बच्चे मे जाग्रत कराने का सबसे अच्छा ढग यह है कि उसकी अपनी कुछ ऐसी चीजे हो जिन पर उसका अपना एकाधिकार हो और उनमे कोई भी हस्तक्षेप न करे। यह तरीका मेरे परिचित कुछ व्यक्तियो के तरीके से कही अधिक अच्छा है। इन व्यक्तियों ने अपने बच्चो की स्वतन्त्रता बनाये रखने के लिए अपने कमरो की सारी मूल्यवान वस्तुए हटा दी थी और अपने घर की सारी खिडकियो मे लोहे की छडे जडवा दी थी जिससे कोई दुर्घटना न हो सके। इसका नतीजा यह हुआ कि बच्चे बिल्कुल स्वच्छन्द हो गये। उनमें किसी की चीजों के लिए कोई सम्मान पैदा नही हुआ। न उनमे यही इच्छा पैदा हुई कि वे किसी की भावना को ठेस नही पहुचाये।

कुछ बच्चों को अपनी चीजे संभालकर रखने मे बडी परेशानी होती है। उनकी यह परेशानी तभी दूर होती हे जब वे यह सीख लेते है कि उन्हे भी दूसरो की चीजा का सम्मान करना चाहिए, उन्हे नुकसान नही पहुचाना चाहिए। इसलिए छोटे बच्चो को आरम्भ से ही यह शिक्षा देनी चाहिए कि वे अपनी चीजो की रक्षा करना सीखे। उन्हे यह भी बतलाना चाहिए कि वे कुछ चीजे न छुए और जिनको छुए उन्हे काम खत्म हो जाने के बाद यथास्थान रख दे।

इससे बच्चे मे व्यवस्था की भावना पैदा होती है। वह अपने खिलौने सभाल कर रखने लगता है। इस दृष्टि से बच्चे का अपना भी कोई छोटा स्थान जरूर होना चाहिए जहा वह उन चीजो को हिफाजत के साथ रख सके। छोटे घरो मे या जहा स्थानाभाव हो वहा ऐसा करना बड़ा कठिन होता है। फिर भी बच्चे को छोटा-मोटा एकाध कोना कहीं-न-कही अवश्य दे देना चाहिए जहा वह अपना सामान रख सके अलमारी का एक एक खाना आप प्रत्येक बच्चे को द सकती है इसी प्रकार दराजे

छोटे बक्से या काठ की अलमारियो के एक-एक भाग हर बच्चे को दिया जा सकता है।

मेरा तो यह अनुभव है कि यदि बच्चे के मुंह पोछने के कपडे, टूथब्रश, तौलिया तथा बाहर पहन के जाने के कपडो का एक स्थान आप निर्धारित कर दें तो स्कूल या घर के व्यवस्थित रूप को बनाये रखने मे बड़ी सहायता मिलती है। इसके लिए खूटिया या हुक भी बहुत थोडे-से खर्च मे लगाये जा सकते हैं और इनके लगाने मे भी कोई विशेष कठिनाई नही होगी। यह अच्छा होता है कि आप बच्चे के मुह पोछने की तौलिया, उसके टूथब्रश तथा अन्य कपड़ों पर उसका नाम लिख दें या वह पढ न सकता हो तो उसका कोई प्रतीक या रग निर्धारित कर दे। इसी प्रकार की पद्धतिया अपनाने से बच्चा आत्म-निर्भर बनेगा और अपनी चीजों के लिए सावधान रहेगा। जब स्नानगृह का सारा सामान हर एक की सम्पत्ति होता है और वहा रखे सामान से यह नहीं जाना जा सकता कि कौन सामान किसका है तो स्नानगृह की व्यवस्था और संभाल की जिम्मेदारी कोई भी अपनी जिम्मेदारी नहीं समझता। स्कूलो मे तो यदि हर बच्चे को अलग-अलग सामान न दिया जाये तो चर्म रोगो के फैलने का बडा खतरा रहता है।

जब मैं 5 वर्ष की आयु से नीचे 25 वर्ष के एक नर्सरी क्लास की इचार्ज थी तब मैने यह अनुभव किया कि पेंसिल और रंग के बक्से अक्सर लापता हो जाते। अत· मैने हर बच्चे की पेंसिल और रग के बक्से पर उसका खास निशान बना दिया। उस समय के बाद से अगले दो वर्षो तक एक भी पेंसिल या रग का बक्स नहीं खोया।

लेकिन हर घर या हर स्कूल मे कुछ ऐसी भी चीजे होती हैं जिनसे सब लोग समान रूप से काम लेते है और जिसके लिए एक से अधिक व्यक्ति जिम्मेदार होते है। यथा—फुटबाल तभी खेला जा सकता है जब बहुत-से बच्चे हो यदि फुटबाल रखने की जिम्मेदारी किसी पर नही डाली जाती तो बहुत सम्भव है कि जल्दी ही वह फुटबाल खो जाये। ऐसे मामलो मे यह अच्छा होता है कि हर सप्ताह एक बच्चे को यह जिम्मेदारी बारी-बारी से सौप दी जाये कि वह खेल खत्म हो जाने के बाद निश्चित स्थान पर फुटबाल रख दे। मैने देखा है कि बच्चे इस तरह की अपनी जिम्मेदारी को बडी गभीरता के साथ पूरा करते है। लेकिन माता-पिता या अध्यापक भी इस बात का ध्यान रखे कि दूसरा कार्यक्रम तभी शुरू किया जाये जब पहले कार्यक्रम की सारी चीजे उठाकर रख दी जाये। ऐसा करने से चीजो की रक्षा मे बडी सहायता मिलती है।

जब बच्चो से उनकी चीजे रखवाने का काम कराना हो तो उसकी चेतावनी कुछ पहले ही दे देना अच्छा होता है। उदाहरण के लिए यदि सोने का वक्त होने जा रहा है और बच्चे से खिलौने रखवाने है तो रखवाने का कार्य आरम्भ कराने के कुछ मिनट पूर्व बच्चे को सावधान करके बतला देना चाहिए कि सोने का वक्त हो गया है और अब उसे अपने खिलौनों के रखने की तैयारी कर लेनी चाहिए इस प्रकार

से सावधान कर दिये जाने से बच्चा माग पूरी करने के लिए मानसिक रूप से अपने आपको तैयार कर लेता है और अपना खेल खत्म कर देता है। उदाहरण के लिए यदि उसने घर बनाया होता है तो वह उसे खोल लेता है, रग सुखा लेता है और इन सब कामो के करने मे जैसी सावधानी रखना चाहता है, वह भी रख लेता है।

कुछ वच्चे बहुत ही व्यक्तिवादी होते है और अपने खिलौने दूसरे बच्चो को देने मे बहुत डरते हैं। ऐसी अवस्था मे उन्हें ऐसे खेल खिलाने चाहिए जिनमे कई साथी होने पर ही खेलने मे बडा आनन्द आता है। इससे वे बच्चे यह समझ सकेंगे कि साथियों के होने से खेल और भी मनोरंजक हो जाता है। ऐसे खेलो से बच्चा अपने खेलों की सामग्री दूसरो को देने लगता है और यह प्रवृत्ति पैदा हो जाना स्वय एक बहुत बडी सफलता है।

(अ) 7 वर्ष की बालिका का अपने छोटे भाई को गुड़िया दे देना

विमला की आयु जब 7 वर्ष की थी तब उसमे अपने खिलौनों को बेहद सभालकर रखने की आदत थी। उसका उससे छोटा एक भाई था जिसे वह बहुत चाहती थी। त्यौहार के अवसर पर विमला को एक बडी सुन्दर गुडिया उपहार मे दी गयी। वह वैसी गुडिया बहुत दिनो से चाहती भी थी। इस गुडिया पर विमला के छोटे भाई की आख पड गयी और वह अपने किसी भी खिलौने से अधिक उस गुडिया के लिए मचलने लगा। वह बार-बार झुकता और विमला की गुडिया उठा लेने की कोशिश करता। विमला अपने भाई की हर इच्छा पूरी करने के लिए बड़ी उत्सुक रहती थी। इसलिए यह स्वाभाविक था कि वह भाई की इच्छा के अनुसार गुडिया उसे पकडा देती। लेकिन विमला यह जानती थी कि उसका छोटा भाई किस प्रकार लापरवाही से कीमती-से-कीमती खिलौना जमीन पर दे मारता है। यह दृश्य विमला से छोटा लेकिन सबसे छोटे भाई से बडा भाई भी, जिसकी अवस्था 5 वर्ष की थी, देख रहा था। वह स्वय बडा उदार था और विमला की भाति अपने खिलौनों की ज्यादा परवाह भी नहीं करता था। उसने विमला के सकोच को देखकर कहा, 'विमला ! उसे वह गुडिया दे दो।' लेकिन विमला सशय में ही पडी रही। इस पर 5 वर्ष का बालक अपने पिता की तरफ मुड़कर बोला, 'पापा ! विमला से छोटा भैया उसकी गुडिया मांग रहा है। क्या विमला को उसे अपनी गुड़िया नहीं देनी चाहिए ?' विमला के पिता उस समय कुछ पढ रहे थे—इसलिए उन्होंने इस बात पर ध्यान नही दिया कि उनसे क्या पूछा गया है और बोल पडे, 'हां बेटी ! दे दो, दे दो !' पिता के कहने पर विमला ने अत्यन्त चिन्तापूर्वक अपनी गुडिया छोटे बच्चे के हाथ में दे दी। एक सेकेण्ड से भी कम समय में शिशु ने गुडिया के बाल नोंच डाले। विमला यह दृश्य देखकर घबडा गयी और दौडकर उसने अपनी गुड़िया पकड़ ली बच्चा भी गुडिया

पकडे रहा और यह रस्साकशी तब तक चलती रही जब तक मा वहा नही गयी और उन्होंने गुडिया बच्चे से लेकर विमला को नही दिलवा दी। इतने पर भी गुडिया के कुछ बाल नुच गये थे और कुछ खराब हो गये थे। इस प्रकार के अनुभवो से बच्चो की हिल-मिलकर खेलने की प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है। इसलिए यदि वे कोई आशका प्रकट करते है—विशेषकर शीघ्र ही खराब या नष्ट हो जाने वाले खिलौनो के सम्बन्ध मे तो उनकी इस आशका का ख्याल रखना चाहिए, विशेषकर, चित्र पुस्तको, गुडियो आदि के सम्बन्ध मे।

(आ) 3 वर्ष के बच्चे का अपना इंजन दे डालना

कुछ बच्चे स्वभावत- बडे उदार होते हैं। वे अपनी चीजे या खिलौने जो कोई मागता है, उसे दे देने को तैयार हो जाते है। श्याम 3 वर्ष का था। वह उन दिनो एक नर्सरी स्कूल मे पढता था। उस स्कूल ने यह तय किया कि किसी शुभ दिन के अवसर पर पुराने खिलौने गरीब बच्चो को दे दिये जाये, जिनसे बच्चे न खेलते हों। घर लौटने पर श्याम ने बतलाया कि वह अपना इजन, जिसे वह बहुत चाहता था, गरीब बच्चो के लिए दे देगा। श्याम की मा को यह चिन्ता हुई कि कहीं बच्चा अपनी इस उदारता के लिए बाद मे पछताए नही। लेकिन मा बच्चे की इस उदारता की भावना मे बाधक भी नही बनना चाहती थी—इसलिए जब श्याम अपना इजन देने के लिए स्कूल ले जाने लगा तो उसने रोका भी नही।

दूसरे दिन ही वह अपने इजन के लिए रोने लगा और मा के यह समझाने पर भी न माना कि उसने अपनी इच्छा से ही वह इंजन गरीब बच्चो को दे डाला है। अच्छा होता यदि मां ने बच्चे को यह साफ-साफ बतला दिया होता कि एक बार दे देने के बाद उसे वह इजन कभी खेलने को भी नही मिलेगा। मेरा ख्याल है कि 3 वर्ष के बच्चे से यह तय कराना ही चाहिए कि वह कौन-सा खिलौना देगा; बल्कि, उससे यह कहना भी ठीक नही होगा कि वह किसी भी खिलौने को दे दे।

(इ) 4 वर्ष की बच्ची का छोटे भालू को घर ले जाना

छोटे बच्चो के लिए अपने-पराये की समस्या बडी कठिन होती है इसीलिए अन्य चीजों की भाति इस क्षेत्र में भी काफी अनुभव की जरूरत पडती है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि बच्चे परायी चीजों को बिना यह समझे ले जात है कि वे चीजे दूसरे की है। ऊषा 4 वर्ष की बच्ची थी। एक दिन वह अपने नर्सरी स्कूल से खिलौने का छोटा भालू अपने घर लेकर चली गयी। घर पहुंचने पर एक मिनट के लिए भी उसने वह खिलौना अपने हाथ से नहीं छोडा और यदि उसे कोई यह ख्याल भी दिलाता कि उसे वह खिलौना वापस करना है तो वह जोर-जोर से रोने

लगती। दूसरे दिन सुबह बच्ची की मा मेरे पास आयीं और उन्होंने विस्तारपूर्वक बतलाया कि क्या हुआ है ? उन्होने यह भी कहा कि ऊषा उसे वापस करने के लिए तैयार नहीं है। मैने ऊषा की मा को समझा दिया कि वे एक-दो दिन ठहर जायें। इस बीच बच्ची स्वय ही वापस करने के लिए राजी हो जायेगी।

दूसरे दिन ऊषा जब स्कूल से वापस चली गयी तो उसकी मा आयी और वह खिलौना वापस कर गयी। मां ने बतलाया कि बच्ची खिलौना हाथ में लिये-ही-लिये सो गयी तो वे स्वय उसके कमरे में चुपचाप घुस गयीं और धीरे से वह खिलौना उसके हाथ से बिना उसे जगाये उठा लायीं और इसके बाद उन्होंने वह खिलौना छिपा दिया। सवेरे जब बच्ची ने खिलौना नहीं देखा तो वह बुरी तरह रोने लगी। मैने बतलाया, 'लेकिन मै तय कर चुकी थी कि उसे वह खिलौना नही रखना चाहिए। मै नही चाहती कि वह आगे चलकर चोर बने। मैंने बालिका की मां को समझाने का यह भरसक प्रयत्न किया कि उनकी यह आशका निर्मूल है लेकिन वे नही मानी। मैंने यह भी बतलाने की कोशिश की कि मैं चाहती हू कि ऊषा स्वयं ही वह खिलौना वापस लाये जिससे वह यह सीख सके कि वह खिलौना हम सबका है और स्कूल में इसीलिए रखा गया है कि उससे सब लोग खेल सकें।

तभी ऊषा ने अपनी मा को देख लिया और उसने यह भी देख लिया कि वह छोटा भालू मां के हाथ में है। वह उसे देखकर खुश हो गयी। मै वह खिलौना लिये उसके पास चली गयी और मैने ऊषा को बतलाया कि यह खिलौना हम सबका है लेकिन क्योंकि ऊषा को वह बहुत पसन्द है, इसलिए हम उसे शनिवार तक के लिए यह खिलौना दिये दे रहे है। वह शनिवार के बाद जब स्कूल आये तो उसे लेती आये। वह इस बात से बड़ी खुश हो गयी कि मनचाहा खिलौना वह एक बार फिर पा सकेगी। सोमवार को सुबह जब वह स्कूल आयी तो बड़ी खुशी-खुशी वह खिलौना अपने साथ वापस भी लेती आयी। मैंने ऊषा को वह खिलौना इसलिए फिर ले जाने दिया क्योंकि मैं गत रात्रि का अप्रिय अनुभव उसके मस्तिष्क से हटा देना चाहती थी। इसके साथ ही मैं यह भी चाहती थी कि वह उस खिलौने को बिना किसी दबाव के अपनी इच्छा से ही वापस करे।

(ई) 6 वर्ष की बच्ची का अपने स्कूल के दो रंग के डिब्बों का घर ले जाना

मेरा यह भी ख्याल है कि कभी-कभी बच्चे दूसरो की चीजें ले जाते समय यह तो अनुभव करते हैं कि वे परायी चीजें लिये जा रहे हैं लेकिन उनमें कोई ऐसी इच्छा होती है जिसका वे प्रतिरोध नही कर पाते। सीमा की आयु जब 6 वर्ष की थी तब उसे चित्रकारी का बडा शौक था यह बात उसके चित्रों से भी प्रतीत होती थी लेकिन शायद बहुत-से लोग यह नहीं जानते थे कि वे चित्र उसके जीवन के विशिष्ट अगों



का प्रतिनिधित्व करते थे। वह हर सप्ताह चित्रकारी के घण्टे की बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करती थी। एक दिन तीसरे पहर सीमा बडी क्रुद्धावस्था में रोती हुई अपनी मा के साथ स्कूल वापस लौटी। मा भी बहुत नाराज थीं। मां के हाथ में रग के दो डिब्बे थे। मां ने बतलाया कि सीमा उनको स्कूल से चुराकर ले गयी है। उन्होने यह भी कहा कि सीमा को ऐसा कार्य करने के लिये उन्होंने बहुत कडा दण्ड दिया है। मा के सामने मैं सीमा से कोई बात न कहलवा सकी। मैने सीमा की मा से पूछा कि क्या लडकी के पास घर पर रग का कोई बक्स है? इस पर मा ने उत्तर दिया कि 'इस प्रकार गन्दगी फैलाने वाली चीजों को घर मे रखने की इजाजत मै नही दे सकती।' मैने बतलाया कि सीमा को चित्रकला और रंग के काम से कितना प्रेम है और क्या वे घर में सीमा के लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं कर सकतीं जहा बैठकर वह चित्रो मे रग भरकर अपना मन बहला सके। लेकिन मैने अनुभव किया कि मै सीमा की मा को समझा नहीं पायी और सीमा को घर पर अपने रंग रखने का मौका कभी भी नही दिया गया होगा। बाद में सीमा ने बतलाया कि वह रग का एक बक्स अपनी छोटी बहन आभा के लिए ले गयी थी और दूसरा बक्स अपने लिए। तब मैने उसे समझाया कि सबके रंग के बक्स स्कूल मे ही रहने क्यो आवश्यक है ? इस बच्ची के मामले मे इस घटना से हम दोनो के सबंध और भी घनिष्ठ होने आरभ हो गये। बच्ची को इतना स्नेह पहले शायद कभी नही मिल पाया था।

(उ) 6 वर्ष की बालिका का स्कूल की रबड़ और पेंसिलें घर ले जाना

मेरी कक्षा मे एक बार स्वाती नाम की 6 वर्ष की बालिका पढ़ने आयी। मैने देखा, उसे पेंसिलें और रबड़ें इकट्ठी करने का बडा शौक है। एक दिन उसकी सन्दूकची में से सभी आकार की चालीस पेंसिलें और दस रबडें निकलीं। मैं बहुत दिनों से अनुभव कर रही थी कि पेंसिलें कक्षा से ऐसे गायब हो जाती हैं जैसे कोई जादू कर देता हो। मैंने तय किया कि उसे दो-तीन बढिया-बढिया खूबसूरत पेसिले, जिन पर उसका नाम लिखा हो—उसे दे दूं। मैं स्वाती के साथ एक अन्य अध्यापिका की भाति व्यवहार नहीं करना चाहती थी। उन्होंने एक पेसिल खो जाने पर बालिका की सारी चीजें खुलवाकर देख ली थीं और उससे सारी चीजें छीन ली थीं। मैने ऐसा करना उचित नहीं समझा। लेकिन पेसिलो का उपहार दे देने से समस्या संतोषजनक रूप से हल हो गयी। मैने फिर कभी नहीं सुना कि उसने कोई पेसिल ली हो और न इसके बाद मेरी कक्षा से कभी पेसिले ही गायब हुई।

(ऊ) 3 वर्ष की बच्ची और नर्सरी के खेल का सामान

यदि किसी बच्चे की इच्छा बार-बार यह होती हो कि वह दूसरों की चीजें अपने

घर ले जाये तो इस आदत को छुड़ाने में सफलता प्राप्त करने के लिए अध्यापक को बच्चे के घरवालों का सहयोग अवश्य मिलना चाहिए। मेरी कक्षा मे एक बार सुमन नाम की 3 वर्ष की एक बच्ची आयी। पता नही क्यों उसके मन को स्कूल की छोटी तराजू के हलके वजन वाले बटखरे बहुत अधिक भा गये। वह कई बार इनको घर ले गयी और हर बार बालिका की मां की इच्छानुसार सुमन की एक चाची आकर उन बटखरो को वापस कर जाती। वीरा की चाची का सुमन के प्रति किया जाने वाला व्यवहार हमेशा अमैत्रीपूर्ण होता था और वे उसके विरुद्ध हमेशा कुछ-न-कुछ बाते भी कह देती थी। इसका एक कारण यह भी था कि सुमन नाजायज सम्बन्धो से उत्पन्न हुई थी। कई दिन ऐसा हुआ कि सुमन उन बटखरो को स्कूल आने पर अपनी जेबों में रख लेती और दिन-भर इसी प्रकार उन्हें लिये घूमा करती और रोज शाम को जाते वक्त उन्हे यथास्थान रख देती। एक बार ऐसा हुआ कि वे बटखरे गायब हो गये और फिर कभी नही दिखलायी पडे। मैंने कई बार सुमन की मा को स्कूल बुलवाया और कई बार स्वय भी मिलने गयी लेकिन उद्देश्य सिद्धि न हुई। मै समझती हू कि इसी वजह से सुमन की समस्या को मै कभी नही सुलझा पायी।

(ए) 12 वर्ष की बालिका और छात्रवृत्ति

कोई-कोई बच्चा अपवादात्मक रूप से योग्य होता है लेकिन ऐसे बच्चे अक्सर देखा गया है कि अपनी चीजों को सफाई और व्यवस्था से नहीं रख पाते। कभी-कभी ऐसे बच्चे के लिए यदि वास्तविक सहयोग प्राप्त हो जाये तो आप बहुत कुछ और भी बड़ी जल्दी कर सकते हैं। नेहा ऐसी ही बच्ची थी। उसकी आयु 12 वर्ष की थी तभी उसने छात्रवृत्ति प्राप्त कर ली थी। वैसे भी वह बड़ी होशियार थी। उसकी अंग्रेजी तो काफी अच्छी थी। वर्ष के अन्त में नेहा की मा को हेडमास्टर का एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि यदि नेहा ने अपना काम नहीं सुधारा तो उसकी छात्रवृति बन्द कर दी जायेगी। बालिका के विरुद्ध शिकायत यह थी कि वह अपनी किताबे बेहद गन्दी रखती थी। पता नहीं वह उन पर जाने क्या-क्या लिख देती थी। उसके कपड़े भी गन्दे रहते थे, साथ ही वह समय का पालन भी नहीं करती थी। ऐसा लगता था कि नेहा अपनी पुस्तको के सम्बन्ध में उत्तरदायित्वों को ही नहीं समझती थी और अपने काम में भी कोई खास दिलचस्पी नहीं लेती थी।

अन्त में नेहा की मा ने अपनी बालिका की बालशाला की एक अध्यापिका से मुलाकात की और उनसे नेहा के सम्बन्ध मे चर्चा की। यह अध्यापिका नेहा की प्रशंसक थी और जब वह नेहा को पढ़ाती थीं तो हमेशा नेहा की मां से बच्ची की तारीफ किया करती थीं। मां के साथ नेहा भी अपनी इन्हीं अध्यापिका के पास गयी थी इस मुलाकात में अध्यापिका ने यह पता लगा लिया कि वास्तविक कठिनाई क्या

है। पता यह लगा कि नेहा कविताओं और कहानियो को जब सुनती है तभी उसे जो कुछ भी अच्छा लगता किताब पर लिख लेती है। इसके बाद वह उन्हीं चीजो के बारे मे सोचती रहती है। दयालु अध्यापिका ने नेहा को समझा दिया कि पुस्तके गन्दी करना या स्वय गन्दा रहना बुरी बात है लेकिन कविता और कहानियों का भी स्थान है। नेहा उन्हे भी लिखे लेकिन एक अलग कॉपी पर। और उक्त अध्यापिका ने नेहा को एक कॉपी अलग से दे दी। नेहा की छात्रवृत्ति बन्द नही हुई और उसके सबध मे लोगो की यह धारणा भी बनी रही कि वह वस्तुत- योग्य लडकी है। लेकिन यदि उसकी मां तथा अध्यापिका के बीच उक्त सहयोग न हुआ होता तो यह कह सकना बडा कठिन है कि नेहा की छात्रवृत्ति चालू रह पाती।

प्रश्नावली

1 यदि किसी बच्चे को जिसकी आयु 6 वर्ष की हो अपने बाबा-दादी के पास रहने के लिए एक मास के लिए गांव जाना हो तो आपकी समझ में बच्चे के साथ कौन-कौन-सा सामान (खिलौने और कपडे आदि) जाना चाहिए ?

2 किसी ऐसे बच्चे का किस्सा बतलाइए जिसने कई बार ऐसी चीजें चुराई हो जिनका मूल्य की दृष्टि से कोई महत्त्व न हो। क्या आप बता सकते है कि बच्चे ने ऐसा क्यो किया ? क्या वह बच्चा सुखी परिवार का था और क्या बड़ो से उसे उतना स्नेह मिलता था जितना मिलना चाहिए था ? इस हरकत पर बच्चे के साथ क्या व्यवहार किया गया और अन्त में क्या हुआ ? ('इ', 'ई', 'उ', 'ऊ')

3 बच्चे के खिलौनों के एक स्थान पर रखने का सबसे अच्छा तरीका क्या है ?

4 क्या बच्चो से यह आशा करनी चाहिए कि वे अपने कपडे साफ रखेगे ?

5 यदि किसी बच्चे से अपने सामान को हिफाजत से रखने के लिए बहुत अधिक कहा जायेगा तो उसका नतीजा क्या होगा ? इन नतीजो से कैसे बचा जा सकता है ?

6 किसी ऐसे बच्चे का किस्सा बतलाइए जिसके घर मे माता-पिता या अन्य सबंधियो से लड़ाई रही हो और बच्चे ने चोरी की हो। बच्चे की चोरी पकड जाने पर उसके साथ कैसा व्यवहार किया गया और अन्त मे क्या हुआ ? ('इ', 'ई', 'उ', 'ऊ')

7 किसी ऐसे बच्चे के सबध मे बतलाइए जिसे अपने से किसी छोटे भाई या बहन द्वारा उसके किसी खिलौने के तोड दिए जाने से दु ख हुआ हो। इस कठिनाई का सामना किस प्रकार किया गया और क्या अन्त में उसका कोई सन्तोषजनक हल निकल सका अ'

अध्याय-9

सच और गप्प

हम अनुभव द्वारा बतला सकते है कि सच और गप्प के बीच हमें कहा सीमारेखा अकित करनी चाहिए और जहा अनूभुति नहीं होती वहां इन दोनो की सीमाए साफ-साफ नहीं बतलायी जा सकती। ऐसी परिस्थितियों मे यह स्वाभाविक है कि बच्चे सच और गप्प के बीच का भेद ठीक-ठीक नही समझ पाते और दोनो के बीच अन्तर स्थापित करने मे उन्हे कठिनाई अनुभव होती है। उनका अनुभव भी सीमित होता है, उनके निर्णय और विवेक की शक्ति भी अपरिपक्व होती है, इसलिए बच्चो की कठिनाई कुछ और भी बढ जाती है। यही नही, बच्चो को बहुत-सी बातें बिना अपने अनुभव के माननी पडती हैं। जो कुछ उनसे कह दिया जाता है, वही उन्हे स्वीकार कर लेना पड़ता है। वे स्वयं उन मौलिक सिद्धान्तों और अपरिवर्तनीय नियमो की कभी परीक्षा नही कर पाते जिन पर ब्रह्माण्ड स्थिर है। अतएव यह नतीजा निकाला जा सकता है कि उन्हे जो कुछ बतलाया जाता है यदि वे उसकी सहायता से कोई निर्णय करने की कोशिश करें तो बहुत सभव यही है कि उनका वह निर्णय गलत हो जाये क्योंकि वे क्रिया-प्रतिक्रिया के नियम को नही समझते हैं। नतीजा यह होगा कि सत्य बहुत पीछे छूट जायेगा। वास्तविकता यह है कि विश्व के इतिहास मे वैज्ञानिकों ने भी ऐसा बहुत किया है। बच्चो के साथ एक अन्य यह भी कठिनाई है कि वे शब्दो के अर्थो को एक-दूसरे से मिला देते है। इस गड़बड़ी का परिणाम यह होता है कि उनके मस्तिष्क में गलत धारणाए घर कर लेती है।

बडो को हमेशा यह ख्याल रखना चाहिए कि बच्चो की सच और गप्प मे अन्तर समझने की शक्ति निरन्तर बढती चली जाये। लेकिन मा को यह कार्य इस प्रकार करना चाहिए कि बच्चे के लिए कहीं गप्पो का सौन्दर्य नष्ट न हो जाये, क्योकि यदि ऐसा हुआ तो बच्चे का जीवन उसके लिए बड़ा मनहूस हो जायेगा और शायद उसके आत्मविश्वास को भी धक्का लगे। बच्चे का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह प्रसन्न रहे और अपना दिल हलका रखे और बड़ो को चाहिए कि वे बच्चो के संतोष और उनकी प्रसन्नता को अधिकाधिक गहरा बनायें। उनकी खुश रहने की स्वाभाविक प्रवत्ति को नष्ट न होने दें



च्चो को प्रकृति की बहुत-सी आश्चर्यजनक चीजें दिखलानी चाहिए। ये
. प्राय. हर एक चीज में समान रूप से पायी जाती है। बच्चो को
का निकलना, फूल का विकसित होना, मकड़ी का नाजुक जाला
का घोंसला बनाना, आकाश मे बादलों का भागना, छोटे-छोटे पौधे नि
का बाहर आना आदि अब कुछ जादू-सा लगेगा। वे इनके सौन्दर्य का
न करेगे। इस तरह की चीजें हमेशा बच्चों के हृदय में प्रसन्नता जग
र जाती है। उन्हे छोटे-छोटे पौधों और क्यारियों की देखभाल करने
करना चाहिए। पहले फूल दिखलाने चाहिए और इसके बाद उन्
चाहिए इसके बाद पेडों के भी फूल दिखलाने चाहिए जिन्हें

देखना अक्सर कठिन होता है बच्चों का अधिकाश समय खुली हवा में बीतना चाहिए वहीं वे प्रकृति के रहस्यों को आसानी से जान सकते हैं और उनके तथा अपने जीवन के ऐक्य को अनुभव कर सकते हैं।

यह तो साफ ही है कि परियां प्रकृति के अन्य बच्चों से बिल्कुल भिन्न प्रकार की जीव होती है। या तो वे यथार्थत. जीव ही नही होती और यदि होती भी है तो बहुत ही भिन्न परिस्थितियों में रहती हैं। मेरी समझ मे बच्चो को जब परियों की कहानिया सुनायी जाये तो यह स्पष्ट बतला देना चाहिए कि परिया इस दुनिया मे नहीं होतीं। वे कल्पनालोक में ही निवास करती हैं। यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे बहुत अधिक कल्पना जगत् में न रहे जहा जादू के जोर से कोई काम हो जाता है। उन्हें परियो की कहानियों, गप्पों और काव्यगाथाओं तथा दैनिक जीवन का अन्तर मालूम होना चाहिए। यह बात ठीक नही है कि बच्चो के लिहाज मे आकर बड़े उन्हें यह बतलाने लगें कि परियों की कहानियां वस्तुत. सच्ची हैं। मैं ऐसे लोगों को जानती हूं जो बच्चो को बतलाते है कि परियों की कहानिया सच हैं और अपने मन को समझा लेते हैं कि कहानियों का मूल भाव तो सच ही है। इसमें संदेह नही कि बहुत-सी परियों और प्राचीन कथाओं का मूलभाव सत्य होता है। उनसे बच्चो के विकास मे सहायता मिलती है लेकिन कुछ मामलो मे तो साफ-साफ यह जाहिर हो जाता है कि परियों की कहानियां या लोककथाएं केवल हमारे पूर्वजों के सदाचार संबधी उन आदर्शों का दिग्दर्शन कराती हैं जो किसी समय माने जाते थे और वे आदर्श अब हमारे बच्चो के लिए उपयुक्त नही हैं या उनके अनुसार कार्य करने से आजकल का काम नहीं चल सकता। इस वर्ग में मैं बच्चो की अकारण हानि पहुंचाने वाली सौतेली माताओ, निर्दयी पिताओं, जलने वाले बड़े भाइयों, गलत समझे जाने वाले किन्तु चतुर पुत्र-पुत्रियों, घृणित जादूगरनियों आदि की कहानियों को रखती हूं। मै यह भली-भांति अनुभव करती हू कि यह तालिका हमारे यहां की कुछ सर्वप्रसिद्ध लोककथाओं और परियो की कहानियो को भी स्पर्श करती है लेकिन मेरा विश्वास है कि बच्चों को ऐसी कहानियां नही सुनानी चाहिए जिनके निहित अर्थ महत्त्वपूर्ण और बच्चो के विकास में सहायक न हों। मेरा यह भी विचार है कि परियों, उदार फादर क्रिसमस, दुष्ट आत्माओं या पिशाचों, प्रफुल्ल परियों, गंभीर राजकुमारो, सुन्दर राजकुमारियों, प्रयत्नों, खतरों की कठिनाइयो, साहस आदि की कहानिया, जब तक उनमे गुणविशेष की बातें विस्तारपूर्वक न हों, तब तक बच्चो को सुनाना निरर्थक है। उनसे बच्चों के आचरण के निर्माण मे कोई सहायता नहीं मिलती। मै समझती हू कि जिन कहानियो को मैंने किसी कारणवश नही गिनाया है यदि उनको पढ़ा जायेगा या बच्चों को बडों द्वारा सुनवाया जायेगा तो उनका उतना खराब असर नहीं पड़ेगा।

मुझे तो ऐसा लगता है कि हमारे चारों ओर इतनी दरिद्रता है, हम लोग पशुओं

के साथ इतना निर्दय व्यवहार करते हैं, युद्ध और युद्ध की तैयारियो की इतनी बाते करते हैं, दुनिया में हमारे चारों ओर इतनी घृणा, इतना दुख है कि उसे दूर करने के लिये हमे अपनी समस्त चेष्टाओं और व्यक्तित्व के बल से शांति, सौन्दर्य, उदारता, प्रसन्नता, गभीरता और सेवा के भाव बच्चों मे पैदा करने चाहिए। मेरा तो ख्याल है कि बच्चे सत्य कथाओ को भी कल्पित कथाओं की भाति ही पसन्द करते हैं। शर्त यही है कि सत्य कथाओं के संबध मे पहले से ही उनके मन में कोई धारणा न हो।

मैं यह भी विश्वास नही करती कि हमारे बच्चे अपने आप हमारे सदाचार संबधी आदर्शो को मानने लगें या हम उन पर वे आदर्श लादने की कोशिश करें। इसके बजाय यह कहीं अधिक अच्छा होगा कि वे क्रमश· विभिन्न अवस्थाओ से होते हुए अपेक्षित लक्ष्य पर पहुचे और हम उनकी सफलता के संबंध में अधिक चिन्ता न करे। आचार और नैतिकता के ऐसे सिद्धान्त जो बच्चों की अवस्था के अनुकूल नहीं होते और उन पर लादे जाते हैं उनसे बच्चों का विकास ही अवरुद्ध होता है—और कोई लाभ नही होता। शायद अभी कई वर्षो तक ऐसे बच्चे पैदा हों जो बन्दूको, तोपो, नगाडों और झण्डों से ही प्रेम करे लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि हम ये चीजे उन्हें उपहारस्वरूप भेंट करे; या उनके सामने विश्व-बंधुत्व अथवा शाति के सबध मे कोई बात ही न करें। यदि हम उन्हे बन्दूकों से खेलने देते रहे और वे अपने झगडों के फैसले अपनी ताकत से करते रहें तो भी शांति और बंधुत्व की भावनाओं की वजह से उनको अन्त में अधिक नुकसान नही पहुंचेगा।

कोई भी बड़ा, बच्चों को यह नही समझा सकता कि उन्हें शांति में विश्वास करना चाहिए और ताकत से आपसी झगड़ो का फैसला नही करना चाहिए यदि वह स्वयं बच्चों द्वारा कोई भी अपराध किये जाने पर उन्हें शारीरिक दण्ड देता है। बच्चा हमारे बारे में अपनी धारणा हम क्या कहते हैं इससे नहीं बनाता अपितु उसकी धारणा बड़े क्या करते हैं—इससे बनती है। इसमे कोई सन्देह नहीं कि बतलाये गये निर्देशों पर चलने के लिए साधारण से कही अधिक साहस, अधिक विश्वास, अधिक सहिष्णुता, अधिक धैर्य अधिक समझदारी की आवश्यकता पड़ती है। जो लोग बच्चो से मार-पीटकर बिना समझाए-बुझाए काम लेते हैं—स्पष्ट है उनमें उपर्युक्त गुण अपेक्षित मात्रा मे नही होते। लेकिन बच्चे में स्नेह और विश्वास के गुणो का पैदा हो जाना अपने आपमे कुछ मूल्य रखता है और ये गुण उसमे तभी पैदा होंगे जब वह हममे सचाई, सौन्दर्यप्रियता और समझदारी के गुण देखेगा।

बहुत-से लोग एक तरफ तो बच्चों को परियों की कहानियां सुनाते है और दूसरी तरफ उनसे यह आशा करते हैं कि वे अपने अनुभव द्वारा हर घटना को अच्छी तरह बयान कर देंगे। इसमें सन्देह नही कि बच्चों मे किसी यथार्थ घटना को ज्यों-का-त्यों कह देने की शक्ति होना बडा महत्त्वपूर्ण है और यह भी जरूरी है कि

वह घटना का वर्णन करते समय परियो की कहानी में प्रयुक्त होने वाली कल्पना का प्रयोग न करे लेकिन यदि आप किसी दुर्घटना के बारे में ईमानदार वयस्क प्रत्यक्षदर्शियो के बयानों की तुलना करें तो उनमें भी कुछ-न-कुछ गलतिया आपको मिल जायेंगी। ऐसी दशा मे बच्चों से नितात दोषहीन वर्णन की आशा करना कहां तक उचित है, या यदि वे कुछ बढा-चढाकर घटना का वर्णन करे तो आपका चिन्ता करना कहा तक ठीक है ?

कुछ बच्चे बडे कल्पनाशील होते है। वे अपने वर्णन मे कभी-कभी बिना यह समझे कि वे क्या कह रहे है—नमक-मिर्च मिला देते है। वे ऐसा इसलिए करते है क्योंकि वे सोचते हैं कि ऐसा ही होना चाहिए था। लेकिन कभी-कभी कहानी कहने वाले की आंख मे कहानी कहते-कहते एक चमक क्षण-भर के लिए आ जाती है और उससे प्रकट हो जाता है कि आप उसकी कथा पर किस हद तक विश्वास करे। यह जरूरी है कि आप कथा कहने वाले के समक्ष यह प्रकट कर दें कि उसकी असभव बातो मे आपको कितना आनन्द आ रहा है और आप स्वय भी उसमें कुछ बाते जोडने की शक्ति रखते हैं।

बच्चे एक तीसरे प्रकार की भी गलती श्रोता को भ्रम मे डालने के लिए करते है। दुर्भाग्यवश, सभ्यसमाज मे इस गलती को माफ कर दिया जाता है। नतीजा यह होता है कि मेहमानों के सामने बच्चा वक्ता की वह बाते सुन लेता है और सोचता है कि सारी सच-सच बाते सबके सामने क्यो नही कही जा रही है ? सामान्यतः बच्चा किसी घटना को बतलाते समय उसका अशुद्ध रूप इसलिए उपस्थित करता है क्योंकि वह कोई गलती छिपाना चाहता है—खासतौर से उस समय जब दण्ड मिलने की आशका हो। बच्चा जितना भी इस प्रकार का 'झूठ' बोलता है (और यही एक प्रकार का ऐसा 'झूठ' है जिसे उसका झूठ बोलना मानना चाहिए) वह इसीलिए कि कहीं वह दण्ड न पा जाये। कभी-कभी वह कुछ व्यक्तिगत लाभ के लिए भी झूठ बोलता है। इसकी आदत को छुड़ाने के लिए सहानुभूतिपूर्ण समझदारी से काम लिया जाना चाहिए। इस प्रकार की पद्धति से बच्चे के मन का भय या अपना कोई स्वार्थ सिद्ध करने का भाव दूर हो जाता है और इनका स्थान विश्वास ले लेता है। तब बच्चे को अपने अबुद्धिमत्तापूर्ण, निर्दय स्वार्थसिद्धि प्राप्त करने की चेष्टा के परिणामों को सहने के लिए भी तैयार किया जा सकता है और उसे जहा तक संभव होता है सुधारा भी जा सकता है।

जो बच्चा अपेक्षाकृत अधिक प्रतिभासम्पन्न होता है वह दण्ड से इतना नही डरता जितना इस बात से कि कही उसकी गलती न सिद्ध हो जाये। वह छूटते ही बजाय ठीक-ठीक बताने के घटना के सबंध मे गलत बाते कह देगा। वह यह नही सोचेगा कि उसके कथन की श्रोता के मस्तिष्क पर क्या प्रतिक्रिया होगी इसके बाद

अपनी बात को ही सिद्ध करने के लिए वह एक के बाद एक झूठ लगातार बोलता चला जाएगा। ऐसे बच्चे की यदि इस आदत को समय रहते ही नहीं रोका गया तो सभव है कि वह आदतन झूठ बोलने लगे। ऐसी अवस्था मे सच बोलने के महत्त्व को जिस तरह भी हो बच्चे को समझाने का यत्न करना चाहिए। किसी भी दशा मे किसी भी कारणवश झूठ बोलने के अपराध को नजरअन्दाज नही करना चाहिए। बच्चे को हर हालत मे यह पता चल जाना चाहिए कि यदि आपने उससे कुछ नही भी कहा है तो भी आप यह समझती हैं कि वह झूठ बोल रहा है और उसके झूठ बोलने से आप भ्रम मे नही पडी हैं।

अब मे नीचे गलत निष्कर्ष निकालने, गलत शब्दो के प्रयोग करने, उत्तेजनात्मक ढग से बात करने, अकस्मात् जल्दी मे झूठ बोल जाने तथा जान-बूझकर झूठ बोलने आदि के कुछ उदाहरण दे रही हूं जिनसे यह स्पष्ट हो जायेगा कि बच्चो के लिए सच्चाई के मार्ग पर चलना कितना कठिन होता है।

(अ) गलत निष्कर्ष निकालने के कुछ उदाहरण

विनय की आयु 4 वर्ष की थी। एक दिन वह रेल का खेल खेल रहा था। उसने अपने खिलौनो से रेलवे स्टेशन बनाया था। इसमें कुली, सामान, रेलगाडिया और सिगनल आदि सभी कुछ थे। वह खेल भी रहा था और अपने आप कुछ-कुछ बोलता भी जा रहा था। उसकी बातो से ऐसा लगता था कि वह खिलौनो को भी अपने ही समान जीव जीवधारी प्राणी समझता है और यह मानता है कि खिलौनो को भी सामान्य मनुष्यो की भांति तरह-तरह की आवश्यकताए पडती है। यह सिद्ध करना, इसमें शक नही, बडा कठिन है कि वह जब जानता है कि खिलौने जीवित प्राणी नही है तब भी वह उन्हें जीवधारी प्राणी क्यों मान रहा है। लेकिन प्राय हर बच्चे की एक ऐसी अवस्था होती है जिसमे वह यह अनुभव करता है कि दुनिया की हर चीज जीवधारी है और फिर एक ऐसी भी अवस्था आती है जब बालक जानता है कि अमुक चीज जीवधारी नही है फिर भी कल्पना करता है वह जीवधारी है।

विनय कह रहा था, 'कुली हाफ रहा है।' इसके थोडी देर बाद वह बोला, 'महेश सो रहा है। उसे जगाओ मत,' और फिर बोला, 'वह अब रुक जायेगा और भोजन करेगा। वह भूखा है।'

एक दिन कोई बात बतलाते हुए विनय ने कहा, 'यह बात तब हुई थी जब मै बडा था।' तभी एक किसी वयस्क ने उससे पूछा, 'क्या तब जब तुम अपने पिता के बराबर थे ?' तो उसने उत्तर दिया, 'ओह ! नही, क्योकि तब वे बिल्कुल छोटे थे।' इससे ऐसा लगता है जैसे कभी ऐसा भी समय रहा था जब उसके पिता छोटे थे और वह उनसे बडा था

कभी-कभी बच्चे अपने मन से अपनी रक्षा के लिए ऐसी चीजों की तुलनाए भी कर डालते हैं जिनका परस्पर कोई सबध नहीं होता , या उन चीजों मे केवल कोई बहुत थोडी समानता होती है। राजू की आयु जब 6 वर्ष की थी तब मोहन उसे दक्षिणी अफ्रीका की बडी लम्बी-चौडी कहानिया सुनाया करता था। एक दिन राजू मोहन की कहानियो से ऊब उठा और बोला, 'क्या हुआ, अगर तुम साउथ अफ्रीका देख आये तो—मै भी तो साउथपोर्ट हो आया हू। साउथपोर्ट भी उतना ही अच्छा है जितना तुम्हारा साउथ अफ्रीका ।'

आभा से उसकी सहेली अपने घर में पैदा हुए एक ऐसे नवजात शिशु के बारे मे बहुत-सी बाते दिलचस्पी से बतला रही थी जो न बोल सकता था, न चल सकता था और न जिसके एक भी दात ही निकला था। आभा की आयु 6 वर्ष की थी। थोडी देर बाद वह बोली, 'वाह ! यह भी कोई बात हुई। मेरे यहा एक ऐसा बच्चा है जो चलता है, बोलता है और उसके दात भी है।'

(आ) शब्दों के गलत प्रयोग के उदाहरण

राजू की आयु जब 4 वर्ष की थी तब वह हमेशा बीते हुए 'कल' के लिए 'पिछले सप्ताह' का प्रयोग करता था और विनय बीते हुए 'कल' के लिए हमेशा आने वाले 'कल' का प्रयोग करता था।

नीला हमेशा 'ऊपर' या 'नीचे' शब्दो के प्रयोग मे चकरा जाती थी। इसलिए वह अपनी सुरक्षा के लिए जहा भी इनमे से किसी एक शब्द की जरूरत पड़ती 'ऊपर या नीचे' ये दोनो शब्द कह देती थी।

राजू 2 वर्ष की आयु में 'छोटे' और 'बडे' इन दोनों शब्दो का भेद नही जानता था। वह कभी-कभी छोटी ईट की तरफ सकेत करके कहता, 'यह बड़ी ईट है।'

विनय को 4.5 वर्ष की अवस्था मे ड्राइग का काम बहुत अच्छा लगता था। उसने एक दिन एक मछली की तस्वीर बनायी और कहने लगा, 'अब मै इसके पख लगा दूगा।'

3 वर्ष के दिनेश से एक दिन उसकी मां ने शोर न मचाने के लिए कहा। उन्होने यह भी कहा कि यदि वह शोर मचाता रहेगा तो उनके कान के परदे (ड्रम) फट जायेंगे। दूसरे दिन उसने अपनी मां से कहा, 'मा, क्या तुम मुझे अपने कान मे लगा बेण्ड सुनने दोगी ?'

(इ) उत्तेजनायुक्त हर्ष के कुछ दृष्टान्त

विनय जब लगभग 4 वर्ष का था तो मुर्गियों को कुछ चुगाने गया। लौटकर आने पर उसने अपनी आखे चमकाते हुए कहा, 'मुर्गिया मुझे धन्यवाद दे रही थी।'

दूसरे दिन वह दौड़ता हुआ आया और आंखें नचाते हुए बोला, 'शुक्रवार की

गत को मैने एक लाल गधा बो दिया है। मै खचरों को गधा कहता हू।'

यदि बच्चे कोई विचित्र अनुभव करना चाहते है या जब अन्य बच्चे अपने अनुभव सुना रहे होते है तो वे फिर विचित्रता के लिए किसी भी हद तक जा सकते है।

6 वर्षीया राखी अपनी सहेलियो मे बैठी हुई थी। सभी बालिकाए यह बतला रही थी कि उन्होने उस दिन दोपहर के वक्त क्या-क्या खाया था। बीच ही में एक लडकी ने यह पूछ लिया कि 'क्यों राखी तुमने क्या खाया था ?' उत्तर में शरारत-भरी दृष्टि से उस समूह मे उपस्थित एक वयस्क व्यक्ति की ओर देखते हुए राखी ने इस लहजे से बात कही जैसे उसके सम्मान की रक्षा का कोई बहुत वडा प्रश्न उपस्थित हो गया हो। वह बिल्कुल साधारण स्वर मे बोली, 'मैने आज एक मकड़े को भूना था। मैने खुद ही उसे पकडा था और चूल्हे मे रखा था। वह सचमुच बहुत बड़ा था। क्या तुम लोगो ने भी कभी मकडा चखा है ?' सब बच्चो ने कहा कि 'नहीं, उनमे से किसी ने उसे नही चखा है, तो राखी ने बडे आनन्द से भुंजे मकडे के स्वाद का भी वर्णन कर दिया।

एक दिन 6 वर्ष का बालक सुरेश स्कूल के क्लॉक रूम में दौडता हुआ आया और कहने लगा कि अभी-अभी उसने एक बहुत बडा शेर देखा है। जब उससे वहा पूछा गया कि वहां क्या कोई हाथी भी था ? तो उसने उत्तर दिया, 'हां।' 'तो फिर वहा चीता भी होगा ?' इसके उत्तर में सुरेश ने कहा कि हा, उसने चीता भी देखा है। ऐसा लगता है कि सुरेश की कल्पना उस समय इतनी उर्वर हो गयी थी कि उसने ऐसे सारे जानवर देख डाले थे जिनका नाम ही कभी उसने सुना था।

(ई) एक गलती को दूसरी अशुद्धि द्वारा छिपाने की चेष्टा का उदाहरण

हम 'आभा और तीन भालुओं' की कहानी मे पढ चुके है कि उसने बड़े भालू का चम्मच किस तरह बनाया था।

रेखा की आयु 3 वर्ष की थी। उसे दूध पीना बिल्कुल अच्छा नही लगता था लेकिन उससे हठ किया जाता था कि वह सुबह के नाश्ते के साथ थोड़ा दूध जरूर पिये। एक दिन वह कमरे मे कुर्सी को खुली खिडकी के पास खीचकर दूध का प्याला अपने हाथ मे लिये खड़ी हो गयी। ऐसी लगता था कि कुछ ही देर पहले उसने दूध खिड़की से बाहर फेंक दिया था। उसे कुर्सी पर खडे किसी ने देख लिया जब उससे पूछा गया कि वह इस प्रकार खिड़की के पास खड़ी क्या कर रही है ? तो उसने उत्तर दिया, 'हवा खा रही हू।'

(उ) सभ्य समाज के व्यवहारों को न समझ पाने के उदाहरण

रेखा को अपनी पांचवी वर्षगाठ पर समारोह अत्यन्त [illegible] लगा। उसे

कुल 16 उपहार मिले थे और सभी ऐसे थे जिनमे से प्रत्येक को वह चाहती थी। ऐसा हुआ कि उसकी एक चाची ने नाचने की फ्राक पर पहनने के लिए एक बड़ा अच्छा नेकर भी बनाकर उसे भेट किया। इसमें नीली पट्टियां लगी हुई थी। रेखा को यह बिल्कुल पसन्द न आया कि वर्षगाठ के दिन उसे कोई कपडा भी भेट किया जाये और वह जब नेकर को देखती उसे देखकर रो पडती। बाद मे उसने सबको भेटो के लिए धन्यवाद के पत्र लिखे। नेकर उपहार मे देने वाली चाची को उसने सबसे अन्त मे पत्र लिखा और उस पत्र मे भी यह लिखा,

'चाची,

मुझे नेकर नही अच्छे लगते।

रेखा।'

जब उससे कहा गया कि इस प्रकार का पत्र नहीं लिखा जाता, वह किसी दूसरी तरह का पत्र लिखे तो पहले तो उसने ऐसा करने से एकदम मना कर दिया लेकिन बाद में सध्या को यह पत्र लिखा,

'प्यारी चाची,

नेकर के लिए धन्यावाद !

स्नेहशीला—रेखा।'

मीरा की आयु 3 वर्ष की थी। उन्ही दिनो एक मेहमान आये। सबके सामने नाश्ता रखा गया। थोडे-से भुने चने चबाकर मेहमान ने उसे छोड दिया। लेकिन मीरा ने मेहमान से और चने चबाने का आग्रह करते हुए कहा, 'हमारे भण्डार मे इसी तरह का एक दूसरा दाना भी है। और मा कहती हैं कि वह काफी पुराना हो गया है। अच्छा हो अगर आप उसे भी खाने मे हमारी मदद कर दें।'

एक पुजारी की पत्नी ने अपने यहां एक अन्य पुजारी की पत्नी को चाय पर निमत्रित किया। चाय के दौरान एक मेहमान ने पूछा, 'मैं समझती हू आपके पति ने कल रात मेरे पति के भाषण को सुना था। उनका मेरे पति के भाषण के सबध मे क्या विचार है ?' मेजबान ने कहा, वह नही जानती लेकिन इसी बीच पुजारीजी की 4 वर्ष की पुत्री विभा ने साफ और ऊंचे स्वर मे बडे नाटकीय ढंग से कहा, 'मा, तुम्हें याद नही है क्या ? मुझे याद है, पिताजी ने कहा था, क्या आदमी था वह ?'

(ऊ) जानबूझ के झूठ बोलने की प्रवृत्ति

जैसा कि आपने पहले पढ़ा कि स्वाती नाम की एक ऐसी लडकी का किस्सा लिखा है जिसमे सबंधित बालिका पेसिले और रबडें चुरा लेती थी। लेकिन वह लगातार झूठ भी बोलती थी—यह नही बतलाया गया है। उसके झूठ बोलने का हाल यहा जाता है जब भी उससे लापता पेंसिल या रबड के बारे में पूछा जाता

वह साफ इन्कार कर जाती थी। वह हर पेंसिल के लिए कहती कि वह उसकी है और यह भी बतलाती कि अमुक पेसिल उसे कब मिली थी। वह यहा तक कह देती, 'मै इस दात के निशान से पहचानती हूं कि यह पेसिल मेरी है क्योकि इसे बच्चे ने कल मुह मे दबा लिया था।'

बच्चे चोरी की चीजो को अपना सिद्ध करने के लिए तरह-तरह की कहानिया गढते है क्योकि चोरी की चीज को अपना बताने के लिए न केवल यही जरूरी है कि वे सिद्ध करे या उन्होने चीजे क्यो चुरायी नही होगी बल्कि यह भी जरूरी है वे कि बतलाये कि उन्हें वे चीजे कैसे मिली ?

जब पैसा चुरा लिया जाता है तो चोर को खोजना बडा कठिन होता है क्योकि जब तक चोर का पता चलता है तब तक बहुत सभव है कि उसका प्रयोग कोई ऐसी चीज खरीदने के लिए कर लिया गया हो जो अब हो ही नहीं और फिर चोरी की मुद्रा तो बच्चे के पास रहती भी नहीं। उस मुद्रा के बदले तो और मुद्राए या चीजे आ जाती है। यदि चोरी की मुद्रा भी पकड ली जाये तो भी चोर को तब तक नही पकडा जा सकता जब तक उस पर मुद्रा के स्वामी का कोई चिह्न न हो।

प्रश्नावली

1 शब्दो का सही अर्थ समझने मे बच्चो को किस प्रकार मदद की जा सकती है ? (आ)

2 यदि कोई बच्चा गलत निष्कर्ष निकाल ले तो आप उसके भ्रम को किस प्रकार दूर करेंगे ? (अ)

3 क्या आपको बच्चो द्वारा अपने अनुभव बताए जाते समय उनकी अतिशयोक्ति की प्रवृत्ति के बारे में कोई जानकारी है ? अतिशयोक्ति करने का मौका बच्चो को कब मिला और उनको किस प्रकार सुनाया गया ? (इ)

4 बच्चों को सच बोलना आप किस तरह सिखायेगे ?

5 बच्चों को झूठ बोलने से रोकने में क्रोधित हो जाने से कोई मदद क्यों नही मिलती ?

6. जब बच्चे अपनी मनगढन्त वाते सुनाने लगे तो आपको क्या परेशान हो जाना चाहिए ?

7 क्या आपके सामने कोई ऐसा किस्सा आया है जिसमे बच्चे ने रुपये-पैसे की चोरी की हो ? क्या चोरी का कोई विशेष कारण था ? आपने इस कठिनाई को हल करने के लिए क्या-क्या उपाय किये ?

अध्याय-10

बोलने की शक्ति का विकास

बच्चे के प्रथम 5 वर्षो मे बोलने की शक्ति का विकास हो जाना सचमुच एक बहुत बडी सफलता है। जब भी हमे अवसर मिलता है और हम 5 वर्ष के बच्चे के शब्द-भण्डार और विचारशक्ति की जटिलता पर ध्यान से सोचते है तो हमें बडा आश्चर्य होता है।

यदि हम शिशु की आरम्भिक रुलाई से लेकर उसके तुतलाने और पहले शुद्ध शब्द के उच्चारण तक की प्रगति का अध्ययन करे तो हम समझ सकेंगे कि बोलने की कला कितनी जटिल है। और यदि हम उसकी प्रगति पर बराबर ध्यान रखे और यह देखते चले कि वह दिन-प्रतिदिन किस प्रकार नये शब्द सीखता जाता है तो हमे बोलने की कला की जटिलता समझ मे आ जायेगी। हमारा यह अध्ययन और भी मनोरजक हो जायेगा यदि हम यह देखे कि बच्चे के वाक्य किस प्रकार क्रमश· लम्बे होते चले जाते है।

बच्चा भाषा का अपने विचारों तथा भावनाओ को दूसरो तक पहुंचाने के लिए प्रयोग करता है। वह भाषा का प्रयोग अपनी गतिविधियो का उल्लास बढ़ाने के लिए भी करता है—इसलिए बडों को चाहिए कि वे उसके विचारो या उसकी भावनाओ का या उनको अभिव्यक्त करने के तरीको का उपहास कभी न करें क्योंकि ऐसा करने से संभव है बच्चा अन्तर्मुखी हो जाये और अपने अनुभवो को दूसरो के सामने प्रकट करना ही छोड दे। ऐसे मौके तो अवश्य आ सकते है जब बड़ो को बच्चो के विचार कुछ अजीब और नये-से लगें लेकिन बच्चा ऐसा नही समझता। उसे अपने वही भाव स्वाभाविक लगते है। इसलिए बडो को उसकी बातें सुनने के बाद यह किसी भी प्रकार प्रकट नहीं होने देना चाहिए कि वे उसका मजाक उडा रहे हैं। यदि उस पर यह असर हुआ कि अमुक विचार प्रकट करने की वजह से उसका मजाक उडाया गया है तो उसे बड़ा धक्का लगेगा।

कोई भी बच्चा यह सहन नही कर सकता कि उसकी बातो को हर ऐरे-गैरे के सामने दोहरा दिया जाये। यदि ऐसा किया गया तो वह अपने आत्मा के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने के लिए भाषा का प्रयोग करना बन्द कर देगा और फिर केवल

जरूरी बातें करने के लिए ही बोलेगा। जिस व्यक्ति का काम बच्चे की देखभाल करना हो उसे चाहिए कि वह ऐसा वातावरण पैदा करे जिसमे बालक अपनी आशाओ, आशंकाओं और खुशियो के सम्बन्ध मे निस्सकोच भाव से बात कर सके और यह विश्वास कर सके कि वह जो कुछ कहेगा उसे समझने की चेष्टा की जायेगी तथा हर आदमी को उसकी बातें नहीं बतलायी जायेगी।

हममें से जिन लोगो ने भाषा के विकास का अध्ययन नही किया है--वे भी यह जानते है कि बच्चे मे भाषा का भाव किस प्रकार विकसित होता है। हम यह भी जानते है कि बच्चे को न केवल यही सीखना पडता है कि उससे जो कुछ कहा जा रहा है उसे समझे बल्कि बच्चे से यह भी आशा की जाती है कि वह जो कुछ समझेगा उसका उत्तर देने की भी कोशिश करेगा। उत्तर देने के प्रयत्न का यह अर्थ है कि उसे अपने विचारो को भी एक रूप देना होगा। यही नहीं बल्कि उसे फेफडो, गले और मुह को भी एक प्रकार से निश्चित मुद्राए प्रदान करनी होगी जिससे वह भाषा द्वारा अपने विचार लोगो को समझा सके। लेखन कार्य की टेकनीक और भी जटिल होती है क्योंकि फिर भाषा को समझने की ही बात नही रह जाती है बल्कि पढ सकने और फिर लिख सकने की बात भी पैदा हो जाती है। यदि बच्चे की प्रारंभिक बोली मे कुछ विशेषताए मा को प्रतीत हो तो उनके जरिए बच्चे को और अधिक सहायता करने का प्रयत्न करना चाहिए। इस प्रकार बच्चे की सफलता में विश्वास हो जाने पर मा बच्चे को प्रयत्न करते रहने के लिए और भी अधिक उत्साहित कर सकेगी। इसलिए, हम लोगो को इन प्रश्नों पर और भी विस्तारपूर्वक विचार करना चाहिए।

यह तो निश्चित है कि बच्चा आरम्भ मे बोलने का जो भी प्रयत्न करेगा--उसका प्रयत्न बहुत ही अपूर्ण होगा। कुछ बच्चे तो इस बात से बहुत ही डरते है कि कही वे असफल न हो जाये और उस समय तक नही बोलते जब तक भाषा को भली-भांति समझ न ले। इसके विपरीत कुछ बच्चे ऐसे भी होते है जो शब्दो का उपयोग बिना इस बात की परवाह किये आरम्भ कर देते है कि वे उसे शुद्ध बोल रहे है या अशुद्ध।

बच्चो की बोलने की शक्ति का विकास किस प्रकार होता है--इस सम्बन्ध मे अनेक व्यक्तियो ने अध्ययन किये हैं। कुछ ने तो यह बतलाया है कि किस अवस्था मे बच्चे का शब्द-भडार कितना होता है और कुछ ने यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि आरभिक अवस्था मे बच्चा बोलने की जो चेष्टाए करता है उनकी क्या विशेषताए होती है। मैने स्वय भी इस विषय मे जो शोध किया उससे प्रकाशित बातों की ही पुष्टि होती है। पहले बच्चा सज्ञाओं को सीखता है। क्रियाओं या अन्य बातो की तरफ उसका ध्यान कम जाता है। अक्सर एक ही शब्द से बच्चा पूरे वाक्य का काम ले लेता है। अन्त मे वह जिस विभक्ति का प्रयोग करता है उससे बच्चे के अभिप्राय का संकेत मिल जाता है।

2 वर्ष के बच्चो के शब्द-भण्डार मे अपेक्षाकृत क्रियाओं (Verbs) की संख्या कम होती है। इस अवस्था मे बच्चा बहुत ही छोटे शब्दो के वाक्यो का प्रयोग करता है। कुछ बच्चे तो इसी आयु में काफी शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं लेकिन अधिकाश बच्चो का इस अवस्था मे शब्द-भण्डार सीमित होता है। सन्तोष जब सवा 2 वर्ष का था तो केवल चार शब्द बोल पाता था। वे शब्द थे 'सेव' 'क्वेक, क्वेक', 'पूसी' और 'सब गये।' वह इन शब्दो का अन्य बहुत-से बच्चो की भाति व्यापक प्रयोग नहीं करता था। वह 'सेव' से 'सन्तरे' और 'बेर' का ही काम नही लेता था और न 'क्वेक क्वेक' से हर तरह की चिड़िया को ही पुकारता था। लेकिन ढाई वर्ष के बाद उसका शब्द-भण्डार दिन दूनी और रात चौगुनी गति से बढ़ने लगा। वह औसत दर्जे का अच्छा बुद्धिमान छात्र सिद्ध हुआ। अपने स्कूल के काम तथा पुस्तको मे उसने विशेष रुचि दिखलायी। इसलिए यदि किसी बालक की बोलने की शक्ति का विकास विलम्ब से हो तो इसका अर्थ यह नही है कि वह योग्यता मे किसी से घटकर रहेगा।

3 वर्ष की आयु तक या कुछ बच्चे इससे भी कुछ पहले उचित ढग से वाक्य बनाकर बोलने लगते है और प्रश्न जो प्राय विभक्ति पर ही निर्भर करता था--साधारण ढग से किया जाने लगता है। उदाहरण के लिए 'क्या मै आ जाऊ ?' धीरे-धीरे 'और' तथा 'लेकिन' जैसे सम्बन्धकारी शब्दो का भी वे प्रयोग करने लगते है। हालाकि 4 वर्ष के आरभ तक बच्चा लगभग धारा प्रवाह बोलने लगता है और उसकी वाक्य रचना भी साधारणतः शुद्ध रहती है लेकिन फिर भी बचपन का कुछ असर उसकी भाषा पर रहता ही है।

लेकिन 4 वर्ष के बच्चे को भी समय के सम्बन्ध मे कठिनाई होती ही रहती है। बहुत-से बच्चों को इस अवस्था मे क्रिया के भूतकाल के रूपो मे कठिनाई होती है। वे क्रिया के एक रूप को दूसरी क्रिया के रूप के स्थान पर काम में लाने का प्रयत्न करते हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि बच्चो की रंगो को उनके नाम से पुकारने की शक्ति बहुत धीरे-धीरे विकसित होती है। वे किसी भी रग को अन्य रगो के साथ नही पहचान पाते। केवल एकाध ही रंग जानते हैं और उसका नाम याद रखते है। उदाहरण के लिए राखी 3 वर्ष की अवस्था मे केवल नीले रग को ही पहचान पाती थी। मोहन पौने तीन वर्ष की आयु मे केवल लाल रग को और विनय पौने चार वर्ष की अवस्था मे केवल काले और सफेद रग को जानता था लेकिन बाद मे उसने लाल, हरे और तब नीले को पहचानना भी सीख लिया।

लेकिन उच्चारण के मामलों में बच्चों में अपेक्षाकृत अधिक समानता होती है। बहुत कम बच्चों को 'फ' स्वर के मे दिक्कत होती है विनय को पौने चार

वर्ष की अवस्था मे स्वरो के उच्चारण मे खास दिक्कत होती थी लेकिन उसने 'फ' का उच्चारण बडी जल्दी सीख लिया। केवल एक बार ही उसे बतलाने की जरूरत पडी थी। यह सच है कि उसने बाद में कई दिन प्रयत्नपूर्वक इसका ठीक-ठीक उच्चारण करने का प्रयत्न किया था। इसी तरह से बच्चों को 'प' के उच्चारण मे भी बहुत कम कठिनाई होती है। लेकिन राजू को 'प' के उच्चारण के सबध मे कठिनाई हुई थी और उसने 'प' की जगह 'फ' का प्रयोग शुरू कर दिया था। 'द' के उच्चारण मे अधिकाश बच्चो को कठिनाई होती है। कुछ 'द' की जगह 'ड' का प्रयोग करने लगते है तो कुछ 'ब' का। कुछ बच्चों को 'ल' के प्रयोग मे भी कठिनाई होती है। हालाकि 'ल' के उच्चारण मे उन्हे कोई दिक्कत नहीं होती। 'र' के प्रयोग में भी अधिकाश बच्चे परेशानी अनुभव करते हैं। इसलिए कभी तो वे 'य' का और कभी 'ल' का 'र' की जगह प्रयोग करने लगते है।

बच्चा बोलने का ढग प्रथम 5 वर्षो में सीखता है और उसकी यह शिक्षा इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने बडों से क्या सुनता है। यदि जो कुछ वह सुनता है वह स्पष्ट और शुद्ध है तो अधिकांशत- यही सम्भावना है कि उसके शब्दो के उच्चारण भी शुद्ध होगे। जो अभिभावक अपने बच्चो के शुद्ध उच्चारण की ओर ध्यान नही देते उनके बच्चो तथा उनको भी आगे चलकर बच्चे की उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण कभी-कभी बडी चिन्ता में पड जाना पडता है। इस चिन्ता से बचने का सर्वोत्तम उपाय यही है कि आप बच्चे को उसकी आरभिक अवस्था मे ही शुद्ध बोलना सिखा दें। इतना तो निश्चित ही है कि हर बालक की एक-न-एक ऐसी अवस्था जरूर होती है जब वह अशुद्ध उच्चारण की दशा से गुजरता है लेकिन अभिभावकों का यह कर्तव्य है कि वे बालक के अशुद्ध उच्चारण को उसके स्वभाव मे न बस जाने दे। मां को चाहिए कि वह बच्चे को बतलाये कि शुद्ध बोलने के लिए मुख की आकृति किस-किस प्रकार बनानी और बदलनी चाहिए। इस कार्य के लिए वह एक दर्पण में भी मुख-मुद्राओं का अध्ययन कर सकती है। इस अध्ययन के बाद वह बच्चे के सामने प्रदर्शन कर अपना अनुकरण करने के लिए बच्चे को उत्साहित कर सकती है।

लेकिन इन चेतावनियों से मेरा आशय यह नही है कि आप बच्चे की बोलने की शक्ति पर आवश्यक बोझ लादें या उसके बोलने पर बहुत अधिक ध्यान देकर उसको आत्म-जाग्रत बना दे। ऐसा करना तो बड़ा ही हानिकारी होगा क्योकि इससे उसकी अभिव्यक्ति शक्ति का विकास अवरुद्ध हो जायेगा। ऐसा करने की अपेक्षा तो यही अच्छा होगा कि आप बोलने में उसकी कोई भी सहायता ही न करें। बच्चे के बारे मे वितण्डावाद या बावेला खडा करना कदापि अभीष्ट नही है।

बच्चे की रुचि और उसके भाषा सम्बन्धी विकास की दृष्टि से यह जरूरी है

कि बालक की पुस्तके विभिन्न विषयो की रहें। वास्तविक जीवन की साधारण घटनाओ की कहानिया, साहस की कहानिया, पौराणिक कहानिया भी रहें और इनके साथ प्रकृति सम्बन्धी ज्ञान देने वाली, इतिहास आदि की पुस्तके भी बच्चो की आयु के अनुकूल उन्हे पढ़ने के लिए दी जाये। बच्चे की पुस्तको की अलमारी मे एक कविता सग्रह भी रहे और उसे तरह-तरह की कविताए भी पढ़कर सुनायी जाये। बच्चे को दूसरो की कण्ठाग्र की हुई कविताए या अपनी कविताएं लिखने के लिए भी उत्साहित करना चाहिए। जहां बड़ों से बच्चो को कविता-रचना के लिए प्रोत्साहन मिलता है बच्चे तुरन्त कविताएं बनाना शुरू कर देते है। ऐसे बहुत-से व्यक्ति है जिन्होने इस प्रकार अपने पास कविताओ का अच्छा सग्रह कर लिया है।

बच्चे मौलिक कहानिया और मौलिक नाटक भी उसी प्रकार लिखने लगते है जिस प्रकार मौलिक कविताए। बडों को बच्चो की ऐसी हर रचनात्मक प्रवृत्ति को सहानुभूतिपूर्वक प्रोत्साहित करना चाहिए।

हकलाना

इस स्थान पर हकलाने के प्रश्न पर भी विस्तारपूर्वक विचार कर लेना अच्छा होगा क्योकि यदि हकलाने के कारणों को पहले से ही समझ लिया जाये तो हकलाने की आदत को छुड़ाने मे और उसे शुरू से ही बिल्कुल ही न पडने देने में सहायता मिलेगी।

बहुत-से लोग यह समझते है कि हकलाना जिह्वा के किसी दोष विशेष के कारण उत्पन्न हो जाता है या बच्चा किसी उच्चारण को ठीक-ठीक से उच्चारित न कर सकने की वजह से हकलाने लगता है। लेकिन वास्तविकता इससे भिन्न है। यह कठिनाई केवल मानसिक खिचाव के कारण पैदा होती है। बहुत-से बच्चे घबडाहट मे हकलाकर बोलने लगते है। बच्चा जब कोई बात कह रहा हो तो उसे अपनी बात जल्दी से कह डालने के लिए कभी नहीं कहना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे के स्नायु तन्तु तन जाते है और इसकी वजह से वह हकलाने लगता है।

हकलाने से हकलाने वाले बालक की जीभ में कुछ तनाव-सा पैदा हो जाता है। इस तनाव को सदैव के लिए समाप्त कर देने का एक ही रास्ता है और वह है कि ऐसे व्यक्ति में शान्त विश्वास की भावना उत्पन्न कर दी जाये। यह भावना उत्पन्न हो जाने पर ही हकलाने का सदैव के लिए इलाज हो सकेगा।

हकलाने वाले का हकलाना छोडाने के लिए उसके साथ कोई भी चालाकी नहीं की जानी चाहिए क्योंकि इस चालाकी से दोष और भी अधिक गहरा हो जायेगा और उपचार में बहुत अधिक समय लग जायेगा हकलाने वाले को यदि सहानुभूति का मिलता है तो उसे बडी मिलती है ऐसा व्यक्ति बहधा एक

आदमी से धाराप्रवाह बातें कर लेता है। इसके विपरीत दूसरे आदमी से बातें करने मे वह प्रायः हर शब्द के बाद कठिनाई का अनुभव करता है और रुक-रुककर बोलने लगता है।

हकलाने वाले को श्रोता द्वारा उसकी बात ध्यानपूर्वक सुने जाने से विशेष सहायता मिलती है। इस साधन द्वारा हकलाने वाला अपने प्रति संचेत्य नही हो पाता और उसका दोष दूर होने मे सहायता मिलती है। यदि उसकी बात ध्यान से नही सुनी जाती तो यह दोष और बढ जाता है। यदि वह जानता है कि श्रोता उसकी बात ध्यान और स्नेहपूर्वक सुन रहा है तो वह अपनी बात कहने पर ही ध्यान रखता है। श्रोता को केवल यही चाहिए कि वह उसके बोलने के ढग पर ध्यान न दे केवल बात पर ध्यान दे।

विभिन्न अवस्थाओ में बच्चे किस प्रकार बोलते हैं इसके उदाहरण प्रस्तुत अध्याय में दिये जा रहे हैं। यहां बोलने की कठिनाई का केवल एक दृष्टान्त दिया जा रहा है क्योंकि इस सम्बन्ध में पिछले अध्यायो मे ऐसी कठिनाइयों के अनेक दृष्टान्त दे चुकी हूं जो बोलना सीखने वाले बच्चों के सामने आ उपस्थित होती है।

चित्रा की 'श' न बोल पाने की दिक्कत

चित्रा अपने बचपन मे 'श' नही बोल पाती थी। वह हमेशा 'स' बोलती थी। वह 'शॉप' को 'सॉप' कहती थी और 'शिप' को 'सिप' कहती थी। जब वह 6 वर्ष की हो गयी तो जब भी 'श' किसी शब्द के आरम्भ में आता तो वह उसका उच्चारण वाछित रीति से कर लेती लेकिन जब वह किसी शब्द के बीच मे आता तो वह ऐसा नही कर पाती थी। उदाहरण के लिए 'प्रेशस' 'ऐक्शस' या 'फ्रेण्डशिप' में वह 'श' का उच्चारण नही कर पाती थी। इसकी जगह पहले की भाति 'स' का ही प्रयोग करती थी। कुछ शब्द उसके बोलने की शैली में इस प्रकार बन गये थे कि उनका शुद्ध उच्चारण कर सकना उसके लिए सर्वथा असभव हो गया था। इसके अलावा चित्रा में यह भी भावना पैदा हो गयी थी कि वह 'श' का उच्चारण ठीक से कर ही नहीं सकती।

जब 7 वर्ष की आरंभिक अवस्था मे चित्रा स्कूल गयी तो उसकी अध्यापिका ने एक दर्पण मे दिखलाया कि 'स' और 'श' के उच्चारण मे क्या भेद है और दोनो कैसे बोले जाते है। जैसे ही चित्रा ने यह अनुभव किया कि वह किसी शब्द के बीच मे भी 'श' बोल सकती है—उसने बहुत जल्दी ही अपने दोष को दूर कर लिया क्योकि चित्रा में किसी चीज को समझकर उसे सीख लेने का गुण बहुत अधिक मात्रा मे था।

यदि उसे सावधानी से मदद न की गयी होती तो बडे हो जाने तक चित्रा के मन में यही भाव रहता कि वह अन्य लोगों से भिन्न है और वह कुछ शब्दों को इस

प्रकार नही बोल सकती जिस प्रकार अन्य लोग बोलते है। शायद वह यह भी सोचने लगती कि उसकी जिह्वा या गले मे ही कुछ खराबी है।

विभिन्न अवस्थाओं के बच्चों की वास्तविक बोली के कुछ उदाहरण

छोटे बच्चे का किसी शब्द से वास्तविक अभिप्राय क्या है—उसे कभी-कभी वही समझ सकता है जो बच्चे की बात सुन रहा हो। नीचे लिखे कुछ उदाहरणो मे जहा कोई सन्देह की बात है—वहा शब्द का वास्तविक अर्थ कोष्ठक मे लिख दिया गया है। एक बच्चे के बोलने का केवल एक ही उदाहरण दिया गया है।

डेढ़ वर्ष का बच्चा

(1) 'मै यह।' [(मी दिस) इसका अर्थ यह है कि क्या मै यह ले लू ?]

(2) 'बच्चा बाजा' [(बेबी बैड) इसका अर्थ यह है कि 'मै यह बजा रहा हू।']

दो वर्ष चार मास का बच्चा

(1) 'घोड़ा पीठ' [(ऑन हॉर्स बैक) अभिप्राय यह है कि 'मुझे घोडे की पीठ पर बैठा दो।']

(2) 'सब ईटें' [(ऑल दी ब्रिक्स) यहां अभिप्राय यह कि मेरे पास सब ईटे हैं।]

(3) 'दादी आती नही ?' [(नॉट ग्रेण्डमा कमिग) बच्चे का मतलब यह है कि 'क्या दादी नहीं आ रही हैं ?']

(4) 'चकी किताब नई' [(नॉट चकी हेव बुक) अर्थात् 'मैं चंकी को यह किताब नही देना चाहता। उसे ऐसा करने से रोकिए।']

(5) 'काम खतम' [आई' व टिपिट ओवर]

दो वर्ष आठ मास का बच्चा

यह मीरा के प्रारंभिक वाक्य है। वह इन वाक्यों में अपने विचारों को सम्बद्ध करने की चेष्टा करती है लेकिन इनमें सम्बन्धकारी शब्दों का अभाव है।

(1) 'यह टूट गया, यह नीला है।, वह लाल है, यह दाना टूट गया, वे दाने है, दानो का रग अच्छा है।'
(2) 'यह बाधो।'
(3) 'मै दूसरी अलमारी मे इसे रखूंगी।'
(4) 'यह 'सॉसर' है।' (वह प्लेट थी।)
(5) कसीं चाहिए आपको

साढ़े तीन वर्ष का बच्चा

पहले उदाहरण में सवध जोड़ने वाला 'और' शब्द है।

(1) 'यह नीले पौने (पौधे) है और वे सफेद पौने (पौधे) है।'

(2) 'ओह ! यह गिर पडा। अब नही उठेगा।'

(3) 'उसे, आख नहीं है।' (आशय यह है कि उस काठ के घोडे के आखे नहीं हैं।)

चार वर्ष का बालक

प्रथम उदाहरण मे वाक्य को जोडने वाला शब्द 'लेकिन' और सबधकारी सर्वनाम 'जो' का प्रयोग किया गया है। ये शब्द दीपक ने रगीन पेंसिल से एक चित्र बनाते हुए कहे थे।

(1) यह लडका है, आदमी नही है। मै आदमी की टोपी बना सकता हू—टोपी ही ऐसी चीज थी जिससे दीपक आदमी और लड़के का फर्क समझता था—'यह नीले रग के चेहरे का लड़का है। और किसी का मुह नीला नही है। लेकिन इससे क्या। अपना मुह नीला रगने वाले लोग भी अजीब होते है।'

(2) 'क्या पिछले हफ्ते (बच्चे का मतलब बीते हुए 'कल' से था) मेरे पास पत्ते नही थे ?'

(3) 'इसे फिर सीना होगा'—बच्चे के जूते से एक बटन निकल गया था।

(4) 'मै कभी लाल नही दिखता'—मतलब यह था कि मेरे गाल कभी लाल नही दिखलायी पड़ते।

बच्चे अक्सर नर्सरी (बालशाला) की कविताओं के शब्द गुनगुनाने लगते है लेकिन वे इस बात की परवाह नही करते कि वे जो कुछ दोहरा रहे है उनसे मूल भाव प्रकट होता है या नही। कभी-कभी वे अपने कविता-पाठ द्वारा एक नया ही अर्थ पैदा कर लेते है। कभी वे कविता को बिना उसके अर्थ को समझे ही पढ़ने लगते है क्योकि उस कविता के शब्दों के बोल उन्हे अच्छे लगते हैं। इस तरह के कुछ उदाहरण बिल्कुल बच्चों की ही भाषा मे नीचे दिये जा रहे हैं। जिन उदाहरणों मे केवल एक पक्ति से ही काम चल गया है—वहा मैने पूरी तुकबन्दी नही लिखी है।

'मेरी हेड ए लिटिल लैम्ब' को विभिन्न बच्चे किस प्रकार से पढते हैं—ये उसके उदाहरण है।

विभा (साढे तीन वर्ष)

मेरी हेड ए लिकिल लैम्ब

'इट वाज फ्लीस ह्वाइट एज स्नो'
'एण्ड 'एट एव्रीह्वियर' एट मेरी वेट'
'दि लैम्ब वाज श्योर टू गो'

राखी (चार वर्ष)

'मेरी हेड ए लिटिल लैम्ब'
'इट फीट वाज ए ह्वाइट स्नो'
'एण्ड एव्रीह्वेयर' एट मेरी वेण्ट'
'दि लैम्ब वाज श्योर टू गो'

राजू (चार वर्ष)

'मेरी हेड ए लिकिल रेम'
'हर फ्लीट वाज ह्वाइट एज स्नो'
¤ ¤ ¤
'इट वाज एनेण्स्ट दि स्मूल'
(ह्विच वाज अगेन्स्ट दि रूल)
ये कुछ और तुकबंदिया है--

केशव (चार वर्ष आठ मास)

'जैक फैल डाउन एण्ड ब्रोक हिज क्राउन'
'एण्ड एली बि गॉन देन आफ्टर'
'लिटिल बोपीप हेज लॉस्ट हर शीप'
'एण्ड डजण्ट टू नो'
'एण्ड वेगिंग हिज टेल बिहाइण्ड हिम'

रेखा (साढ़े तीन वर्ष)

'पॉथरीन गिनिंग, ए माइटी साग'
'शैल ह्वी बी कैप्टिन लिनिंग टू घोस्ट'
'फॉर एवर एण्ड एवर आमेन।'
उक्त पाठ रेखा ने इस कविता का दिया था--
'ग्लोरी बी टू दि फादर एण्ड टू दि सन एण्ड'
'टू दि होली घोस्ट, फॉर एवर एण्ड एवर'
आमीन

प्रश्नावली

आप आपनी जानकारी से कुछ ऐसे शब्दों को बतलाइए जिन्हे बच्चे ने सबसे पहले बोला हो ? इन शब्दो से वाक्यो का काम किस प्रकार लिया गया ? बच्चे की उस समय क्या आयु थी जब उसने बोलना शुरू किया था और इसके बाद कब उसने शुद्ध वाक्यो का बोलना शुरू किया ?

बच्चो की बोलने की कुछ ऐसी विशेषताए बतलाइए जिन्हे आपने देखा हो ? जहां सम्भव हो वहा बच्चों की आयु भी बतलाते जाये ?

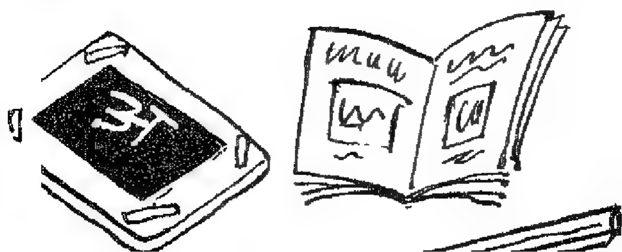
बोलना सीखने में कौन-कौन-सी बाते आती है ? ऐसे कौन-से दोष है जिनकी वजह से सफलता में बाधा पड सकती है ?

जब आप बचपन मे अपनी मातृभाषा सीखते है और फिर आगे चलकर कोई विदेशी भाषा सीखते है तो दोनों शिक्षाए प्राप्त करने में कौन-सी बाधाएं समान रूप से आती है और कौन-सी कठिनाइयां कुछ भिन्न होती है ?

विभिन्न अवस्था में बोलने की शक्ति के विकास मे कहानी, कविता और चित्रों से किस प्रकार मदद मिलती है ? आप बच्चे की आरम्भिक कविताओ और चित्रकारिता का उसकी बोलने की शक्ति को बढाने मे किस प्रकार प्रयोग करेंगे और बच्चे से इनका प्रयोग किस प्रकार करायेगे ?

यदि किसी बच्चे में हकलाने के लक्षण प्रकट होने लगें और उसे हकलाने की आदत तब तक न पडी हो तो उस बच्चे के दोष को न बढ़ने देने के लिए आप क्या करेंगे ? अपनी जानकारी से कोई भी दृष्टान्त दीजिए और बतलाइए इस प्रवृत्ति के मूल मे कौन-कौन से कारण थे ?

क्या आप बच्चों द्वारा शब्दों के गलत प्रयोगो अथवा बात को गलत समझने के कुछ उदाहरण दे सकते है ? क्या आप जान सके कि ऐसी अशुद्धियां क्यो उत्पन्न हुई और उनको किस प्रकार रोका जा सकता था ?



अध्याय-11

उत्तरदायित्व

मैने इस सम्पूर्ण पुस्तक में अब तक यह दिखलाने का प्रयत्न किया है कि बच्चे को क्रमश अपना सामान रखने मे, अपने व्यवहार ओर आचरण मे ओर अपनी गतिविधि मे किस प्रकार उत्तरदायी बनाते जाना चाहिए। लेकिन इसके साथ ही मै यह भी अनुभव करती हूं कि बच्चे को समय से पहले ही और बहुत भारी जिम्मेदारी सौप देने में भी निश्चित खतरे है। बहुत-सी लडकियो और कुछ लड़को को अपन छोटे भाई-बहनो की साज-सभाल का भार घण्टों के लिए सौप दिया जाता है। ऐसा एक दिन नहीं वरन् लगातार वहुत दिनो, हफ्तो और महीनो तक किया जाता हे। इस प्रकार की जिम्मेदारी सौप देने से उनके खेल मे बाधा पडती है और अक्सर उनका विकास अवरुद्ध हो जाता है क्योकि उनका अधिकांश समय छोटे बच्चो को गोद मे लेकर इधर-से-उधर घुमाने में, उन्हें खिलाने और उनकी देखभाल में निकल जाता हे। छोटे बच्चो को भी अपने बडे भाई या अपनी बडी बहन के साथ रहने मे वाछित चीजे नही मिल पाती। बडा बच्चा अक्सर छोटे भाई या बहन की देखभाल करने के साथ ही उसे दण्ड देने का भार भी अपने ऊपर ले लेता है। मैने अक्सर देखा है कि बडी बहन छोटे भाई या बहन के छोटे-से अपराध पर भी उसके चपत जमा देती है। छोटे बच्चे इसका मूल कारण या अर्थ बिल्कुल नहीं समझ पाते है। मेरा तो ख्याल है कि बडे बच्चों को छोटे बच्चों का भार जब अत्यन्त गुरु प्रतीत होने लगता है और उनकी समझ मे जब यह नहीं आता कि इच्छित कार्य किस प्रकार कराया जाये तो वे मारना-पीटना शुरू कर देते है।

किसी भी दशा में हम बडे बच्चों से छोटे भाई-बहनो के लिए और अधिक अच्छे व्यवहार की आशा नही कर सकते यदि उनके साथ भी बचपन में इसी प्रकार का व्यवहार होता आया है। अच्छा हो यदि बडे बच्चो को स्कूल छोडने के पहले यह भी सिखा दिया जाया करे कि उन्हे अपने छोटे भाई-बहनो के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए। ऐसा करने से छोटे बच्चों और बडे भाई या बहनो मे वे दोष उत्पन्न न हो सकेंगे जो उक्त प्रकार की सगत के कारण पैदा हो जाते है। बडे बच्चे हमेशा छोटे बच्चों को गोद में ही लादे रखना अपना कर्तव्य नही समझेगे बल्कि जब



भी मौका होगा उन्हे खुले रूप से पैदल चलने और भागने-दौडने देंगे तथा इस प्रकार छोटे बच्चे को इस बात का मौका देगे कि वह अपनी गति से प्रगति करे, अपने कपडो के बटन लगाने लगे; अपना हाथ-मुह धोने लगे और वह सब काम करने लगे जिन्हे बडे और छोटे बच्चे के बडे भाई-बहन बडी खुशी से उसके लिए करने को तेयार हो जाते है।

बच्चे की देखभाल करने मे विकसित व्यक्ति को ही अपना चातुर्य और अपनी योग्यता पर्याप्त मात्रा मे लगानी पडती है—इसलिये यह जरा भी स्वाभाविक न होगा यदि छोटे बच्चे की देखभाल अल्प विकसित एव विकासशील बडी आयु के बच्चे को सौप दी जाये कि उसे वह भार-सी प्रतीत होने लगे। इसके अलावा हर बच्चे की प्रारभिक अवस्था मे सहानुभूतिपूर्ण समझदारी की बडी जरूरत होती है और यह उसे किसी अनुभवी व्यक्ति से ही मिल सकती है। मेरा ख्याल है कि किसी बच्चे पर घर को अकेला छोड देना या उस पर पूरा खाना बनाने का काम छोड देना या सारे घर की सफाई का काम उस पर डाल देना यदि कुछ ऐसी जिम्मेदारियां हैं जो उगते हुए बच्चो के लिए बहुत भारी होती हैं और उन पर नही डाली जानी चाहिए।

बच्चों पर कुछ खास काम नियमित रूप से डाल देना उनके विकास में सहायक होता है—इसमें कोई शक नही, लेकिन ये काम ऐसे होने चाहिए जिनको कर सकने की क्षमता उनमें हो। प्रारभ मे बच्चो से संदेश भिजवाने या तश्तरिया धुलवाने के कार्यो में सहायता लेनी चाहिए और धीरे-धीरे इन कामों को उन्हे स्वतत्र रूप से करने देना चाहिए।

आगे चलकर बच्चो से यह भी आशा की जा सकती है कि वे अपने कपडे और खिलौने साफ रखें और अपना हाथ-मुह अपने आप धोकर सफाई से कपडे पहन ले। लेकिन ऐसा करने के लिए उन्हे आरभ से तैयार करते रहना चाहिए। उन्हें ऐसा बना देना चाहिए कि वे अपना काम अपने आप कर लें और जहा तक हो सके बडो की सहायता के सहारे न रहे। यदि बच्चे अपना कोई जानवर पालते हैं तो यह भी करना चाहिए कि वे अपने जानवर की देखभाल खुद कर ले। ऐसा कर सकना हर छोटे बच्चे के लिए बडा कठिन होता है और उसे इस क्षेत्र मे स्वतंत्र बना देने के लिए यह आवश्यक है कि उसे आरभ मे काफी मदद दी जाये। इस संबध मे सफाई करना ओर खाना खिलाना ये दो ऐसी बाते है, जो नियमित रूप से होनी चाहिए। बच्चा जब शुरू-शुरु में कोई जानवर पालता है तो उक्त दोनो ही काम अत्यन्त उत्साहपूर्वक करता है लेकिन ज्यो-ज्यो समय बीतता जाता है उसका उत्साह ठडा होता जाता है और उसे दोनो ही कामों से ऊब होती जाती है। बडों को वह तो मान ही लेना चाहिए कि वह बच्चे को कोई जानवर पालने की अनुमति देगे तो कुछ समय बाद ऐसा अवश्य होगा इसलिए बाद में ाब भी जरूरत हो बच्चे की उसके प्रिय जानवर की

देखभाल में आवश्यकतानुकूल मदद करनी चाहिए।

बच्चे को क्रमशः रुपये-पैसे का मूल्य और उपयोग करना भी सिखाना चाहिए। वह दुनिया मे कमाने वाले व्यक्ति की हैसियत से प्रवेश करता है—इसलिए यह बडा ही जरूरी है कि उसे इस प्रकार का अनुभव हो। ऐसा अनुभव न होने की दशा मे उसे बडी कठिनाई होगी। बच्चे से पैसा खर्च करवाने की आदत शुरू से डलवानी चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि वह हर मुद्रा का उचित मूल्य समझने लगे। उससे पैसा बचाने का अभ्यास भी कराना चाहिए। पैसे द्वारा बच्चे से उसके मन की चीज भी खरीदवानी चाहिए। खासतौर से उस समय जब उसने काफी रकम जोड ली हो। लेकिन बच्चो से यह आशा नहीं करनी चाहिए कि वे अपनी आवश्यकता की मूल्यवान चीजे भी इसी प्रकार खरीद लेंगे। ऐसी आशा करना—बच्चो से बहुत बडी आशा करना होगा। यह किया जा सकता है कि बच्चो से कह दिया जाये कि वे छोटी-सी निश्चित रकम जोडकर दिखलाएं और फिर शेष पैसा अभिभावक मिलाकर वह चीज बच्चे को खरीद देगे।

बच्चे को यह शिक्षा तो आरंभ से ही मिलनी चाहिए कि वह अपने समय का प्रयोग किस प्रकार करे और कौन-कौन-से कार्य करे। आजकल बच्चो को न केवल अपनी छुट्टी के समय बल्कि स्कूल में पूरे दिन इस बात की स्वतन्त्रता दी जाने लगी है कि अपना काम चुन ले। यह कार्य अक्सर माण्टेसरी आदि पद्धतियो के जरिए कराया जाता है। ऐसा करना बच्चे के लिए उपयोगी होता है क्योकि बच्चे मे खेल जैसा उत्साह ही हर काम के लिए रहता है और वह शिक्षा के मामले मे भी अपना उत्तरदायित्व समझने लगता है। कला, संगीत, काव्य, हस्त उद्योग आदि के प्रति लोगो का सम्मान बढ़ता ही जा रहा है, इसलिए बच्चों के लिए इनमे से अपनी रुचि के किसी भी विषय में योग्यता प्राप्त करने का द्वार खुलता जा रहा है और सुविधाए बढती जा रही है। किताबो की विद्या अर्जित करने मे ही बच्चे की योग्यता आकने का भाव क्रमश घटता जा रहा है। न तो स्कूलो मे ही और न घर मे ही यह जरूरी समझा जाने लगा है कि बच्चे की योग्यता के सबध मे केवल इस बात से ही फैसला न कर लिया जाये कि वह कितनी जल्दी अपनी पुस्तकें पढ डालता है।

पाठ्यक्रमो मे बच्चों को अधिक छूट दिया जाना निश्चित रूप से आधुनिक मनोविज्ञान की प्रवृत्तियो के अनुकूल है और बच्चे के लिए सबसे अधिक लाभदायी है क्योकि इससे बच्चे मे वास्तविक रुचि पैदा होती है, वह यथार्थ सफलता प्राप्त करता है और उसे स्कूल के काम को करने मे सचमुच बडा आनन्द आने लगता है।

मैं आरभ के अध्यायों में यह बतला चुकी हूं कि बच्चो की 'शरारत' का बहुत कुछ कारण कुछ-न-कुछ करते रहने की उनकी प्रवृत्ति होती है। इसके अलावा बच्चो के शरारती होने के कारण यह भी होते हैं कि उनमें अथक श्रम करने की शक्ति होती

है, एक प्रकार की सहज उमग होती है जो कभी-कभी बच्चे के अभिभावक मे ओर गलतफहमी भी पैदा कर देती है। यह सब कुछ निर्विवाद रूप से सत्य है लेकिन हमे यह बात भी महत्त्वपूर्ण समझनी चाहिए कि हमारे बच्चों को ससार मे रहना है और ससार के अनुकूल बनकर रहना है, इसलिए यह आवश्यक है कि उन्हे धीरे-धीरे यह सिखाया जाये कि वे अपने ऊपर किस प्रकार नियंत्रण करे जिससे ज्यो-ज्यों वे बडे होते जाये उनका बचपना पीछे छूटता चला जाये। हम बडे बच्चो से यह आशा नही करते कि वह बहुत क्रोधी हों, आपस मे बुरी तरह लडे, एक-दूसरे से जले-कुढे और मारपीट करें या एक-दूसरे को तग करे। अब हम आशा करते हैं कि वे शान्त स्वभाव के सयमित मनोवृत्तियो वाले व्यवस्थित चित्त के युवक हो। हमे उनसे निराशा नही होगी यदि हमने शुरू से ही बच्चों को अपना आचरण स्वय निर्धारित करने का अवसर दिया, घर या स्कूल मे सबके लाभ के लिए आवश्यक नियम उन्ही से बनवाए और उनको बड़ो के प्रतिबधों से क्रमशः छुडाकर स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने की शिक्षा दी। संभव है कि वे अपने उच्च और महत्त्वाकांक्षापूर्ण प्रयत्नो मे हमेशा सफल न हो, कभी उनसे भूले भी हो, उनमें दोष भी आ जायें, वे छोटे-मोटे कामो मे यहा-वहा अनुत्तीर्ण भी हो जायें लेकिन इतना निश्चित है कि वे पारस्परिक और स्नेहशीलता द्वारा किशोरावस्था में भी कठिनाइयों के समय रास्ता निकालना सीख लेगे।

हमारे बच्चे निश्चित है कि हमारे इस काम का पूरा फायदा उठायेगे। यह लाभ इस रूप में होगा कि उनकी समझदारी और उनके अवसर दोनों ही बढ जायेगे।

मै नीचे कुछ इस बात के दृष्टान्त दे रही हूं कि बच्चे किस प्रकार क्रमश बढती हुई जिम्मेदारियो को सभालना पसन्द करते हैं।

(अ) 3 वर्ष के बालक द्वारा अपने कपड़े स्वयं पहनने की चेष्टा

एक दिन 3 वर्ष का बालक शोभा नर्सरी से घर जाने की तैयारी कर रहा था। तभी उसकी मा ने उसे पुकारा। मा स्वय उस स्थान पर गयी जहां शोभा का कोट रखा था। उसे खूंटी पर से उतार लायी और शोभा को पहनाने लगी। शोभा रोष और क्रोध से एकबारगी चीख उठा। परिणामत मां ने कोट छोड दिया। बच्चा अपना कोट वहा ले गया जहा वह टगा था। उसने कोट को फिर खूटी पर टागा। इसके बाद स्वय ही बड़ी गंभीरता से जैसे वह कोई धार्मिक कृत्य कर रहा हो उसने फिर खूंटी से कोट उतारा, उसे स्वय ही पहना और एक-दूसरे बच्चे के साथ भाग गया। मा यह सब बडे अचम्भे के साथ देखती रही। मा को इस प्रकार खडा देख अध्यापिका उनके पास आयी और उसने विस्तारपूर्वक बतलाया कि यहा बच्चो को अपने कपडे उतारने, पहनने और टागने का काम इस प्रकार सिखाया जाता है कि वे स्वय ही उसे कर लें अब शोभा अपने आप यह काम कर लता है और उसे इस काम में किसी की

की आवश्यकता नही पडती।

(आ) 4 वर्ष की बच्ची का अपना कम्बल तहाना

सीमा जब 4 वर्ष की बालिका थी तो एक नर्सरी स्कूल मे पढती थी। वह बडी होशियार लड़की थी। एक दिन सोकर उठने के बाद जब वह नर्सरी स्कूल में अपना कम्बल तहा रही थी तो उसके पिता आ गये। वे बडे लम्बे-तगडे थे ओर पुलिस मे थे। वे उसे घर ले जाने के लिए आये थे। वह चाहते थे कि बालिका की कुछ मदद कर दे क्योकि सीमा को अपना कम्बल अपने आप तहाने में काफी कठिनाई हो रही थी। वे कम्बल उठाने के लिए झुके भी। जब सीमा ने देखा कि उसके पिता कम्बल तहाने जा रहे है तो उसने कम्बल को जोरो से पकड लिया और बडी दृढता से अपने पिता की तरफ देखने लगी। पिता ने देखा कि वह कम्बल तहाने का कार्य स्वय ही करना चाहती है तो उन्होने अध्यापिका की तरफ देखा। उन्होने आखों-ही-आंखो मे पूछा कि 'क्या यह काम बच्ची स्वय कर सकती हे ? क्या मुझे इस काम को करने का भार उसी पर छोड देना चाहिए ?' अध्यापिका ने मुस्करा- कर बतला दिया कि वे यह काम बच्ची के लिए ही छोड़ सकते है--वह उसे कर लेगी। पिता ने ऐसा ही किया और सीमा ने थोड़ी ही देर मे बडी सफाई से कम्बल तहाकर रख दिया।

(इ) 4 वर्ष की बच्ची का मातृत्व भाव

बहुत-से लोगो ने बच्चो को अपनी आयु से छोटे बच्चो की देखभाल करते हुए देखा होगा। उन्होंने देखा होगा कि बड़ा बच्चा किस प्रकार छोटे को उठा लेता है, उसे प्यार से गुदगुदाता है, चूमता है और उसकी हर छोटी-सी-छोटी बात का ख्याल रखता है। 4 वर्ष की बालिका आभा से मिलने के पूर्व मैंने पहले इस प्रवृत्ति को किसी भी बच्चे मे इतने साफ ढग से नही देखा था। वह एक नर्सरी स्कूल में पढती थी। वह अपने पडोसी के 2 वर्ष के बच्चे को विशेष रूप से चाहती थी। वह बच्चा भी नर्सरी मे आता था। लेकिन आभा का परिचय उससे पहले से ही था। इसलिए आभा नर्सरी में भी उसके प्रति अपना विशेष उत्तरदायित्व अनुभव करती थी। सगीत और नृत्य के घण्टे में वह 2 वर्ष के बच्चे को अपने साथ ले लेती और उसे यह बराबर बतलाती कि संगीत मे ताल पर हर कदम किस प्रकार उठाना चाहिए और किस ताल पर शरीर के किस अंग को उठाना चाहिए। अन्य घण्टो मे वह उस बच्चे के लिए कोई काम खोज लेती और उससे वह कराती। वही उसका कोट और टोपी उतारकर रखती और ऐसा हो गया कि आभा के बिना वह बच्चा हिलता भी नही। आभा भी उसे अकेला छोड़ना गवारा नहीं कर पाती थी नतीजा यह हुआ कि बच्चे को दूसरे वर्ग में रखवा पड़ा जिससे वह अपने हाथ-पैर अपन आप हिलाना सीखे और आभा

भी उसकी अनुपस्थिति बर्दाश्त कर सके।

(ई) 6 वर्ष की बच्ची का अपने हाथ अपने आप धोने का उत्साह

मीरा जब 6 वर्ष की थी तो उसे एक ऐसे स्कूल में पढना पडा था जिसमे इस बात पर बहुत जोर दिया जाता था कि बच्चो के हाथ साफ रहे। बच्चों के हाथो को रोज देखा जाता था और जिनके हाथ साफ होते उनकी बड़ी प्रशसा की जाती। क्रमश मीरा भी इस प्रशंसा के लिए लालायित रहने लगी। वह अपने हाथ धोने मे कभी-कभी पौन घण्टा तक लगा देती लेकिन उसके हाथ साफ नही रह पाते थे। किन्तु बाद में उसने हाथ साफ रखने का अभ्यास कर ही डाला। इस सफलता के लिए मीरा की उसके अध्यापको और माता-पिता दोनो ने बडी प्रशसा की। लेकिन इस स्थल पर ऐसा लगता है कि मीरा के माता-पिता और अध्यापको—दोनो ने इस बात पर बहुत अधिक बल दिया। अच्छा होता यदि यही बात बालिका अपने अन्य कार्यो के साथ ही सीख लेती और ऐसा करने के लिए उस पर बहुत अधिक जोर न डाला जाता।

प्रश्नावली

1 आप किसी बच्चे को यह किस प्रकार सिखलायेंगे कि उससे छोटे बच्चे को भी इस बात की आवश्यकता है कि वह अपना कार्य स्वयं करे ? सम्भव हो तो अपने अनुभव से ऐसा कोई उदाहरण दीजिए ? (अ, आ, इ)

2. विभिन्न आयु के बच्चों को किस हद तक अपने कपड़े अपने आप चुनने की छूट देनी चाहिए ? जब आप बच्चे थे तो क्या आपने अपने लिए भी कोई कपडा चुना था ? यदि 'हां' तो कौन-सा ? उस समय आप में क्या-क्या भाव पैदा हुए थे ? आपकी आयु क्या थी ?

3 किसी आदत को डालने के लिए बच्चे पर बहुत अधिक जोर डालना भी क्या खतरनाक होता है ? बतलाइए, साधारण और दैनिक कार्य कर लेने के लिए बच्चे की प्रशंसा किया जाना क्यों बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है। (ई)

4. आप किसी बच्चे को उसके सोने के समय के पालन में और छुट्टी का समय बिताने में किस प्रकार सहायता करेंगे ?

5. क्या आप यह ठीक समझते हैं कि बच्चों को जानवर रखने दिये जाये ? यदि हां तो बच्चों की जानवरों के प्रति क्या जिम्मेदारी होनी चाहिए ?

6. किसी ऐसे बच्चे का किस्सा बतलाइए जो किसी काम का उत्तरदायित्व संभालने के लिए उत्सुक हो चाहे बड़ो द्वारा उसकी इच्छापूर्ति में बाधा ही क्यो न डाली जा रही हो अ आ इ

●●●